सुधीन नाथ घोष

श्यामला ए. नारायण

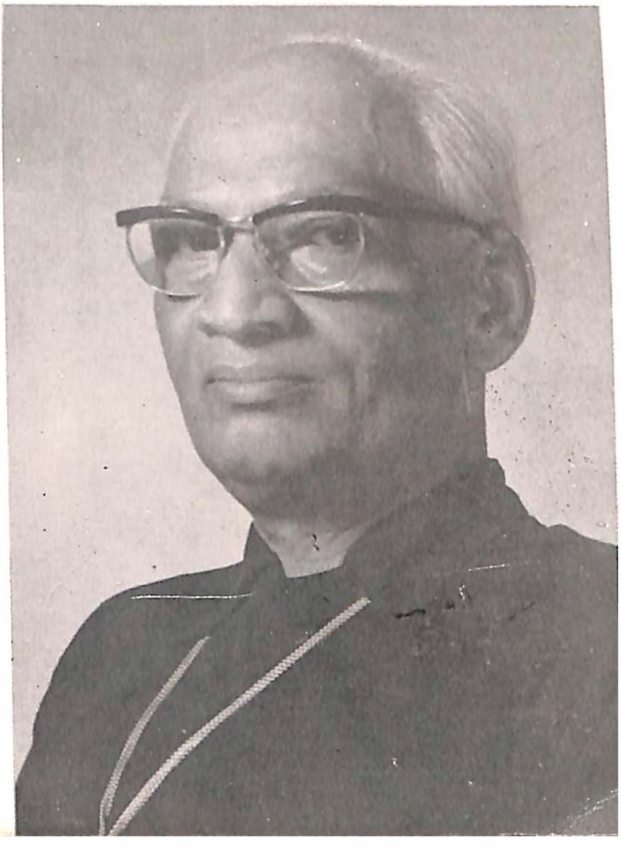

H
823.030 092
G 346 N
निर्माता

H
823.030
092
G 346 N

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, जिसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है। भारत में लेखन-कला का संभवत: सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख।

नागार्जुनकोण्डा, दूसरी सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

सुधीन नाथ घोष

लेखक
श्यामला ए. नारायण

अनुवादक
नरेन्द्र सिन्हा

साहित्य अकादेमी

Sudhin Nath Ghose : Hindi translation by Narendra Sinha of Shyamala A. Narayan's monograph in English, Sahitya Akademi, New Delhi
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00
Indian Institute of Advanced Study
116041
17/11/04
SHIMLA

© साहित्य अकादेमी

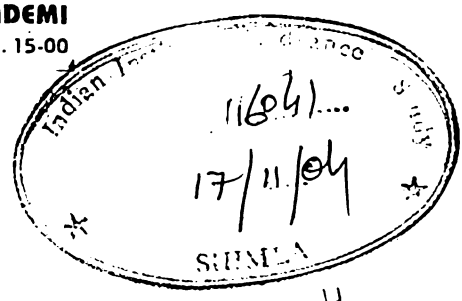

प्रथम संस्करण : 1992

H
823.03009
G346N

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

30-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

Library IIAS, Shimla
H 823.030 092 G 346 N
00116041

ISBN 81-7201-186-5

मुद्रक

भारती प्रिण्टर्स

शाहदरा, दिल्ली 110 032

अनुक्रम

परिचय	7
एंड गज़ेल्स लीपिंग (छौने की कुलांच)	15
क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स (बादलों का पालना)	25
द वरमिलियन बोट (सिंदूरी नौका)	36
द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट (पलाश)	56
अन्य कृतियाँ	71
घोष और भारतीय कथा-लेखन	75
निष्कर्ष	80
ग्रन्थ-सूची	86

परिचय

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं और भारतीय साहित्य की रचना इन सभी भाषाओं में हुई है। इतिहास की दृष्टि से अंग्रेज़ी में भारतीयों ने साहित्य की रचना सबसे बाद में शुरू की। अंग्रेज़ी में भारतीय साहित्य की रचना पाश्चात्य देशों के साथ भारत का संपर्क होने के कारण आरंभ हुई। दशकों से अंग्रेज़ी कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम रही है और भारतवासी उच्च अध्ययन, व्यापार-वाणिज्य; प्रशासन एवं पत्र-व्यवहार में इसका उपयोग करते रहे हैं। स्वभावतः अंग्रेज़ी में सृजनात्मक साहित्य की भी रचना हुई। सुधीन नाथ घोष भारतीय साहित्य की इसी धारा—भारतीयों द्वारा मूलरूप में अंग्रेज़ी में साहित्य रचना—के प्रतिनिधि हैं। साहित्यालोचकों ने इस साहित्य को भारतीय अंग्रेज़ी—इंडियन इंगलिश या इंडो-ऐंग्लियन साहित्य—का नाम दिया है।

ब्रिटेनवासी, प्रारंभ में व्यापारियों के रूप में भारत आए, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने शीघ्र ही राजनीतिक सत्ता हथिया ली। सन् 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद जब उन्होंने बंगाल पर शासन करना शुरू किया, तब उनकी शिक्षा-संबंधी कोई सरकारी नीति नहीं थी। पहले उन्होंने फ़ारसी और संस्कृत को प्रोत्साहन देने की बात सोची और इस उद्देश्य से 1781 में कलकत्ता मदरसा और 1792 में बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की। लेकिन शीघ्र ही उनको राज का काम-काज सँभालने के लिए अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे भारतीयों की ज़रूरत महसूस हुई। स्वयं भारतवासी भी अंग्रेज़ी सीखना चाहते थे और लार्ड मैकाले की 2 फरवरी, 1835 की शिक्षा-संबंधी प्रसिद्ध टिप्पणी ने तो इस ज़रूरत को और भी उजागर कर दिया। उसने लिखा कि "इस देश के लोगों को अंग्रेज़ी में कुशल बनाना आवश्यक है, जो संभव भी है।" गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक द्वारा "शिक्षा के लिए विनियोजित पूरी राशि सिर्फ़ अंग्रेज़ी की शिक्षा पर खर्च करने" का निर्णय किए जाने के बाद भारत में अंग्रेज़ी बहुत तेज़ी से फैली। शीघ्र ही, बहुत-से भारत-वासी अंग्रेज़ी में दक्ष बन गए। जैसाकि राजा राममोहन राय के लेखन से पता चलता है, पहले उन्होंने अंग्रेज़ी का उपयोग समाज-सुधार जैसे व्यावहारिक कार्यों के लिए किया, लेकिन शीघ्र ही अंग्रेज़ी में कविता, नाटक और कथा-साहित्य की

रचना भी करने लगे। बंगाल ने माइकेल मधुसूदन दत्त, तरु दत्त तथा रामायण और महाभारत के अनुवादक रमेश चंद्र दत्त जैसे इंडियन इंगलिश के कवि दिए। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में सरोजिनी नायडू और श्री अरविंद प्रभृत कवियों ने रचना की। स्वातंत्र्योत्तर भारत में निसिम एज़ेकिल, पी. लाल, केकी एन. दारूवाला, जयंत महापात्र, अरुण कोलाटकर, ए. के. रामानुजन, कमला दास तथा अनेक नये कवि रचना कर रहे हैं। इंडियन इंगलिश में बहुत-सारे उपन्यास प्रकाशित हुए; बाङ्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिमचंद्र चटर्जी ने भी अंग्रेज़ी में 'राजमोहनस् वाइफ़' (राजमोहन की पत्नी) शीर्षक उपन्यास की रचना की जो 1864 में कलकत्ता के साप्ताहिक, दि इंडियन फ़ील्ड में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इन प्रारंभिक उपन्यासों में से अधिकांश ऐतिहासिक या सामाजिक उपन्यास थे। इंडियन इंगलिश के प्रारंभिक काल में उल्लेखनीय उपन्यास 1930 के दशक में प्रकाशित हुए : मुल्कराज आनंद का 'अनटचेबल्स', (अछूत, 1935), आर. के. नारायण का 'स्वामी एंड फ्रैंड्स', (स्वामी और उसके मित्र, 1936) और राजा राव का 'कंठपुर' (1938)। तब से ये तीनों उपन्यासकार विशिष्ट उपन्यासों की रचना करते रहे हैं। आर. के. नारायण अंग्रेज़ी में लिखनेवाले पहले उपन्यासकार थे जिनको सन् 1961 में उनके 'गाइड' (पथ-प्रदर्शक) के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। महिला उपन्यासकारों, अनिता देसाई और नयनतारा सहगल ने सात-सात उपन्यासों की रचना की है और साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त किया है। भवानी भट्टाचार्य, मनोहर मलगांवकर, कमला मार्कंडेय, चमन नाहल, खुशवंत सिंह और अरुण जोशी जैसे भारतीय अंग्रेज़ी के अन्य उपन्यासकारों ने उल्लेखनीय कृतियाँ दी हैं। और अब सलमान रुश्दी, अमिताभ घोष (द सर्किल ऑफ़ रीज़न) और प्रताप शर्मा (डेज़ ऑफ़ द टर्बन) अपना योगदान कर रहे हैं।

साहित्यालोचकों ने जिज्ञासा प्रकट की है कि इन साहित्यकारों ने एक ऐसी भाषा में साहित्य-रचना क्यों की जो इनकी मातृभाषा नहीं है। उनमें से कुछ ने तो इसे 'देश-विरोधी' बताकर इसकी निंदा की है। लेकिन लेखक किस भाषा में रचना करे, यह सर्वथा उसकी व्यक्तिगत पसंद की बात है, आलोचक को इस संबंध में अपना कोई मत प्रकट करने का अधिकार नहीं है। आधुनिक अंग्रेज़ी साहित्य में पोलैंड के जोसेफ़ कोनराड और रूस के ब्लादीमिर नोबोकोव जैसे अनेक महान् उपन्यासकार हुए हैं जिनकी मातृभाषा अंग्रेज़ी नहीं है। संभव है, इंडियन इंगलिश के कुछ लेखकों ने अपनी मिश्रित वंशावली के कारण अंग्रेज़ी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया हो; नयनतारा सहगल की माँ विजयलक्ष्मी पंडित कश्मीरी हैं और उनके पिता मराठी-भाषी थे। इसी प्रकार अनिता देसाई के पिता बंगाली और माँ जर्मनी की थीं। लेकिन मुल्कराज आनंद या राजा राव जैसे

लेखकों ने अपनी-अपनी मातृभाषा के बदले अंग्रेज़ी को अपना माध्यम क्यों बनाया, इसका कोई कारण सहज ही नहीं बताया जा सकता। किसी लेखक की रचना-प्रक्रिया को समझना या उसका विश्लेषण करना कोई आसान काम नहीं है, स्वयं लेखक भी संतोषजनक ढंग से यह नहीं बता सकता कि उसने किसी भाषा-विशेष को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम क्यों बनाया ?

इंडियन इंगलिश के बहुतेरे लेखक पूर्णतः द्विभाषी हैं : जयंत महापात्र अंग्रेज़ी और उड़िया में, अरुण कोलाटकर अंग्रेज़ी और मराठी में तथा कमलादास अंग्रेज़ी में कविता और उपन्यास लिखने के अतिरिक्त मलयालम में कहानियाँ लिखती हैं। साहित्यालोचक के लिए अभिव्यक्ति के माध्यम के चुनाव के संबंध में आपत्ति उठाना निरर्थक है, महत्त्व इस बात का है कि लेखक ने जो भी भाषा अपनी अभिव्यक्ति के लिए चुनी हो, यह देखा जाए कि उसके साथ कितना न्याय हुआ है और उसकी कृति पर निष्पक्ष भाव से विचार किया जाए। अंग्रेज़ी में लिखे जाने के कारण इंडियन इंगलिश के साहित्य को अन्य भाषाओं में लिखे गए भारतीय साहित्य से अलग नहीं करना चाहिए—अंग्रेज़ी में लिखनेवाले लेखक भी उसी देश की संस्कृति और संवेदनाओं से अनुप्राणित होते हैं जिनसे अन्य भारतीय भाषाओं के लेखक और इन सभी लेखकों पर पाश्चात्य प्रभाव भी एक जैसा ही पड़ा है। भारत में विदेशी भाषाओं को आत्मसात् करने की अपूर्व क्षमता है—फ़ारसी और अरबी भाषाएँ भारत के बाहर से यहाँ आयी, इसके बावजूद हिंदी और उर्दू के समृद्ध साहित्य में आत्मसात हो गयी। संस्कृत भी, जो साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है, कभी भी किसी की मातृभाषा नहीं रही। अंग्रेज़ी की तरह ही सदा से ही लोगों ने इसे स्वाभाविक ढंग से नहीं, सायास सीखा है।

सुधीन घोष को फ्रांसीसी और संस्कृत भाषाओं का अच्छा ज्ञान था और वह फ़ारसी और प्राचीन ग्रीक भाषा भी पढ़ लेते थे। लंबी अवधि तक विदेश में रहने के बावजूद वह अपनी मातृभाषा बाङ्ला को कभी नहीं भूले। सुधीन नाथ घोष का जन्म 30 जुलाई, 1899 को वर्द्धमान में हुआ था। उनके पिता, श्री विपिन विहारी घोष, कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे और उनकी माँ चन्दन नगर के सर तारक नाथ पालित के परिवार की थीं। उन्होंने वर्द्धमान और प्रेसिडेंसी कॉलेज, कलकत्ता में शिक्षा प्राप्त की और सन् 1920 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. एस. सी. की डिग्री प्राप्त की। सन् 1921 में, वह आगे अध्ययन के लिए यूरोप (पहले पेरिस और बाद में स्ट्रैसबुर्ग में) गए, वहीं उन्होंने अध्ययन के साथ-साथ पत्रकारिता भी की। वह 1924 से 1931 तक दि हिन्दू (मद्रास) के विदेश संवाददाता और 1929 से 1931 तक वर्ल्ड्स् यूथ (अखिल विश्व वाइ. एम. सी. ए. का समाचार-पत्र) के संबद्ध संपादक रहे। सन् 1929 में उन्होंने स्ट्रैसबुर्ग

विश्वविद्यालय से डी. लिट्. किया। 1931 से 1940 तक जिनेवा स्थित लीग ऑफ़ नेशंस सचिवालय के सूचना विभाग से संबद्ध रहे। सन् 1940 के गर्मी के मौसम में घोष इंग्लैंड गए और 1940 से 1946 तक सम्राट् की सेनाओं के समक्ष भारत के संबंध में व्याख्यान दिए। कुछ समय तक (1942-43) में उन्होंने नाटिंघम विश्वविद्यालय के वाह्य अध्ययन विभाग में प्राध्यापक का काम किया। 1946 से वह लंदन काउंटी काउंसिल के प्रौढ़ शिक्षा के संस्थानों में कला, इतिहास, सामयिक विषय, तुलनात्मक धर्म और दर्शन के अंशकालिक प्राध्यापक के रूप में काम करने लगे। सन् 1957 में वह भारत लौटकर शांतिनिकेतन के विश्वभारती विश्वविद्यालय में इंगलिश के प्रोफ़ेसर नियुक्त हुए किंतु अपने आवेगी स्वभाव के कारण उनकी यह भारत यात्रा शीघ्र ही समाप्त हो गयी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में, जो कभी महान् शिक्षा-केंद्र रहा था, व्याप्त भ्रष्टाचार तथा शैक्षिक गतिहीनता से वह बहुत विस्मित हुए। लेकिन अपने अधैर्य और आवेगी स्वभाव के कारण विश्वविद्यालय में सुधार लाना उनके वश की वात नहीं थी। वहाँ के पाश्चात्य-विरोधी वातावरण से उनको इतना क्षोभ हुआ कि उन्होंने अपने मकान में सभी पाश्चात्य सुविधाओं के लिए आग्रह किया। उन्होंने 'तथाकथित महान् कवि टैगोर' कहकर रविवावू की कटु आलोचना की। उनके उच्छृंखल आचरण से वे सभी लोग उनके विरोधी वन गए जो भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुहिम चलाने में उनके सहायक वन सकते थे। शीघ्र ही उनका चरित्र-हनन किया जाने लगा। उनके पियक्कड़ होने की अफ़वाह फैलायी गयी। वात वढ़ तव गयी जव युवा उत्सव के लिए एक नाटक के रिर्हसल में वह वहुत क्रुद्ध हो गए। कला भवन के विद्यार्थी मूर्तिकार रामकिंकर वैज को वहुत प्यार करते थे। रिहर्सल के दौरान रामकिंकर, घोष के मना करने के वावजूद, रिर्हसल में अपनी टाँग अड़ाते रहे। इस कारण आपस में झगड़ा हो गया, जिसमें घोष ने वैज को मार दिया। वाद में, जव घोष रामकिंकर से माफ़ी माँगने जा रहे थे, विद्यार्थियों ने रिक्शे से खींचकर उनको पीट दिया। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार ने पुलिस को वुलाने से इनकार कर दिया, और घोष 1958 के प्रारंभ में अचानक इंग्लैंड लौट गए। इस दुर्घटना से उनको जो आघात पहुँचा उससे वह कभी उवर नहीं पाए और 30 दिसंवर, 1965 को लंदन में हृदयगति रुक जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी। घोष विवाहित थे और उनकी एक वेटी थी, हाल में प्रकाशित उनकी पुस्तक, 'टिवेटन फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़' (1989) उनके नाती आइव्स वी. जकार्ड को समर्पित है।

घोष ने अपना पहला उपन्यास 50 वर्ष की उम्र में प्रकाशित किया। इससे पहले उन्होंने पत्रकार के रूप में वहुत कुछ लिखा था और 'द एरियन पाथ', 'द आब्ज़र्वर' जैसी पत्रिकाओं में लेख लिखे थे। उनकी पहली पुस्तक 'द कलर्स

ऑफ़ ए ग्रेट सिटी : टू प्लेलेट्स' (एक महान् नगर के रंग : दो नाटिकाएँ) 'प्लेज़ फ़ॉर ए पीपुल्स थियेटर' पुस्तकमाला के अंतर्गत 1924 में प्रकाशित हुई थी। इसमें दो लघु नाटक—'द डिफ़ाल्टर्स' और 'एंड पिप्पा डांसेज़' हैं। दोनों की घटनाएँ युरोप के एक अनाम नगर में घटती हैं। उनकी अगली पुस्तक 'दांते ज़बरील रोसेटी एंड कंटेंपरेरी क्रिटिसिज़्म' (1928) साहित्यिक आलोचना की पुस्तक है जो संभवत: डाक्टरेट की डिग्री के लिए लिखे गए उनके शोध-प्रबंध पर आधारित है। सन् 1939 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में एक एक्सटेंशन लेक्चर दिया था—जो 'पोस्ट वार यूरोप : 1918-1937' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसमें प्रथम विश्व-युद्ध के वाद के यूरोप की स्थिति का मूल्यांकन है। इसमें उन्होंने अत्याचार-पीड़ित जनता की अकर्मण्यता के संबंध में जो भविष्यवाणी की थी, वह 1939 के वाद, जब नाज़ियों ने यूरोप को रौंद डाला था, सच सिद्ध हुई। उनके चार उपन्यास बहुत जल्दी-जल्दी प्रकाशित हुए : 'ऐंड गज़ेल्स लीपिंग' (1949) (छौने की कुलांच), 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (1951) (बादलों का पालना), 'द वरमिलियन बोट' (1953) (सिंदूरी नौका) और 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' (1955) (पलाश)। ये लंदन और न्यूयार्क से एक साथ प्रकाशित हुए और उनकी प्रशंसा हुई—'एंड गज़ेल्स लीपिंग', 'क्रैडल ऑफ़ दि क्लाउड्स' तथा 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' को ब्रिटेन में नेशनल बुक लीग की 'वर्ष की सर्वोत्तम 100 पुस्तकें' प्रदर्शनी में शामिल किया गया। 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' फ्रांसीसी और पोलिश भाषाओं में अनूदित हुआ। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' के फ्रांसीसी अनुवाद को 1959 में फ्रेंच अकादमी का प्रिन्स लैंगलोइस प्राप्त हुआ। घोष के लोक कथाओं के तीन संग्रह प्रकाशित हुए : 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ ऑफ़ इंडिया' (1961) मृत्यु के वाद के वर्ष में 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ फ्रॉम फ़ार्दर इंडिया' (1966) और मृत्यु के दो दशक वाद 1986 में टिबेटन 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़'। जब उनकी मृत्यु हुई, तब उनकी कई पांडुलिपियाँ अप्रकाशित थीं जो उनके अन्य काग़ज़-पत्र के साथ इंडिया ऑफ़िस के पुस्तकालय में जमा कर दी गयी हैं : इनमें दो पूरे उपन्यास भी शामिल हैं।

उनके चारों प्रकाशित उपन्यासों का नायक एक ही लड़का है। इनमें उसी की बाल्यावस्था और किशोरावस्था से लेकर युवावस्था और तब तक की स्थिति का वर्णन है जब उसे यह आभास होने लगता है उसकी मुक्ति आध्यात्मिक उन्नति से ही संभव है। अपने जीवन में घटित सभी घटनाओं के बाद, चौथे उपन्यास, 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' के अंतिम पृष्ठ पर वह युवा अपने गुरु कीर्तनी मैना से कहता है, "मैं जिस हाल में हूँ, उसी हाल में मैं आपके साथ कहीं भी जा सकता हूँ। मैं तीर्थयात्री बनना चाहता हूँ।" और यह उपन्यास-चतुष्टय मैना के स्वस्ति-वचन से समाप्त होता है जो उसे देश-भर के तीर्थस्थानों के मंदिरों की यात्रा

कराती है। 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में खेत जोतने के समारोह में यह युवा वलराम की भूमिका निभाता है, और इसी कारण से मैना उसको कभी-कभी वलराम कहकर भी पुकारती है। दूसरे उपन्यास, 'द क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' के चरमोत्कर्ष पर यह मुख्यपात्र खेत जोतने के अनुष्ठान में वलराम की भूमिका निभाता है, इसी कारण से चौथे उपन्यास, 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में मैना कभी-कभी उसको वलराम कहकर पुकारती है। जोताई अनुष्ठान में उसके हल पर हाथ रखने पर जब वहाँ एकत्र सभी स्त्रियाँ 'जय वलराम' कहकर उसका अभिनंदन करती हैं, तब वह कहता है, "इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से मैं अपने जन्म के नाम से वंचित कर दिया गया।" लेकिन उसका जन्म का नाम क्या है, इसका कहीं भी उल्लेख नहीं है।

इन चारों उपन्यासों में इस अनाम युवक की आत्मकथा दी गयी है। संभवतः, इसी कारण से बहुतेरे समीक्षकों ने इन पुस्तकों को शुद्ध संस्मरण बताया है। घोष की भाषा की संवेदनशीलता की प्रशंसा करने के बावजूद अधिकांश समीक्षक इस उपन्यासकार के शिल्प को नहीं समझ सके हैं। 'द टाइम्स लिटरेरी सप्लिमेंट' ने इन चारों उपन्यासों की समीक्षा 'जीवनी और संस्मरण' खंड के अंतर्गत प्रकाशित की, और 'द वरमिलियन वोट' तथा 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' की जटिल संरचना का मूल्यांकन करने में असमर्थ रहा। भारत में बहुत कम ही पुस्तकालय हैं जहाँ ये चारों उपन्यास उपलब्ध हैं, उनमें से एक कलकत्ता का राष्ट्रीय पुस्तकालय भी है, लेकिन इस पुस्तकालय में भी ये उपन्यासों के रूप में दाखिल नहीं किए गए हैं, और साहित्य अकादेमी द्वारा 1962 में प्रकाशित 'विब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर' (भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय ग्रंथ-सूची) में भी घोष की इन कृतियों का उपन्यास खंड में उल्लेख नहीं किया गया है। इन उपन्यासों के अनाम वाचक और घोष में अनेक समानताएँ हैं। वह बंगाल के एक धनी और प्रतिष्ठित परिवार का सदस्य है, और 'द वरमिलियन वोट' में लोग उसको 'जस्टिस विपिन विहारी का बेटा' कहकर याद करते हैं। इसी उपन्यास में यह नायक अपनी छुट्टियाँ चंदन नगर के प्राचीन और टूटे-फूटे पालित महल में बिताता है, और घोष की माँ भी चंदन नगर के पालित परिवार की ही थीं। लेकिन उसके जीवन और घोष के जीवन में समानता नहीं दिखायी देती। 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' में जिस प्रकार के रमणीय किंडरगार्टेन का वर्णन है, उस प्रकार के किसी किंडर गार्टेन में घोष अपनी बाल्यावस्था में नहीं रहे, और 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में संथालों के जिस गाँव का वर्णन है, उसमें भी वह कभी नहीं रहे। 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' का नायक फुटबाल का एक अच्छा खिलाड़ी है, घोष कभी फुटबाल के अच्छे खिलाड़ी नहीं रहे। यद्यपि उपन्यासों में उनके बहुत-सारे व्यक्तिगत अनुभवों का भी उल्लेख है, तथापि इन उपन्यासों के नायक में उनको नहीं ढूँढ़ा जा सकता। वैसे, सभी अच्छे लेखकों की

कृतियों में उनके व्यक्तिगत अनुभवों का समावेश तो स्वाभाविक ढंग से होता ही है।

सुधीन घोष का कोई उपन्यास हाथ में लेने पर सबसे पहली चीज़ जो पाठक को आकृष्ट करती है, वह है चित्र—बाहरी और भीतरी आवरण पर भारतीय दृश्यों के सुंदर रेखांकन। भीतर भी उसमें वर्णित दृश्यों के लगभग एक दर्जन रेखांकन दिए रहते हैं। भीतर के पृष्ठों में मिलते हैं कविताओं के उद्धरण, और अंग्रेज़ी लिप्यांतरण, स्वर-लिपि तथा अंग्रेज़ी अनुवाद सहित भारतीय गीत। अनेक पौराणिक कथाएँ भारतीय वातावरण की सृष्टि करती हैं। सुधीन घोष अपने उपन्यासों में भारतीय कविता का समावेश करनेवाले पहले इंडियन इंगलिश लेखक थे। उनके उपन्यासों में संस्कृत के कवि जयदेव की कविताओं, भर्तृहरि की सूक्तियों, कालिदास के शाकुंतलम्, महाभारत, अमरू और पाणिनि आदि की रचनाओं के उद्धरण मिलते हैं। हिंदी कवि सेनापति (प्रारंभिक युग के बंगाल के कवि) की हिंदी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर और रामप्रसाद सेन की कविताएँ उनकी उपन्यास कला को सँवारती हैं। इस प्रकार उनके उपन्यासों का रूप-रंग पूर्णतः भारतीय है, और वह कथा-साहित्य में भारतीय परंपरा का निर्वाह करने में अग्रणी हैं।

एंड गज़ेल्स लीपिंग
(छौने की कुलांच)

सुधीन घोष का पहला उपन्यास, 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' (छौने की कुलांच) सन् 1949 में प्रकाशित हुआ। इसमें घुँघराले वालों वाले एक अनाथ और अनाम बालक की प्रारंभिक बाल्यावस्था का वर्णन है। वह कलकत्ता के देहाती क्षेत्र में रानी नीलमणि की ज़मींदारी में सिस्टर स्वेंस्का के किंडरगार्टेन का विद्यार्थी है। इस उपन्यास चतुष्टय के दूसरे उपन्यास, 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (बादलों का पालना) में भी उसका वर्णन एक अनाथ के रूप में ही किया गया है जिसका जातीयताग्रस्त समाज में अपना कोई पुश्तैनी पेशा नहीं है। तीसरे उपन्यास, 'द वरमिलियन बोट' (सिंदूरी नौका) में यही अनाथ बालक युवा होकर कलकत्ता में संघर्ष कर रहा होता है, और घोष के अंतिम प्रकाशित उपन्यास, 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' (पलाश) में वह जीवन संघर्ष में शक्ति प्राप्त करने के लिए अध्यात्म की ओर मुड़ता है।

घोष के सभी उपन्यासों की तरह 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' भी तीन भागों में विभाजित है। पहले भाग का नाम 'द लास्ट विलेज़' (अंतिम गाँव) है, जिसमें रानी नीलमणि का गाँव सबसे बाद में कलकत्ता की व्यापारिक सभ्यता का ग्रास बनता है। सिस्टर स्वेंस्का का किंडरगार्टेन प्राचीन तथा अत्याधुनिक शिक्षा-पद्धतियों का संगम बनकर घोष के जीवन-मूल्यों का करुणा के साथ प्राचीन और नवीन के सर्वोत्तम के सम्मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। किंडरगार्टेन का शांत वातावरण और वहाँ आनेवाले विविध प्रकार के पालतू पशु प्राचीन ऋषियों के आश्रमों की स्मृति सजीव करते हैं। बच्चे को विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बच्चों के साथ अध्ययन करने का अवसर प्राप्त है, उसके साथ खेलने-कूदनेवाले उसके साथी—जापानी बच्चा सोतोमो और चीनी बच्चा तु-फ़ान बाद के जीवन में उसकी सहायता करते हैं। सभी बच्चों के अपने-अपने पालतू पशु-पक्षी हैं: मज़दूर के पास एक खच्चर है, हीरा नाम की लड़की के पास बकरी तो सीता के पास बतख़। तु-फ़ान को गंदले पानी में भैंसों का रँभाना बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि इससे उसको चीन में अपने घर की याद आती है। अनाथ होने के कारण बाचक के

माता-पिता नहीं हैं जो उसके लिए पालतू पशु या पक्षी का प्रवंध करते, लेकिन उसके पास भी मोहन नाम का एक छोटा मणिपुरी हाथी है। मोहन की स्वामिनी रानी ववनी ने उसके छोटे क़द के कारण उसकी उचित देखभाल न करके अपने फलों के वाग़ में छुट्टा छोड़ दिया था। वाचक, अपने घर से स्कूल जाते समय रोज़ उसी रास्ते गुज़रता है। उसकी हाथी से दोस्ती हो जाती है, उसका प्यार पाकर हाथी का क़द वढ़ जाता है और वह अनेक प्रकार के करतव सीख लेता है।

इस गाँव का जीवन, जहाँ वढ़ई, मोची, मोती नाम की धोविन, और जिल्दसाज़ दफ़्तरी चाचा जैसे दस्तक़ार काम करते हैं, अत्यंत सुंदर है। सभी वच्चे डाकिया पिअन दादा से वातें करना पसंद करते हैं। लेकिन शीघ्र ही वहाँ एक सर्कस आता है जिसके हाथी गाँव को उजाड़ देते हैं। इस अवसर का लाभ उठाकर सुतानुती एडवांसमेंट कंपनी इस गाँव पर कब्जा कर लेना चाहती है। सर्कस के लोग सिस्टर स्वेंस्का को घूस देने की कोशिश करते हैं और ग्रामवासियों को अपने-अपने घर ख़ाली कर देने का नोटिस जारी कर देते हैं। सिस्टर स्वेंस्का (स्वर्णशिखा देवी) अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की शिक्षाविद् हैं, और जव वह इस दुर्दशा की सूचना समाचार-पत्रों को देती हैं, कलकत्ता के छात्र उनकी सहायता करने आते हैं। वे जो चंदा उगाहते हैं, उसको लेने से तो सिस्टर स्वेंस्का इनकार कर देती हैं, लेकिन वे रानी नीलमणि की वसीयत भी प्राप्त कर लेते हैं जो उनके (सिस्टर स्वेंस्का) के लिए वहुत उपयोगी सिद्ध होती है। रानी नीलमणि 'गर्वनर जनरल वेलेस्ली साहिव' के ज़माने की थीं। अपनी वसीयत में उन्होंने अपनी ज़मींदारी सरकार को इस शर्त पर दे दी है कि उनकी एक संपत्ति-विशेष का किसी भी स्थिति में न तो पुनर्निर्माण किया जाए, न उसके चारों ओर वाड़ा लगाया जाए। वह जायदाद जिस स्थिति में है, उसी स्थिति में अगले 150 वर्ष तक छोड़ दी जाए। जो भी उस रास्ते जाना चाहे, उसके साथ कोई रोक-टोक न की जाए, खेतों में सभी पालतू पशुओं को चरने तथा तालावों में पानी पीने की आज़ादी हो। इस प्रकार कलकत्ता का विस्तार इस ज़मींदारी तक नहीं हो पाता। इस उपन्यास के पहले भाग के अंत में हाथी का क़द वाचक की देखरेख में वढ़ रहा होता है जो घर के प्यार से वंचित रहकर हमेशा मोती दीदी का प्यार प्राप्त करता है।

उपन्यास के दूसरे भाग, 'द ग्रेटेस्ट ईविल' (सवसे वड़ी वुराई) में वच्चे का हिंसा और वुराई से पहले-पहल सामना होता है। कलकत्ता के गुंडे इस क्षेत्र में आते हैं और इस निहत्थे वालक को पकड़ लेते हैं क्योंकि यह "अन्य लोगों से विल्कुल अलग दिशा में रहता है" और रोज़ स्कूल से अकेले घर लौटता है। वह उसको अपने दल में शामिल हो जाने को मज़वूर करने की कोशिश करते हैं। यह वात वह मोती दीदी या डाकिया जैसे अपने वड़े साथियों को नहीं वताता, क्योंकि व्यक्तिगत रूप में उसका विश्वास है कि वच्चों को आपसी झगड़े की वात वड़े

लोगों को नहीं बतानी चाहिए। गुंडों के दल में शामिल होने से उसके इनकार करने पर गुंडे उसको निर्दयतापूर्वक पीटते हैं; उसी समय घूमते-फिरते कुछ वैष्णव वहाँ पहुँच जाते हैं जिनके कीर्तन की आवाज़ सुनकर गुंडे डरकर भाग जाते हैं लेकिन अगली बार जब वह स्कूल जा रहा होता है तब गुंडे फिर उसको पकड़ लेते हैं और इस बार यदि वह उनके साथ कलकत्ता की सड़कों पर उनके साथ रहने को राजी न हो तो उसके पालतू हाथी, मोहन को अपंग बना देने की धमकी देते हैं। बच्चा मोहन को इतना अधिक प्यार करता है कि वह उनका साथ देने को राजी हो जाता है, लेकिन यह वचन देकर वह इतना अधिक उदास हो जाता है कि अपनी उदासी को छिपा नहीं पाता। उसको लगता है कि उसको मौत की सज़ा दे दी गयी है, क्योंकि वह अपने प्रिय किंडरगार्टेन तथा मित्रों के बिना जीने की बात सोच ही नहीं पाता। अपना दुःख दूर करने के लिए वह अपने पिअन दादा के बारे में सोचने लगता है जिसने उसको एक सीटी देकर संध्या समय दीया-बाती होने के बाद उसके लिए मनौती मानने का वचन दिया होता है। बच्चा, चंदननगर के अपने अनुभवों को याद करता है जहाँ पहले उसने अपनी छुट्टी के दिन बिताए थे—इस प्रकार इस उपन्यास का कथानक तीसरे उपन्यास 'द वरमिलियन बोट' से जुड़ता है जिसमें इस बच्चे की छुट्टी के दिनों के अन्य संस्मरण दिए गए हैं। यहाँ बहुत विस्तार से पूर्व दृश्य दिए गए हैं जो पुराणों में वर्णित उप-कथाओं की तरह के हैं। इस लंबे विषयांतर में बच्चा यह विचार करता है कि "जब कोई यह जान लेता है कि एक घंटे के भीतर या तो वह मर जाएगा या मार दिया जाएगा तो वह क्या सोचता है?"

बच्चा, जब चंदन नगर में था तो वह अक्सर तस्वीरों में फ्रेम लगानेवाले की दूकान पर बैठकर घंटों उस आदमी को काम करते हुए देखा करता था। वह जिस बेंत की कुर्सी पर बैठा करता था उसमें खटमल लगे थे जो उसको बहुत तंग करते थे। एक दिन तस्वीर में फ्रेम लगानेवाले ने उसकी परेशानी देखकर उस कुर्सी को खौलते पानी में डुबा दिया जिससे सारे खटमल मर गए। लेकिन उस आदमी के मन में यह द्वंद्व उठा कि खटमलों को मारकर उसने अच्छा काम किया है या बुरा और वह इस संबंध में निर्णय के लिए स्कूल मास्टर के पास जाता है। कीड़े-मकोड़ों पर दया करने के संबंध में स्कूल मास्टर जो कथा कहता है उसका गुंडों के प्रति बच्चे के व्यवहार पर बहुत प्रभाव पड़ता है: बच्चा यह समझ जाता है कि उसने खटमलों के साथ वैसा ही व्यवहार करके जैसा उसने उन बच्चों के साथ किया था, अच्छा काम नहीं किया है। यहाँ अहिंसा के प्रति एक सर्वथा नया दृष्टिकोण पाठक के सामने आता है। वह तस्वीरों में फ्रेम लगानेवाला दूकानदार स्कूल मास्टर से पूछता है कि क्या एक जीव को बचाने के लिए इतने अधिक जीवों को मारना उचित था तो स्कूल-मास्टर कहता है, "कीड़े-मकोड़ों के साथ वैसा ही

व्यवहार नहीं किया जा सकता जैसा मनुष्य के साथ किया जाता है। जो व्यक्ति कीड़े-मकोड़ों के साथ वैसा ही वर्ताव करता है जैसा आदमी के साथ किया जाता है, उसकी स्थिति भी कीड़ों जैसी ही हो जाती है, और वह मनुष्य के प्रति अनुदार हो जाता है। अपनी वात को स्पष्ट करने के लिए स्कूल-मास्टर दीपंकर कश्यप की कथा कहता है जो इस प्रकार है : एक दिन दीपंकर कश्यप, मृगवन में "मनुष्य को सत्य की खोज करनी चाहिए और दयालुता वरतनी चाहिए" का उपदेश दे रहे थे। उसी समय एक साँप अपने विल से निकला और श्रोताओं की ओर वढ़ने लगा। दीपंकर ने साँप को मार देने का आदेश दिया। उन्होंने श्रोताओं से कहा, "जो मनुष्य एक साँप की जीवन-रक्षा के लिए अपने किसी संगी को ख़तरे में डाल दे वह ग़लत काम करके धोखा देता है, ऐसा करके वह अर्द्धसत्य को प्रश्रय देता है। जो माली खर-पतवार की हिफ़ाजत फूल के पौधों की तरह ही करता है, उसे अच्छा माली नहीं समझना चाहिए।"

वच्चे का दिवास्वप्न तव टूटता है जव एक गुंडा उसको यह समझाता है कि उसको उदास रहकर चारों ओर फिरते नहीं रहना चाहिए। इसलिए, वह जिल्द-साज़ दफ़्तरी चाचा की दूकान पर चला जाता है। वहाँ एक घुमक्कड़ संन्यासी 'सवसे बड़ा पाप' पर उपदेश दे रहा होता है। "पाप की विजय तभी होती है जव आदमी के मन में भय होता है"—संन्यासी के इस उपदेश से वच्चे को शक्ति प्राप्त होती है और जव गुंडे उसको अपने साथ ले जाने के लिए एक पूर्वनिर्धारित एकांत स्थान पर आते हैं तो वह उनका सामना करता है। वह पिअन दादा द्वारा दी हुई सीटी वजा देता है जिसकी आवाज़ सुनकर मोहन उसकी सहायता के लिए वहाँ आ जाता है। तव तक मोहन एक छोटा-सा निरीह जीव नहीं रह जाता, वह एक पपीता का पेड़ उखाड़कर उन दुष्टों की खवर लेता है जो उसको फाँसने की कोशिश कर रहे होते हैं। वच्चा और हाथी, दोनों मिलकर सेंधमारों के एक कुख्यात गिरोह को पकड़ लेते हैं। लेकिन वच्चा मानसिक आघात से उवरने के लिए मोती दीदी की कुटिया में चला जाता है जहाँ लंवे समय तक रहने के वाद वह निरोग हो पाता है। वहाँ उसका समय हँसी-खुशी में वीतता है। मोहन सहित उसके सभी मित्र वहाँ उससे मिलने आते रहते हैं और मोती दीदी उसको असंख्य कहानियाँ सुनाती हैं।

वर्ष-पर-वर्ष वीतते जाते हैं और शीघ्र ही वच्चों के लिए किंडरगार्टेन छोड़ने का समय आ जाता है। उपन्यास का तीसरे भाग को 'इन द क्वेस्ट ऑफ़ सरस्वती' (सरस्वती की खोज में) का नाम दिया गया है जिसमें वेतरतीव संस्मरण भरे पड़े हैं, लेकिन इनमें से उल्लेखनीय संस्मरण एक क्रिसमस दिवस का है जिस दिन चारों ओर हिंदू-मुस्लिम दंगे का धुआँ फैल रहा था। उसी दिन वह डेमेरारा के अपने नीग्रो साथी टौमी डम-डम के पिता और अन्य मित्रों से नीग्रो धार्मिक गीत सुनता

है। इस संगीत को सुनने पर पहले-पहल उसका स्वर्ग-सुंदरी सरस्वती से साक्षात्कार होता है, जिससे उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं। यहीं पाठक को पता चलता है कि उपन्यास के नायक, उस वच्चे को उसके पालक माता-पिता ने त्याग दिया है। पहले वताया जा चुका है कि उसके पालक माता-पिता धनी हैं। एक गुंडा, जो उसका उद्धार करने का वचन देता है, कहता है कि "उसके साथी एक महल में रहते हैं और वह लाट साहेव (गर्वनर) और जंगी लाट (प्रधान सेनापति) का मनोरंजन किया करते हैं।" दफ़्तरी चाचा (जिल्दसाज़) भी वताते हैं कि उसके पालक माता-पिता धनी हैं, लेकिन जव उनको यह पता चला कि वह मोहन (हाथी) के साथ खेला करता है तो उसको घर से निकाल दिया। यह सुनकर वच्चा अप्रसन्न नहीं होता और कहता है, "मोती दीदी की कुटिया में मुझे वे सभी सुख मिले जो अपने घर में रहने पर मिल सकते थे और जो किसी महल में रहने से अधिक सुखकर हैं।" यहाँ उपन्यासकार वल देकर वताता है कि उपन्यास का नायक एक वड़े घर का निर्धन उत्तराधिकारी है। इस प्रकार उपन्यासकार कहीं यह तो नहीं वताना चाहता कि आज का भारत अपनी पारंपरिक प्रज्ञा का, जो उसे विरासत में मिली है, लाभ उठाने में अक्षम है।

दंगे के दौरान नायक कुकर्म से अप्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित होता है। नीलमणि की ज़मींदारी पर दंगे का सीधा प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन ज़मींदारी के निवासियों पर दंगे का असर पड़े विना नहीं रहता : पूज्य पंडित जी छुरे के वार से घायल हो जाते हैं, और मोची का बहनोई भी गंभीर रूप से घायल हो जाता है। रानी वबनी के महल को दंगे को शांत करने के लिए लायी गयी सैनिक पुलिस का प्रधान कार्यालय बना दिया जाता है। इस भयानक दिन को जो दृश्य उपस्थित होता है तथा शोर-शराबा मचता है और दुर्गंध फैलती है उसका घोष ने सजीव वर्णन किया है। 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' का निम्नलिखित उद्धरण उनकी शैली का एक अच्छा उदाहरण है : "दिसंवर की सुवह थी—रमणीय, स्वच्छ, निरभ्र। सर्दी नहीं थी, जाड़े के दिनों में गर्म क्षेत्रों में ऐसा ही मौसम रहता है। वाँध टूट जाने पर वाढ़ के पानी से जिस तरह हरहराहट की आवाज़ होती है या वंगाल की खाड़ी में लहरें उठने पर जिस तरह की आवाज़ होती है, वैसा ही शोर सुनायी पड़ा, पर आवाज़ लोगों की वड़ी भीड़ में होनेवाले शोर की तरह नहीं थी जिसमें वहुत-सारे लोगों की आवाज़ें मिली-जुली होती हैं; यह शोर भयभीत जंगली जानवरों की चिल्लाहट जैसा था। फ़र्क़ यही था कि इसमें तीखापन नहीं था, इसमें गहराई थी। इससे भय उत्पन्न होता था, ऐसी भयानक आवाज़ मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी।

"शोर ऐसा था जैसे क्षितिज पार से कोई चेतावनी दी जा रही हो। क्या यह विस्फोट सत्यानाश का सूचक था? रह-रहकर इस शोर को चीरती हुई अग्नि-शामकों, अस्पताल गाड़ियों और बंदूक़ों से गोली छूटने तथा जहाज़ों के हार्न की

आवाज़ें सुनायी दे जाती थीं।"

"शीघ्र ही लकड़ी और तारकोल जलने की गंध हवा में फैल गयी जिससे मेरी नाक में जलन होने लगी, और गोदी क्षेत्र से उठनेवाला धुआँ चारों ओर फैल गया, जिससे मेरी आँखें दुखने लगीं। सूरज भी छिप गया जैसे यह सब देखकर वह लज्जित हो उठा। यद्यपि उस दिन की सुबह बहुत सुंदर और चमकीली थी, तथापि वहाँ दोपहर के समय ही अँधेरा छाने जैसा दृश्य उपस्थित हो गया।"

घोष ने दंगे के समय दृश्यों, तरह-तरह की आवाज़ों और दुर्गंध का उल्लेख करके वहाँ के खौफ़नाक वातावरण का सजीव चित्रण किया है। सुबह के आकाश की सुंदरता के चित्रण से दंगों की व्यर्थता और भी उभरती है। वर्णन इतना ब्योरेवार है कि दंगे के समय की अस्तव्यस्तता का भी सहज ही अनुमान हो जाता है। शोर में सिर्फ़ अस्पताल-गाड़ियों और अग्निशामकों तथा जहाज़ों के हार्न की आवाज़ें ही सुनायी देती हैं। दुर्गंध और धुएँ के वर्णन से दंगे का चित्रण सजीव हो उठता है। आवश्यक होने पर, घोष लंबे शब्दों से परहेज़ नहीं करते और अपने वाक्यों को आवश्यकतानुसार बड़ा-छोटा करते चलते हैं।

दंगा, क्रिसमस के दिन शुरू होता है जब उपन्यास का नायक किंडरगार्टेन के अन्य बच्चों के साथ अफ्रीकियों के उत्सव में उनके धार्मिक गीत सुनने जाता है। गीत सुनकर श्रोताओं की आँखों में आँसू भर आते हैं। नायक नहीं समझ पाता कि असंख्य मृत और घायलों को देखकर जिन बच्चों की आँखों में आँसू नहीं उमड़े, वे इन गीतों को सुनकर क्यों रोने लगे? इसका कारण उसकी समझ में तब आता है जब वह पंडित जी और एक विद्यार्थी की, जो सभी प्रकार के धार्मिक पर्वों का विरोधी है, बहस सुनता है। विद्यार्थी के हाथ में मार्क्सवादी दर्शन की पुस्तक और लाल आवरण में पैंफ़लेटों का एक बंडल है और वह "किसी नायक के जन्म लेने के लिए अराजकता ज़रूरी है" की रट लगाए रहता है जबकि पंडित जी पुराणों के उद्धरण प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थी बहस में पंडित जी के सामने टिक नहीं पाता। यहाँ उपन्यासकार ने पंडित जी को उस जीवन-दर्शन का प्रवक्ता बना दिया है जिसके आधार पर नायक के व्यक्तित्व का निर्धारण हुआ है। वह जीवन-दर्शन है: "उर्वशी, अर्थात् सौंदर्य की खोज से ही जीवन सार्थक होता है। यही खोज मनुष्य को बनमानुष, चींटी और हाथी से अलग करती है।"

जिस प्रकार विद्युत्-प्रवाह से इस्पात पिघल जाता है, उसी प्रकार सौंदर्य कठोर व्यक्ति को भी द्रवित कर देता है और दुष्प्रवृत्तियों का अंत कर देता है। सौंदर्य का वही महत्त्व है जो भगवान् के दर्शन का। इससे भावोन्मेष होता है। भावोन्मेष न हो तो मनुष्य भगवान् को नहीं प्राप्त कर सकता। और बच्चा समझ जाता है कि गीतों के सौंदर्य से ही उसकी आँखों में आँसू उमड़ आए थे।

उपन्यास के अंत में एक गीतात्मक उद्धरण है जिसमें प्राकृतिक सौंदर्य तथा

नीग्रो गीतों के अनुपम सौंदर्य का वर्णन किया गया है। लगभग दो पृष्ठों के इस उद्धरण को पूरा-पूरा उद्धृत करना तो संभव नहीं है, लेकिन निम्नलिखित उद्धरण से घोष की शैली के सौंदर्य का कुछ अनुमान किया जा सकता है :

"मैंने कलगीदार तूती और चित्तीदार बुलबुल को चहकते सुना है। उनका स्वर अत्यंत मधुर होता है। मैंने चाँदी के समान सफ़ेद जलवाले पोखर में अर्द्धचंद्र की जगमगाती छाया देखी है, इसमें भी सौंदर्य होता है। रामचिरैया की उड़ान और कमल के फूल पर भौंरों की भनभनाहट—इनमें भी सौंदर्य होता है। इसी प्रकार पानी में उठती लहरों और दूर से आती मंदिर की घंटा-ध्वनि में भी सौंदर्य होता है।

मैंने जेठ की तपती धूप में झुलसते मैदानों की निस्तब्धता का अनुभव किया है और बरसाती बादलों की गरज भी सुनी है। मैंने इंद्रधनुष का सौंदर्य देखा है और हवा में लहराती पकी फ़सल को भी, मैं आसमान में बहुत ऊँचाई पर उड़ते बाज पक्षी को देखकर मुग्ध हुआ हूँ और कीचड़ में छोटी-छोटी मछलियों को क्रीड़ा करते भी देखा है, मैंने काले बादलों के बीच सफ़ेद सारसों की उड़ान और बाँस-वन में जुगनुओं को हवा में जगमगाते देखा है, मैंने कोंपलों को हवा में लहराते देखा है और मोर को नृत्य करते भी देखा है—बारहसिंघों के छौनों को कुलाँचे भरते देखा है, माँ की गोद में सोते हुए बच्चे को देखा है, तारों को टूटते देखा है और शक्तिशाली जल-प्रवाह की घड़घड़ाहट भी सुनी है···"

घोष अनेक सुंदर वस्तुओं का सिर्फ़ उल्लेख करके ही नहीं रह गए हैं बल्कि उनके सौंदर्य को आत्मसात भी किया है। इस उद्धरण में 'सौंदर्य' बार-बार आया है, लेकिन प्रत्येक बार इससे अलग-अलग क़िस्म की ध्वनि निकलती है। वन्य जीवों की गतिशीलता—'रामचिरैया की उड़ान'—के बाद उन्होंने निर्जीव पदार्थों के सौंदर्य—"प्रवहवान जल और मंदिर की घंटा-ध्वनि का उल्लेख किया है। उनका गद्य पाठक पर कभी भारी नहीं पड़ता, क्योंकि 'काले बादलों के बीच सफ़ेद सारसों की उड़ान' जैसे लंबे वाक्यांश के बाद, 'बाँसवन में जुगनुओं की जगमगाहट' और 'कोपलों को हवा में लहराते', 'मोर को नाचते' और 'बारहसिंघों के छौनों की कुलांच भरते' जैसे छोटे वाक्यांश आते हैं। अनुप्रास की छटा से उद्धरण का सौंदर्य बढ़ गया है। इस प्रकार के वर्णन से वह किसी भी प्रकार अपने को विशिष्ट सिद्ध करने की कोशिश नहीं करते, क्योंकि उद्धरण के अंत में उन्होंने लिखा है, "इन सभी वस्तुओं में सौंदर्य पाकर मैं निहाल हो उठा हूँ", लेकिन उसी साँस में बच्चा यह भी कहता है कि "लेकिन इन सभी वस्तुओं के सौंदर्य से तो बंगाल का बच्चा-बच्चा परिचित है।"

उपन्यास में वर्णन एक बच्चा करता है जिसके अनुभव इसमें दिए गए हैं। मोती दीदी की कपड़ा धोने की टोकरी में बैठने की इच्छा प्रकट करते समय या

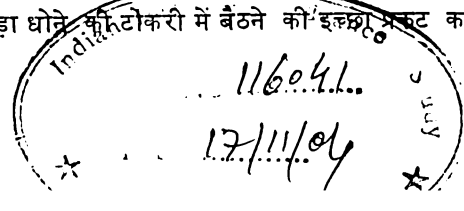
116041
17/11/04

वढ़ई को काम करते देखकर वच्चे की जो प्रतिक्रिया होती है, वह किसी भी अन्य वच्चे की स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो सकती है। पशुओं का वहुत मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। हाथी, मोहन और उस वच्चे द्वारा गुंडों के पकड़े जाने की कहानी एक अच्छी साहसिक वाल-कथा है। उपन्यास की अन्य वहुतेरी छोटी कहानियाँ, जैसे चींटी और शिकारी की कहानी, ग्रामीणों द्वारा अपरिचितों का मखौल उड़ाए जाने की कहानी, भारत में सर्वोत्तम भाषा की समस्या और उसके समाधान के विषय में अकवर की कहानी, या राजा विक्रम तथा घमंडी सौदागर की कहानी भी वच्चों को ध्यान में रखकर दी गयी है। 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' में मोती दीदी, डाकिया, करिन (सिस्टर स्वेंस्का की सहायिका), पंडित जी और घुमक्कड़ संन्यासी जैसे पात्र अनेक नीति-कथाएँ कहते हैं। लेकिन यह उपन्यास वाल-साहित्य नहीं है यद्यपि वच्चे भी इसका आनंद उठा सकते हैं। जो दार्शनिक प्रश्न उठाए गए हैं, वे वयस्कों के ध्यान देने योग्य हैं।

पुराणों और पंचतंत्र जैसी लोकप्रिय कथा ग्रंथों में अनेक चुटकुले और प्रार्थनाएँ आती हैं, और घोष का लेखन भी इसी ढंग का है। पिअन दादा, वच्चे को वुरे लोगों से सचेत करते हुए यह उद्धरण देते हैं :

> दुर्जन को चाहे जितना प्यार करो
> दुर्जन तो दुर्जन ही रहेगा
> कोई भी उपाय और उपचार करो तुम
> कुत्ते की पूँछ टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी।

उपन्यास में उचित स्थानों पर सरोजिनी नायडू की कुछ कविताएँ दी गयी हैं जिनको पढ़कर उनकी काव्य-कला के संबंध में अच्छी राय वनती है। उदाहरणार्थ,

> मसालों के बाग़ से
> धान के खेतों से
> कमल-पोखर की दूसरी ओर से
> मैं लायी हूँ
> ओस-बूँदों से जगमगाता
> एक छोटा-सा प्यारा स्वप्न।
> प्रिय, आँखें बंद कर लो,
> जुगनू नृत्य कर रहे हैं
> नीम-परी के चारों ओर,
> पोस्त-स्कंध से

चुरा लायी हूँ तुम्हारे लिए
एक छोटा-सा प्यारा स्वप्न ।

घोष की मुद्रण-कला की विशेषता यह है कि वह कविताओं को इस प्रकार सजाते हैं कि वे गीत का रूप धारण कर लेते हैं। हम सरोजिनी नायडू की इस कविता को उनकी संगृहीत कविताओं (द सेप्टर्ड फ्लूट) में पढ़ते हैं तो वह प्रभावी नहीं सिद्ध होती, लेकिन वच्चे के लिए मोती दीदी द्वारा गायी गयी लोरी के रूप में इसका वहुत प्रभाव पड़ता है। उनकी एक अन्य कविता उपन्यास में शामिल की गयी है जिसे किंडरगार्टेन के एक वच्चे भीमसेन ने अपने चाचा को गीत के रूप में सुनाया है :

जव मैं तुमको खेत में डालता हूँ, पोस्त-वीज,
पोस्त-वीज,
सोचता हूँ, तुम्हें सर्दी तो नहीं लग रही ।
क्या तुम एकाकी पड़ गए हो ?
क्या तुम्हें चाहिए
छोटे जुगनू का प्रकाश
अंधेरे में पड़े अपने पालने के पास
जव तक तुम्हें नींद नहीं आती और तुम
फूल का सपना नहीं देखने लगते,
पोस्त-वीज ?

घोष ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनेक गीतों को, जिनका वंगाल के कंठ संगीत पर गहरा प्रभाव पड़ा है, उस उपन्यास में शामिल किया है, रवि वावू ने स्वर-रचना सहित लगभग तीन हज़ार गीतों की रचना की। उन्होंने कभी कहा था, "स्वर-रचना के अभाव में मेरे गीत उन तितलियों के समान हैं जिनके पर काट दिए गए हैं।" और घोष ने रवि वावू के गीतों को उनके पूर्ण सौंदर्य के साथ प्रस्तुत करने के लिए उनकी स्वर रचना भी दी है। पता नहीं, इस तरीके से पाठक को कुछ लाभ होगा या नहीं, लेकिन घोष ने उनके संगीत को पाठक तक पहुँचाने की कोशिश अवश्य की है। घोष ने रवि ठाकुर के गीतों को उनके गीत संग्रह से उद्धृत न करके उनके 'एकला चलो रे' और 'जानि गो दिन जावे' जैसे गीतों को प्रस्तुत किया है जो वंगाल में तो अत्यंत लोकप्रिय हैं, लेकिन भारत या विदेशों के अंग्रेज़ी-भाषियों तक नहीं पहुँच पाए हैं।

घोष, जव भारतीय जीवन और भारतीय मिथकों की चर्चा करते हैं तव मूल

शब्दावली का व्यवहार न करके उनका भावानुवाद करते चलते हैं। उदाहरण-स्वरूप, वह वृहदारण्यक उपनिषद् से प्रजापति की कथा अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं जिसमें प्रजापति ने तीन प्रकार के मनुष्यों को एक ही सलाह-'द'-देते हैं, जिससे तीनों अलग-अलग अर्थ ग्रहण करते हैं। पाताल में रहनेवाले असुरों का वह "अधोलोक के वासी, जो दानव हैं" कहकर उल्लेख करते हैं। घोष, मुल्कराज आनंद के समान कभी भारतीय शब्दों या वाक्य रचना का प्रयोग नहीं करते। उपन्यास में वह व्याख्या करते चलते हैं, जैसे, "यह नहरों तथा तालाबों और प्राकृतिक तथा कृत्रिम झीलों और उथले जल को जोड़नेवाला एक जलमार्ग था" और "सिस्टर स्वेंस्का को हम और उनके सभी परिचित स्वेंस्का बीवी कहा करते थे। बीवी का अर्थ है सम्मानित महिला।"

'एंड गज़ेल्स लीपिंग' में घटनाओं का वर्णन काल-क्रम के अनुसार किया गया है, उपन्यास के अंत में नायक के किंडर गार्टेन में अंतिम बार क्रिसमस बिताने का वर्णन है। अगले उपन्यास, 'कैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में नायक संथाल परगना के एक छोटे-से गाँव में है। यद्यपि उसके माता-पिता वहाँ नहीं होते, वही गाँव वास्तव में उसका अपना गाँव है। बाद के दो उपन्यासों की कथा-भूमि कलकत्ता है, जहाँ रहते हुए वह हमेशा उस गाँव के बारे में सोचता रहता है। उसका शैशव कलकत्ता में बीता है, लेकिन रानी नीलमणि की ज़मींदारी में जहाँ किंडर गार्टेन अवस्थित है, गाँवों के सभी सद्गुण पाए जाते हैं और कलकत्ता जैसे बड़े नगर का कोई भी दुर्गुण दिखायी नहीं देता। शीघ्र ही कलकत्ता इस 'अंतिम गाँव' को निगल लेता है।

क्रैड्ल ऑफ द क्लाउड्स
(बादलों का पालना)

क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स (1951) में उसी अनाम वाचक का वर्णन है जो अब मेमहरी परगना (अब संथाल परगना) में रहकर अपनी बाल्यावस्था व्यतीत कर रहा होता है। इसमें घोष ने नायक की मौसी और अभिभावक मासी-माँ, गाँव के चौकीदार रामदास, कथा-वाचक कथक, बढ़ई छुतार, औज़ार-निर्माता जनार्दन, आदिवासियों के एक गाँव के मुखिया पारा मानिक तथा अध्यापिका नीला जैसे स्मरणीय पात्र-पात्रियों के सहारे ग्रामीण रीति-रिवाज़ों का सफलतापूर्वक चित्रण किया है।

घोष ने ग्राम जीवन में संबंधों की घनिष्ठता का वर्णन करने के लिए मधुर हास्य का सहारा लिया है—ग्रामीण जीवन, जहाँ सभी एक-दूसरे से परिचित होते हैं। जब नायक को कलकत्ता में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त होती है, तो सभी ग्रामवासी इस खबर को इस रूप में ग्रहण करते हैं जैसे छात्रवृत्ति नायक को न मिलकर स्वयं उन्हीं को मिली हो। छात्रवृत्ति की ख़बर, 'कुसुमपुर संवाद' में छपी होती है, जिसकी प्रति उस बालक को मुफ़्त में देने के लिए ग्रामवासियों में होड़ मच जाती है। रानी नीलमणि की ज़मींदारी से जब वह घर लौटता है तो कहता है, "मुझे उसको अपनी सफलता के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उसको मेरे बारे में स्वयं मुझसे भी अधिक जानकारी थी।"

अनेक भारतीय उपन्यासकारों ने ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। राजा राव के 'कंठपुर' (1938) में स्वतंत्रता-संघर्ष से आंदोलित कर्नाटक के एक गाँव का सुंदर चित्रण हुआ है। मुल्कराज आनंद के 'द विलेज़' (1939) (गाँव) में उपन्यास के नायक, बाबू की किशोरावस्था का चित्रण है जो पंजाब के एक गाँव में रहता है। भवानी भट्टाचार्य ने अपने 'ही हू राइड्स ए टाइगर', (शेर-सवार), 'म्यूज़िक फ़ॉर मोहिनी' (मोहिनी के लिए संगीत) और 'सो मेनी हंगर्स' (तरह-तरह की भूखे) आदि उपन्यासों में बंगाल के गाँवों का चित्रण किया है, लेकिन 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में ग्रामीण जीवन का चित्रण भारतीय अंग्रेज़ी के अन्य लेखकों के उपन्यासों से बिलकुल अलग क़िस्म का है। उनके उपन्यासों में ग़रीबी के बोझ से दबे कर्मठ किसान, लोभी सूदख़ोर और भ्रष्ट धार्मिक नेता जैसे पात्र नहीं

मिलते। इसका कारण यह है कि घोष की रुचि मूलतः सामाजिक चित्रण में न होकर नायक के अनुभवों को अभिव्यक्ति देने में रही है। उपन्यास का विषय है एक बालक का विकास, न कि किसी ईमानदार भूमिहीन किसान का चित्रण। उपन्यास में सूखा पड़ता है, लेकिन इस संबंध में बढ़ते हुए मूल्यों की चर्चा नहीं होती, चर्चा होती है भूखे संथालों की और ज़मीन के सूख जाने के कारण मुरझाते उनकी प्रिय फ़सल की।

जाति-प्रथा के प्रति घोष कभी दुराग्रही नहीं होते, इसकी जकड़ कितनी अधिक मज़बूत है, इसका अनुभव उस बालक वाचक को तब होता है जब गाँव के सभी कारीगर उसको सिर्फ़ विजातीय होने के कारण अपना पुश्तैनी काम नहीं सिखाते। उसको कोई हमजोली नहीं मिलता क्योंकि गाँव के सभी लड़के अपना-अपना पुश्तैनी काम सीख रहे होते हैं। उसके सबसे अच्छे मित्र बनते हैं संथाल जिनमें जाति-प्रथा का कठोरता से पालन नहीं होता। आदिवासियों की कर्मठता का जैसा सुंदर चित्रण घोष के इस उपन्यास में मिलता है, वैसा इंडियन इंगलिश के किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलता। घोष उनके उत्साह, उनके मैत्री भाव, उनके ओजस्वी नृत्यों और हृष्ट-पुष्ट स्त्रियों के साड़ियाँ पहनने के ढंग का, जिनमें से उनके अंग झाँकते रहते हैं, वर्णन अत्यंत मनोरम ढंग से करते हैं। 'दिल्ली वाले' सूखे से मुक्ति पाने के लिए एक बड़ा बाँध बनाना चाहते हैं, उनको हज़ारों आदिवासियों की चिंता नहीं होती जिनके गाँव जलाशय बनने के कारण डूब जाएँगे। निःसंदेह, वे आदिवासियों को किसी अन्य स्थान पर बसा देने का वादा करते हैं, लेकिन सुदूर दिल्ली के शासक दल को यह चिंता नहीं होती कि इस प्रकार आदिवासियों की परंपरागत जीवन-पद्धति नष्ट हो जाएगी। प्रज्ञा के प्रतीक, पंडित जी पूछते हैं कि "यदि मछली को पानी में से निकाल दिया जाए तो क्या वह बच पाएगी?" बार-बार पड़नेवाले सूखे की समस्या का समाधान पंडित जी वृक्षारोपण बताते हैं जिससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जो प्राचीन हिंदू-व्यवस्था के अनुरूप है। यह सलाह तो आधुनिक पर्यावरण-विशेषज्ञ भी देने लगे हैं। पंडित जी कहते हैं :

"हमारे लोगों को बाँध नहीं चाहिए। पेड़ लगाइए और हमारे जंगल जो कट रहे हैं उनको फिर से हरा-भरा बना दीजिए। ऐसा करने से लाल घाटी दोबारा विहँस उठेगी। इनको इनके जंगल दे दीजिए तो इनको बाँध की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

गाँव का कुम्हार कुमार अकेला व्यक्ति है जिसे वाचक यदि काम करते देखता है तो उसको कोई आपत्ति नहीं होती। कुम्हार वस्तुतः उसका "मित्र, दार्शनिक और पथ-प्रदर्शक" है। कुमार, संस्कृत के विद्वान पंडित जी और संथाल पादरी जोहन उपन्यास में शुभ का प्रतिनिधित्व करते हैं। ग्रामवासी, उस कुम्हार को हेय

दृष्टि से देखते हैं क्योंकि उसका जन्म कुम्हार परिवार में न होकर जौहरियों और हीरा काटनेवालों के एक संथाल परिवार में हुआ है जिसके सदस्य पेनहारी के भूतपूर्व शासकों का काम किया करते थे। कुमार अपने सपनों की चर्चा सिर्फ़ नायक से करता है, वह उसको पेनहारी के शासकों और उन नीलमों के बारे में अनेक किंवदंतियाँ सुनाता है जो कभी शंका नदी के तल से प्राप्त होते थे। वह अब भी ऐसे वर्तन बनाता है जिसमें नीलम की चमक-दमक होती है। कुमार ही वह व्यक्ति है जो वाचक को दंत-कथाओं में चर्चित प्रज्ञा के देश 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (बादलों का पालना) के बारे में बताता है। कुमार अपनी प्रतिमाओं के लिए विख्यात है, दुर्गापूजा के लिए प्रतिमाएँ गढ़ने से उसको आनंद की अनुभूति होती है। दुर्गापूजा के तीनों दिन संथाल अन्य ग्रामवासियों से सहयोग करते हैं और नायक को यह देखकर दुःख होता है कि पूजन के बाद इतनी सुंदर प्रतिमाएँ नदी में विसर्जित कर दी जाती हैं। पुष्पपुर मेले में पहला पुरस्कार प्राप्त करने पर कुमार की प्रसिद्धि और भी फैल जाती है, कृष्ण से संबंधित किसी दंत कथा की मिट्टी की सर्वोत्तम प्रतिमा के लिए रानी सुरबाला इस पुरस्कार की घोषणा किए होती हैं। जब किन्हीं करों के लगने के कारण मेला नहीं लग पाता तो पादरी जोह्न इसकी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेते हैं और ईसाई विषय 'जूडस का विश्वासघात' शीर्षक से एक अनुपूरक प्रतियोगिता शुरू की जाती है। परंपरा से हटकर यही एक चीज़ है जिसका वर्णन मेले के संबंध में किया गया है।

पादरी जोहन एक अत्यंत रोचक पात्र है। इस उपन्यास के अलावा बाद के उपन्यासों में भी इस पात्र का वर्णन आया है। पादरी जोह्न ही वह व्यक्ति है जो नायक से लैटिन सीखने के लिए आग्रह करते हैं जिसके माध्यम से अगले उपन्यास में उसकी दोस्ती रोमा से होती है। 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में वही चार्ली को नायक के साथ रहने के लिए भेजती है। पादरी जोह्न संथाल है। और घोष अत्यंत रोचक ढंग से यह बताते हैं कि सिरामपुर की सेमिनरी में उन्होंने किस प्रकार शिक्षा प्राप्त की। जोह्न के दादा का जन्म डेनमार्क की व्यापारिक कंपनी के वंदरगाह वालेश्वर में हुआ था और वह स्वयं को डेनमार्क का नागरिक समझते थे। जब उनको डेनमार्क और ट्यूटॉनिक शासकों के बीच संघर्ष की ख़बर मिली, वह नाव से डेनमार्क जाने के लिए अपनी भैंसों को लेकर कलकत्ता चले गए। जब तक वह कलकत्ता पहुँचे तब तक शांति स्थापित हो चुकी थी, इसलिए उन्होंने अपनी भैंसे डेनमार्क के मिशनरियों को दे दीं। यद्यपि ब्रिटेनवासी फ्रेडेरिक्स नगर को सिरामपुर कहा करते हैं, संथाल उसको फ्रेडेरिक्स नगर ही कहना पसंद करते हैं। उनकी प्रज्ञा बोल उठती है, "यदि हम नयी चीज़ों के पीछे भागते रहें, हमारी पूरी ज़िंदगी भाग-दौड़ में ही बीत जाएगी।" इससे स्पष्ट है कि घोष किसी जगह का नाम बदलना पसंद नहीं करते। जोह्न ईमानदार और आस्तिक व्यक्ति तो हैं

लेकिन उनकी ईसाइयत एक विचित्र प्रकार की है : क्रास उनके ललाट पर उत्कीर्ण है : "यदि वैष्णव लोग अपनी नाक पर चंदन लगाकर खुलेआम अपने मत का प्रचार करते हैं तो पादरी जोह्न भी उसी प्रकार क्राइस्ट के क्रास में अपनी आस्था की घोषणा क्यों न करे ?" संथाल इस रूढ़ि-विरोधी पादरी की ईमानदारी के कायल हैं जो अपनी धर्मक्रिया (सर्विस) के अंत में 'आलो, आमार आलो' (रवि बाबू का प्रसिद्ध गीत) गीत गाया करते हैं। विदेशी विश्वविद्यालयों की डिग्री हासिल किये होने के कारण (जोह्न बहुत बड़े विद्वान् हैं) वह पंडित जी और कुमार की ही तरह परंपराओं के समर्थक हैं।

जब वह क्राइस्ट से विश्वासघात की प्रतिमा का प्रतिरूप (माडल) बनने के लिए लोगों का चुनाव करना चाहते हैं तो कुमार क्राइस्ट का प्रतिरूप बनने के लिए वाचक को अपना नाम देता है और जूडस के प्रतिरूप के लिए रानीगंज स्कूल के सेकंड मास्टर हेमचंद्र छहर का नाम सुझाता है। यह घटना जुताई समारोह के बहुत पहले घटती है जब सेकंड मास्टर से नायक का मोह-भंग हो जाता है। प्रतिमा से यह इंगित होता है कि प्रगति के इस अधिवक्ता पर विश्वास नहीं किया जा सकता। सेकंड मास्टर से नायक का मोहभंग उसके व्यक्तित्व के विकास की कहानी का एक मुख्य, यद्यपि अत्यंत दुःखद प्रसंग है।

हेमचंद्र छहर अपने माता-पिता का आठवाँ पुत्र है और उसका जन्म जन्माष्टमी (कृष्ण का जन्म-दिन) के दिन हुआ था। इसलिए, ग्रामवासी उसको शुभ मानते हैं। उसको प्रत्येक पर्व के अवसर पर निमंत्रित किया जाता है और यद्यपि वह हमेशा अंधविश्वास और कर्मकांड का विरोध करता है, तथापि उसको इससे लाभ उठाने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता। कालेज के लड़के उसको अपना आदर्श मानते हैं और आधुनिकता पर उसके भाषणों से मुग्ध हो उठते हैं। उसका विरोध करनेवाले नास्तिकों की संख्या बहुत कम है।

"सेकंड मास्टर खरी बातें करते हैं"—विद्यार्थी उसमें एक ऐसे व्यक्ति को पाकर प्रसन्न है कि जिसमें किसी भी कीमत पर सच बोलने का साहस है—"इन दिनों संस्कृत पढ़ने से क्या लाभ ? केवल समय की बर्बादी। सेकंड मास्टर ठीक कहते हैं। वह ग़रीबी मिटाना चाहते हैं जो बनिया लोगों और बैंकरों को अच्छा नहीं लगता।"

"ग़रीबी किस तरह मिटायी जा सकती है ?" एक शंकालु पूछता है।

"क्यों ? संपत्ति के समान वितरण से ! सबको बराबर मज़दूरी देकर।" उपस्थित बहुमत बोल उठता है।

शंकालु कहता है "इसका अर्थ तो यह हुआ कि पाँच वर्ष तक खटने के बाद भी मुझे उतनी ही मज़दूरी मिलेगी जितनी कि एक अकुशल मज़दूर को।" लेकिन बाक़ी लोग उसकी बात पर ध्यान नहीं देते।

अपनी सहज वक्तृत्व-शक्ति के कारण, हेमचंद्र में एक राजनीतिज्ञ की विशेषताएँ हैं। उसकी तुलना 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' के 'एक नंबर' से की जा सकती है, जो लोगों को उत्तेजित करने में माहिर है और झूठे वादे करके मतदाताओं का दिल जीत लेता है। उसके पास ग़रीबी मिटाने के लिए कोई व्यावहारिक कार्यक्रम नहीं है। लगता है, भारत की स्थिति की सूक्ष्म सूझबूझ से सुधीन घोष को भविष्य-वाणी करने की शक्ति प्राप्त हो गयी है। इंदिरा गाँधी ने 'ग़रीबी हटाओ' का नारा तो घोष के उपन्यास के प्रकाशन के बीस वर्ष बाद दिया था।

नायक सेकंड मास्टर के प्रशंसकों की मंडली में आकर उसको एक आप्त-पुरुष मानने लगता है। संथालों के प्रति सेकंड मास्टर के विचार सबसे पहले नायक की उद्विग्नता का कारण बनते हैं, नायक आदिवासियों को विशेष रूप से प्यार करता है और ऊँची जाति के हिंदुओं की तरह स्वयं को उनसे बड़ा नहीं मानता। एक लंबी अवधि तक नायक यह तय नहीं कर पाता कि हेमचंद्र छहर प्रशंसा के योग्य है या पंडित जी आदर के योग्य। आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' का एक मुख्य पक्ष है, लेकिन लेखक का झुकाव पारंपरिकता की ओर जान पड़ता है। प्रगति और आधुनिकता का पक्षधर हेमचंद्र ढोंगी है, इसलिए उसको पर्याप्त समर्थन नहीं प्राप्त होता। शुरू से अंत तक यही दिखाया गया है कि प्रज्ञा इस गाँव के वासियों के ही पास है, "विद्वत्ता के भंडार पंडित जी का जन्म इसी गाँव में हुआ था। बाहरी लोग मूर्ख हैं।" यह बात ध्यान देने की है कि हेमचंद्र "वास्तव में पेनहरी परगना का नहीं है। उसका जन्म वर्द्धमान में हुआ था।" इन सारी बातों के बावजूद घोष ने नायक के द्वंद्व को विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया है : वह नहीं समझ पाता कि पंडित जी की पारंपरिकता, स्कूल मास्टर की बौद्धिकता और साम्यवादी अराजकता के बीच किसको अपना समर्थन दें।

साम्यवादी, जो प्रचुरता का आश्वासन देते हैं, पंडित जी के सभ्यता-संबंधी विचारों का मखौल उड़ाते हैं। घोष ने दर्शाया है कि साम्यवादी एक तरह से भ्रष्ट राजनीतिज्ञों से अच्छे हैं जो अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए परंपरा का दुरुपयोग करने से बाज नहीं आते। कुछ दूर तक, साम्यवादियों को लोगों की दुर्दशा देखकर वास्तव में दुःख होता है, सिर्फ़ समस्याओं पर विचार करने का उनका तरीक़ा ग़लत है, वे भारत की समस्याओं के निदान के लिए दूसरे देशों का मुँह जोहते हैं। उनका नारा है, "चीन की ओर देखो, बर्मा की ओर देखो···उनके लिए लाल रास्ता ही एकमात्र रास्ता है।"

जुताई अनुष्ठान में उपन्यास,अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है जिसमें नायक का स्कूल मास्टर के प्रति अंतिम रूप से मोह-भंग होता है। इस अनुष्ठान में गाँव की स्त्रियाँ स्वयं को हलों में जोत लेती हैं। इसमें उनको बहुत त्याग करना पड़ता है, लेकिन उनको अपनी ज़मीन से इतना अधिक प्रेम है कि इसके लिए तैयार हो जाती

हैं। घोष कहते हैं, "अपनी आस्था को सिद्ध करने के लिए मर जाना ही काफ़ी नहीं है। मृत्यु से भी बड़े त्याग होते हैं।" इस समारोह में स्त्रियाँ लज्जा त्याग कर निर्वस्त्र आती हैं, और यह जानती हैं कि यदि अनुष्ठान सफल न हुआ तो उनमें से कोई भी अपने घर नहीं लौट सकती। बलराम के रूप में हल चलानेवाले बच्चे और कृष्ण के रूप में वंशी बजानेवाले व्यक्ति को छोड़कर इसमें कोई अन्य पुरुष उपस्थित नहीं हो सकता। परंपरा से जिस दिन को बलराम के जन्म-दिन के रूप में मान्यता दी जाती रही है उसी दिन बच्चे का भी जन्म हुआ था, इसलिए वह बलराम बनता है। बलराम की भूमिका एक बार निभा लेने के बाद ग्रामवासी उसको कभी किसी दूसरे नाम से नहीं पुकारते। उसको वे जो कथा सुनाते हैं उसके अनुसार वृंदावन के निवासियों को नष्ट करने के लिए अत्याचारी कंस ने जमुना नदी पर एक बाँध बनाकर जल-प्रवाह की दिशा मोड़ दी। पानी की कमी हो जाने पर वृंदावन के पुरुषों को अपने पशुओं के साथ अपने द्वारिका के मित्रों के चरागाहों में चले जाना पड़ा। जब वे लोग अपने पशुओं को साथ लेकर चले गए तब कंस ने अपने भाड़े के सैनिकों को वृंदावन में उनके घर जला देने के लिए भेजा। घरों में आग लग जाने पर स्त्रियों को अपने कपड़े पहनने या घर के सामान बचाने का समय नहीं मिल पाया, वे किसी तरह अपने बच्चों को ही अपने साथ लेकर जलते हुए मकानों से भाग सकीं। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि दिन के समय वे अपनी लाज किस तरह बचा पाएँगी। बलराम उस समय बहुत छोटे थे। उन्होंने उनसे खेतों को जोतने में मदद माँगी। सुबह होने पर जब कंस के सैनिकों ने खेतों में हल चलने की रेखाएँ देखीं तो उनको लगा कि वहाँ के पुरुष वापस लौट आए हैं जो उनसे अब उनके किए का बदला लेंगे। सैनिक भाग गए। बलराम की सूझबूझ से वर्षा के देवता इंद्र भी इतना अधिक प्रसन्न हुए कि वृंदावन में वर्षा की झड़ी लग गयी और कंस द्वारा निर्मित बाँध टूट गया।

घोष ने इस अनुष्ठान का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। सूखे से प्रभावित सभी सात गाँवों की स्त्रियाँ, जिनमें हिंदू स्त्रियों के अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान और संथाल स्त्रियाँ भी शामिल हैं, पानी के घड़े लेकर अनुष्ठान में भाग लेने आती हैं। इस पानी से सूखे खेत को गीला किया जाता है जिससे यह बच्चे बलराम के हल चलाने योग्य बन सके। निर्वस्त्र स्त्रियाँ चौपायों की तरह हल में अपने को जोत लेती हैं। पत्थर की तरह सख़्त हो गयी धरती से उनके अंग छिल जाते हैं और खून निकलने लगता है। इसके बावजूद वे हार नहीं मानतीं और बलराम किसी तरह सख़्त ज़मीन पर हल चलाने में सफल हो जाता है। इसी मौक़े पर अपना सर्वस्व दाँव पर लगा देनेवाली स्त्रियों के बीच आकर सेकेंड मास्टर अनुष्ठान की हँसी उड़ाता है। वह अच्छी तरह जानता है कि इस मौक़े पर उसे खेत में नहीं आना चाहिए, लेकिन जब वह देखता है कि निर्वस्त्र स्त्रियाँ रत्नाभूषणों

से सज्जित हैं, वह अपने को रोक नहीं पाता। वह थोड़ा-थोड़ा नशे में होता है और अश्लील इशारे करने लगता है। इससे वलराम दुःखित होता है। पंडित जी ने उसको वता दिया होता है कि यदि अनुष्ठान की सफलता में कोई भी संदेह करेगा तो यह सफल नहीं होगा। वलराम पंडित जी का डंडा माँग लेता है। इस डंडे का नाम है महेंद्र चांडाल जो पारंपरिक प्रज्ञा का प्रतीक है। जो लड़की वलराम को यह डंडा थमाती है, 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में उसका नाम मैना है। सेकेंड मास्टर के वर्ताव से वलराम इतना क्रुद्ध हो उठता है कि वह उस पीतल जड़े डंडे से उसको पीट देता है। स्मरणीय है, यह व्यक्ति जूडस का प्रतिरूप बना था। जब वह भाग रहा होता है, दूर से घड़घड़ाहट की आवाज़ सुनायी देती है : एक भयंकर आँधी आती है, वर्षा की झड़ी लग जाती है और देसदिचादो वाँध टूट जाता है। अनुष्ठान, वलराम की आशा से अधिक सफल सिद्ध होता है, ज़मीन सिर्फ़ सूखे से ही नहीं, देसदिचादो वाँध टूटने के कारण पानी में डूवने से भी वच जाती है।

यद्यपि अनुष्ठान की प्रभविष्णुता का वर्णन विश्वसनीय ढंग से किया गया है, इसकी सफलता के प्राकृतिक कारण भी हो सकते हैं। असंतोष फैलाने के लिए साम्यवादी, कोयला-खनिकों के रिहायशी मकानों को विस्फोट करके नष्ट कर देना चाहते हैं। जिले के मुख्य स्थान गोला के भूमिगत गुप्त रास्तों को भी विस्फोट द्वारा नष्ट किया जा चुका है। संभव है, देसदिचादो वाँध में दरारें भी भूमिगत विस्फोट के धमाके के कारण ही पड़ी हों। घोष का वर्णन इतना शक्तिशाली है कि प्राकृतिक और दैवी में अंतर करना संभव नहीं है : वर्षा जैसी प्राकृतिक चीज़ भी दैवी हो उठती है। उपन्यास, जुताई अनुष्ठान के समय अपने चरमोत्कर्ष पर होता है जो उचित ही जान पड़ता है। आँधी और आँधी के वाद धरती से सोंधी गंध निकलने के वर्णन घोष की शैली की सुंदरता का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

घोष के अन्य उपन्यासों की तरह 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' भी तीन भागों में विभाजित है। 'द रेड वैली' (लाल घाटी) में लड़का घाटी के छोटे-से गाँव में अपना लड़कपन व्यतीत करता है जहाँ वह प्रतिदिन लंवा रास्ता तय करके स्कूल जाया करता है। इसमें घोष ने कहानी के भीतर अन्य कहानियाँ गूँथने की संस्कृत परंपरा का सुंदरतापूर्वक निर्वाह किया है। दूसरे और तीसरे भागों 'द ब्लू हिल्स' (नीली पहाड़ियाँ) और 'वलराम्स प्लाऊ' (वलराम का हल) की घटनाएँ उपन्यास के आरंभ की घटनाओं से पहले घटित होती हैं। उपन्यास के प्रारंभ में वाचक कलकत्ता में पढ़ाई करने जाने के लिए तैयारी कर रहा होता है जब सभी ग्रामवासी उसको नसीहत देने के लिए गाँव के गोलाकार मैदान में एकत्र दिखाए गए हैं। दूसरे और तीसरे भागों में गाँव से विदा लेते समय लड़का पहले घटी घटनाओं को याद करता है। इस प्रकार संरचना की दृष्टि से उपन्यास जहाँ समाप्त होता है वहीं से शुरू भी होता है—विदाई के समय के दृश्य से। इससे पुराणों की याद आती है।

उदाहरण के लिए मार्कंडेय पुराण के प्रारम्भ में जैमिनी मार्कंडेय ऋषि से महाभारत से संबंधित अपनी चार शंकाओं का समाधान करने के लिए निवेदन करते हैं। मार्कंडेय, शंकाओं के समाधान के लिए उनको चार विद्वान् पक्षियों के पास भेजते हैं जो उन चारों शंकाओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। पक्षी, जैमिनी को वताते हैं कि द्रौपदी के वेटों के अविवाहित अवस्था और कम उम्र में मर जाने का कारण यह था कि वे वास्तव में विश्वदेव थे जो विश्वामित्र के शाप के कारण उत्पन्न हुए थे : विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र की रानी के साथ जो दुर्व्यवहार किया था, उसकी विश्वदेवों ने आलोचना की थी। इस पर जैमिनी कहते हैं कि "हरिश्चंद्र की कथा सुनने के लिए मैं वहुत उत्सुक हूँ।" इसी वहाने हरिश्चंद्र की पूरी कथा—उनके स्वर्ग जाने और उनके गुरु वशिष्ट और विश्वामित्र के वीच संघर्ष की कथा—घोष ने दुहरा दी है। इसके वाद उस राजा की कथा आती है जो अपनी प्रजा को वहुत प्यार करता है, लेकिन प्रजा ने उसके साथ विश्वासघात कर दिया है, और उस सौदागर की कथा भी जो अपने परिवार के उन सदस्यों से ही प्यार करता है जिन्होंने उसको निर्वासित कर दिया है। (खंड 82)। वे मार्कंडेय ऋषि के पास आते हैं जो उनको वताते हैं कि उनके मन में मोह देवी महामाया के कारण उत्पन्न हुआ है। इससे एक और विषयांतर होता है जिसमें महामाया की महिमा का वर्णन है। 'देवी महामाया' नामक इस खंड में देवी की कुछ सुंदर स्तुतियाँ हैं। पुराण के अंत में जैमिनी अपनी शंकाओं का समाधान करने के लिए पक्षियों को धन्यवाद देते हैं।

'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' के प्रारंभ में कलकत्ता में पढ़ाई करने के लिए छात्रवृत्ति मिलने पर नायक को वधाई देने के लिए ग्रामवासी गाँव के गोलाकार मैदान में एकत्र दिखाए गए हैं। वहाँ उपन्यास के अधिकांश मुख्य पात्र भी उपस्थित हैं—उसकी मौसी मासी माँ, पंडित जी, स्कूल शिक्षिका नीला, व्यावसायिक कथा-वाचक कथक, गाँव के वड़े-वूढ़े और गाँव का चौकीदार रामदास। लड़के को संकोच होता है तो पंडित जी उसको संकोच न करने की चेतावनी देते हुए कहते हैं कि अत्यधिक संकोच एक प्रकार का अहंकार हो सकता है। इस क्रम में मेकाले और उसके अहंकार का वर्णन आता है। विषयांतर इस उपन्यास की एक शैलीगत विशेषता है। घोष जव भी कोई नयी वात कहते हैं तो उस संबंध से और अधिक जानकारी देने के लिए लंवा विषयांतर करते हैं। ग्रामवासी जव लड़के को कलकत्ता के जीवन के ख़तरों के प्रति सचेत करते हैं तो अपनी वात को स्पष्ट करने के लिए उन लोगों की चर्चा करना नहीं भूलते जिनको कलकत्ता जाकर कष्ट उठाना पड़ा है। 'कलकत्तन' शब्द का उच्चारण यदि थोड़ा विरूपित ढंग से किया जाए तो इससे 'काला कुत्ता' का अर्थ निकलता है, इसी वहाने घोष यम तथा उसके काले कुत्ते और मंत्रों की प्रभविष्णुता के संबंध में कथाएँ कहते हैं। नायक को यह वधाई

देने का एक अजीबोग़रीब तरीका मालूम होता है, और वह सोचता है कि घुमा-फिरा कर कोई बात कहने में ग्रामवासी माहिर होते हैं। गाँव के बढ़ई और लोहार के संस्मरण, जो वाचक के विजातीय होने के कारण उसको अपने व्यवसाय सिखाने से इनकार कर देते हैं, इसी तरीके के उदाहरण हैं। जाति की चर्चा के बाद विद्वत्ता के प्रति ग्रामवासियों का आदर-भाव, हथकुरा इंटरमीडिएट कालेज के प्रिंसिपल और रानीगंज स्कूल के शिक्षक बाबू हेमचंद्र छहर के प्रसंग आते हैं।

इसके बाद उपन्यास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग प्रारंभ होता है जिसमें बुवाई संबंधी अनुष्ठान की चर्चा है। बलराम उस सूखे को याद करता है जिसके कारण यह अनुष्ठान करने की ज़रूरत पड़ी थी। और, वह गाँव में धीरे-धीरे बढ़ जाने वाले तनाव को भी याद करता है। इस प्रसंग में उपन्यासकार सेकेंड मास्टर की टिप्पणियों, विद्यार्थी कॉलेज हुजूर की यात्रा, चोरों को पकड़ने के रामदास के अजीबोग़रीब तरीके, रामदास के साम्यवादी भतीजे गोपालदास की शरारतों आदि का भी उल्लेख करता है। इसके बाद उस दिन की चर्चा आती है जिस दिन बुवाई अनुष्ठान किया गया था। अनुष्ठान की सफलता के बारे में संदेह होने के कारण नायक ने गाँव से भाग जाना चाहा था, लेकिन वह भाग नहीं सका। इसी समय अपने घर के छज्जे पर खड़ा होकर वह बहुत-सी संथाल स्त्रियों को अपने सिर पर घड़े टिकाए आते देखता है। इन स्त्रियों को देखकर उसे उस दिन की याद आती है जिस दिन वह पहली बार 'रेड वैली एंड ब्लू हिल्स' (लाल घाटी और नीली पहाड़ियाँ) के उस गाँव में आया था और संथाल स्त्रियों को नृत्य करते देखा था। इसके बाद उपन्यास का दूसरा भाग शुरू होता है जिसमें 'ब्लू हिल्स (नीली पहाड़ियाँ) के पूर्व-दृश्यों का सबसे लंबा वर्णन है। इस पूरे भाग में पूर्व-दृश्यों का ही वर्णन है (पृष्ठ 125-227)। इस भाग में बलराम और संथालों के बीच संबंध का वर्णन है। वह उन दिनों की याद करता है जब वह संथालों के गाँव अमृतवन के स्कूल में शिक्षक था। इसके अलावा वह पहाड़ियों के पास बादलों के देखने के लिए बनायी गयी मुछारेबी गैलरी की अपनी यात्राओं को भी याद करता है। एक-दूसरे में गुँथी बहुत-सी कहानियाँ दी गयी हैं, जैसे नेपाल के जंग बहादुर की कहानी जो संथाल परगना के लोगों की इसलिए सहायता करने आते हैं क्योंकि उन्होंने (संथालों ने) कभी उनके पूर्वजों की सहायता की थी। जंग बहादुर द्वारा बर्गियों को हराने के लिए 'गोला' (एक विशाल मीनारनुमा निर्माण) के निर्माण की कहानी में उस राक्षस की कहानी भी गुँथी हुई है जिसने काठमांडू के पशुपतिनाथ के मंदिर में घुसने की चेष्टा की थी : इसके बाद छिपकिलियों तथा अंधेरे में रहनेवाले अन्य जीवों से परिपूर्ण गोला के भूमिगत रास्तों में वाचक की साहसिकताओं का वर्णन है। इस खंड में नीली पहाड़ियों के घने जंगलों और उनमें रहनेवाले विभिन्न प्रकार के जीवों का अत्यंत रोचक वर्णन है, जैसे पेड़ों पर रहनेवाले और रामदास

के नाम से विख्यात रीछ। एक वार वह घोड़े से गिरकर मुछारेवी में स्वास्थ्य-लाभ करता है जहाँ नीला, कुमार और संथालों के गाँव अमृतवन का मुखिया पारा मानिक उसकी देखभाल करता है। जव वह लाचार होकर विस्तर पर पड़ा होता है तव साम्यवादी···"कामरेड डाइनामाइटर" चौकीदार का भतीजा गोपालदास और रमोनी, जो पार्टी के लिए सदस्य वनाने में मदद करती हैं---वहाँ आते हैं। रमोनी उसको अपने माया-जाल में फाँसने की भरपूर कोशिश करती है और वह उस लड़की की ओर, जिसको रंगमंच पर नृत्य करने के कारण ग्रामवासियों ने त्याग दिया होता है, आकृष्ट हो जाता है।

प्रो. मीनाक्षी मुखर्जी ने मुल्कराज आनंद और सुधीन नाथ घोप की तुलना की है : दोनों ने छोटे वच्चों का विकास दिखाया है। फ़र्क़ यह है कि जहाँ मुल्कराज आनंद ने उनका शारीरिक विकास दिखाया है, वहाँ घोप ने उनके जीवन के गूढ़ पक्ष पर वल दिया है। किशोर नायक को रमोनी जव स्पर्श करती है तव वह नहीं समझ पाता कि उसको कैसा लगा था, लेकिन जव वह वहाँ उपस्थित लोगों से इस घटना का वर्णन करता है तो उनकी प्रतिक्रियाएँ सुनकर वह दंग रह जाता है—नीला क्रुद्ध हो उठती है तथा कुलटा और डायन की तरह रमोनी को गालियाँ देने लगती हैं।

नायक को पंडित जी से अपनी वातचीत की याद आती है जो अपनी वात समझाने के लिए अपने डंडे को ज़मीन पर ठोका करते थे : उसका दिवास्वप्न तव टूटता है जब उसी डंडे से ज़मीन ठोकने के कारण वह लोगों के आकर्षण का केंद्र वन जाता है। 'नीली पहाड़ियाँ' के अंत में, जिसमें जुताई अनुष्ठान की कथा में अन्य कथाएँ गुंफित हैं, नायक एक वार पुनः पानी भरने के लिए आती हुई स्त्रियों को देखता है।

तीसरे भाग, 'बलराम का हल' में उपन्यास के सभी तंतु आपस में जुड़ते हैं : बलराम की भूमिका में नायक को स्त्रियों के प्यार और उनकी कोमलता के साथ उनके दुराग्रही स्वभाव का भी अनुभव होता है। जुताई अनुष्ठान की रात को उसका अपने आदर्श-पुरुष स्कूल मास्टर से अंतिम तौर पर मोहभंग होता है। बलराम देखता है कि गाँव के गोलाकार मैदान में पीपल के पेड़ के नीचे एकत्र लोगों में स्कूल मास्टर भी है जिसको उसने उस रात प्रताड़ित किया और वर्णन पुनः विदाई की बैठक पर जा पहुँचता है। बैठक के अंत में नायक को शहराती ज़िंदगी के दुर्गुणों से संबंधित और भी कथाएँ सुनायी जाती हैं और चेतावनियाँ दी जाती हैं। नायक जव यह सुनता है कि रानी नीलमणि की ज़मींदारी का कुछ भी नहीं बचा और ज़मींदारी पर एक भवन-निर्माण कंपनी ने कब्ज़ा कर लिया है तो वह उदास हो जाता है। भाट (व्यावसायिक कथावाचक) उपस्थित लोगों का मनोरंजन करता है और 'कामरेड डाइनामाइटर' एक वहुत भावपूर्ण गीत सुनाता है, यद्यपि अन्य ग्रामवासियों को अपने लोकगीत सुनाने का अवसर नहीं मिल

पाता। परंतु घोष उनका वर्णन करते हैं और अपने प्रिय गीत का भी उल्लेख करते हैं जो रमोनी की पसंद का होता है। वास्तव में, यह गीत सरोजिनी नायडू रचित एक प्रेमगीत है। उपन्यास का अंत गाँव में वाचक की अंतिम रात के वर्णन से होता है। वह अपनी अनेक समस्याओं पर विचार करता है, लेकिन कोई समाधान नहीं निकाल पाता। वह सोचता है कि क्या अर्द्ध-शिक्षित होने की अपेक्षा पेनहारी के ग्रामवासियों की तरह अशिक्षित रहना ही अच्छा नहीं है? उसको अनेक प्रकार की नसीहतें दी जाती हैं जो उसको भ्रम में डाल देती हैं। वह स्वीकार करता है, "ये सारी चीज़ें भ्रम उपजानेवाली हैं।" पंडित जी और कुमार गीता के उपदेश—निष्काम कर्म—पर चलने की सलाह देते हैं, लेकिन नायक अपना कर्त्तव्य स्थिर नहीं कर पाता :

"मेरा वास्तविक कर्त्तव्य क्या है?" कामरेड डाइनामाइटर ने कहा "काम-भविष्य के वर्गहीन समाज के लिए अविरल काम करते जाना।" इस सिद्धांत को सुनकर कुमार अट्टहास कर उठता हैं। कुमार हमेशा सेकेंड मास्टर को ताने देता है—"काम के लिए काम? नहीं, धन्यवाद। गधे की तरह काम करके कोई भी व्यक्ति मर जा सकता है। पैंतीस वर्ष से मैं काम करने से परहेज़ करता रहा हूँ। मेरा काम ऐश करना है, मेहनत करना मेरा काम नहीं है। मेरा काम है अपनी इस क्षमता का भरपूर उपयोग करना। मैं काम में नहीं, बल्कि अवकाश में जीवन की सार्थकता मानता हूँ।" इतनी हल्की बात से मैं क्या समझूँ? पंडित जी ने प्रज्ञा की बात की, पादरी जोह्न ने ईश्वर के राज की, सेकेंड मास्टर ने सफलता की और ग्रामवासियों ने अपने पूर्वजों का योग्य उत्तराधिकारी बनने की। कामरेड डाइनामाइटर के अलावा सभी का विचार था कि हँसी-खुशी दिन बिताने से ही जीवन सार्थक होता है।"

वह जिन-जिन लोगों को आदरणीय समझता है, वे सभी प्रसन्नचित्त रहने में जीवन की सार्थकता समझते हैं, उसकी अभिभावक मासी-माँ कहती है, "हमें न तो स्वयं दुःखी रहने का अधिकार है, न दूसरों को दुःखी बनाने का। नास्तिक मनुष्य ही अप्रसन्न हो सकता है, और ऐसा व्यक्ति दंडनीय होता है।" उपन्यासकार के लिए मनुष्य की प्रसन्नता प्रकृति की प्रसन्नता और सुंदरता से जुड़ी हुई है। 'द वर्-मिलियन बोट' में निरूपित पवित्रता का दर्शन प्रसन्नता का ही दर्शन है। इस उपन्यास में यह दर्शन चाँद सौदागर और मनसा की कथा के रूप में निरूपित हुआ है : लहरें, समुद्र के जीव और फूल—ये सभी चाँद सौदागर से जीवन में प्रसन्नता और सौंदर्य की चर्चा करते हैं, और शिव की तपस्या करनेवाले तपस्वी को भी वरदान तभी प्राप्त होता है जब वह यह स्वीकार कर लेता है कि वह यह समझ कर भूलकर रहा था कि इस असार संसार में सच्चे भक्त को प्रसन्न रहने का अधिकार नहीं है। अंत में चाँद कहता है, "अब मैं समझ गया हूँ कि अप्रसन्नता और अपवित्रता एक ही चीज़ के दो नाम हैं।"

द वरमिलियन बोट

(सिंदूरी नौका)

'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (बादलों का पालना) के अंत में वाचक कलकत्ता में शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति पाने पर अपने गाँव से विदा होता है। जुताई अनुष्ठान में भाग लेने के कारण तब तक उसका नाम बलराम पड़ गया होता है। लेकिन कलकत्ता में रहने के बावजूद उसका मन 'लाल घाटी और नीली पहाड़ियाँ' गाँव में ही रमा रहता है, शहर में कभी उसका मन नहीं लगता। कलकत्ते का पुराना और पारंपरिक जीवन ही उसको रास आता है। 'द वरमिलियन बोट' में वह पुरुषत्व प्राप्त कर लेता है। इस उपन्यास में उसकी प्रारंभिक युवावस्था, सेक्स-बोध और नारियों में रक्षा करने के साथ-साथ सर्वनाश कर देने की भी शक्ति का चित्रण है।

'द वरमिलियन बोट' के प्रारंभ में बलराम आसनसोल के रेलवे स्टेशन पर अपने अभिभावक जोगिन से विदा ले रहा होता है और अंत में वह क़ानूनी तौर पर प्रौढ़ हो चुका होता है। उपन्यास के प्रारंभ में यह अनुभवहीन लड़का अपने जोगिन दा को "एक चमत्कारी व्यक्ति से कुछ कम नहीं मानता और यह समझता है कि 'जीवंत प्रज्ञा' उसके भीतर से प्रपात की तरह फूटती रहती है।" जिस प्रकार 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में बलराम का अपने आदर्श-व्यक्ति सेकेंड मास्टर से मोहभंग होता है, उसी प्रकार 'द वरमिलियन बोट' में वह यह अनुभव करता है कि उसका अभिभावक जोगिन बहुत बुरा व्यक्ति है। आसनसोल स्टेशन पर विदा लेने की घटना से पहले भी उसने जोगिन के बारे में बहुत-सी ऐसी बातें सुनी थीं जिनसे उसके सच्चरित्र होने का प्रमाण नहीं मिलता। उसने सुन रखा था कि कभी जोगिन एक सर्कस से जानवरों के पालतू होने की मुहर और अपनी माँ के आभूषणों की पेटी लेकर भाग गया था जिसमें पारिवारिक वस्तुएँ रखी हुई थीं, लेकिन वह कलकत्ता की खिदिरपुर गोदी में पकड़ लिया गया था। एक बार उसने अपने साथ एक बड़ा कुत्ता लेकर कलकत्ते से गर्मियों में देश की राजधानी शिमला तक की यात्रा की थी। इस यात्रा में उसने यह दावा किया था कि वह गवर्नर जनरल के कुत्ते के साथ जा रहा है। उसने उस कुत्ते को बेच दिया था और बेचने के एक घंटा

वाद कुत्ते के वास्तविक स्वामी से चुराए गए कुत्ते को खोज निकालने के लिए पुरस्कार प्राप्त करने का दावा कर दिया था। इस घटना के बारे में पूछे जाने पर वह कहा करता था कि उसको अफ़सोस इसी बात का है कि हावड़ा रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म टिकट ख़रीद कर उसने पैसे बर्बाद कर दिए, क्योंकि उस बड़े कुत्ते को साथ देखकर स्टेशन के कर्मचारियों की टिकट माँगने की हिम्मत ही नहीं हुई। जोगिन दा के बारे में प्रचलित अन्य कहानियों से भी यही लगता है कि वह ऐसा शरारती नहीं है, जिसकी शरारतों पर प्यार उमड़ता हो; उसके विपरीत वह एक नृशंस दुर्जन है। आसनसोल स्टेशन पर जोगिन बलराम को यह उपदेश देते नहीं थकता कि ट्रेन खुलने पर वह किसी अपरिचित व्यक्ति पर विश्वास न करे लेकिन स्वयं वह बलराम को उसका पर्स और रेल टिकट नहीं लौटाता जो बलराम ने उसको सँभालकर रखने के लिए दिया था।

बलराम को यह पता चलते देर नहीं लगती कि ट्रेन के उस डिब्बे में बैठे अन्य यात्री भी जोगिन के दुष्कर्मों के कारण उसको पहचानते थे। एक यात्री ने कहा, "बेटे, बेशक़, जोगिन के पास तुम्हारा टिकट है। इस समय वह ज़रूर आसनसोल बुकिंग ऑफ़िस में टिकट वापस कर पैसे वसूल कर रहा होगा।" यहाँ घोष ने रेल-डब्बे की भीड़ का अच्छा वर्णन किया है जिसके सभी यात्री बलराम से सहानुभूति प्रकट करते हैं। "बेबस व्यक्ति की रक्षा ईश्वर करता है" बलराम को अपनी दादी की यह उक्ति संतोष देती है। जब वह बहुत छोटा था तभी उसने अपनी दादी से यह उक्ति सुनी थी। कथानक के इस बिंदु पर एक लंबा पूर्वदृश्य है जिसमें एक सिंदूरी नौका का प्रसंग आता है। बलराम को चंदननगर के पालित महल की याद आती है। देखभाल करने के लिए किसी पुरुष उत्तराधिकारी के अभाव में महल नष्ट हो रहा होता है; उसकी दादी और बीमार चाची उसकी मरम्मत कराने में अपने को असमर्थ पा रही होती हैं। बलराम को पालित के महल के शानदार पुस्तकालय और चंदननगर के गौरवपूर्ण अतीत के बारे में अपनी दादी से सुनी कहानियों की याद आती है जब चंदननगर फ्रांसीसियों के अधिकार में था। ये कहानियाँ डुप्ले, सेंट आरलिएंस के क़िले के पतन, अंग्रेज़ों की घूसखोरी, और फ्रांसीसियों द्वारा उपनिवेश के सरकारी नौकरों की उपेक्षा से संबंधित हुआ करती थीं।

दूर का रिश्तेदार जोगिन का एक बार बाचक के लिए खिलौना लाता है—गहरे सिंदूरी रंग से रँगी हुई एक नौका, लेकिन बाचक की चाची वर्षा के पानी से उफनती हुगली नदी में बाचक को उस खिलौने से खेलने से मनाकर देती है। बाचक, जोगिन की सहायता से उस खिलौने को छिपा देता है, लेकिन बाद में छिपकर घर से निकल जाता है और चंदन पोखर में वह नौका चलाने लगता है। चंदन पोखर पालित महल के प्रांगण में बने अनेक पोखरों में सबसे बड़ा था। इस पोखरे में कभी

चंदन भिगोया जाता था, लेकिन इन दिनों यह घास-पात से भरा हुआ है। नौका चलाते समय वह देखता है कि नाव के चारों ओर घास-पात जैसा कुछ लिपटा हुआ है। ध्यान से देखने पर वह पाता है वह वस्तु घास-पात न होकर कोई गहरे रंग का जीव है जो वामिन (पनियारी साँप) की तरह नहीं है। वाचक, कपड़े उतार कर उस जीव को पकड़ने के लिए पोखर में कूद पड़ता है। लेकिन पानी इतना गंदा होता है कि उसे घृणा हो उठती है और वह चिल्लाने लगता है। उसकी चिल्लाहट ज़मींदारी का प्रबंधक सुनता है जिसकी पुकार पर घर के सभी लोग एकत्र हो जाते हैं। उस समय वच्चा कई ज़हरीले साँपों से अपने को वचा रहा होता है; जोगिन दा पोखरे में उन जीवों का प्रजनन करके उनको पालतू वनाने का प्रयोग कर रहा था। वलराम उन ज़हरीले साँपों से वच जाता है तो उसकी दादी उच्छ्वासित होकर कह उठती है, "वेवसों की रक्षा ईश्वर ही करता है।"

वलराम इतने सरल स्वभाव का है कि अपने जोगिन दा की नेकनियती के प्रति उसको रंच मात्र भी संदेह नहीं होता, उल्टे सोचता है कि उसके कारण जोगिन के प्रयोग में वाधा पड़ गयी। प्रबंधक यह इंगित कर चुका होता है कि जोगिन घर का कोई काम नहीं करता। वह जोगिन को एक ऐसा निट्ठला व्यक्ति समझता है "जो दीदी-मा की वची-खुची संपत्ति ऊँचे दाम पर ख़रीद लेना चाहता है।" यहाँ पाठक यह समझ जाता है कि जोगिन ने वच्चे को नौका यह सोचकर दी थी कि उफनती नदी में नौका चलाकर वह वह जाएगा। जोगिन की यह चाल सफल नहीं हुई तो उसने वच्चे को ज़हरीले साँपों से भरे पोखरे में नाव चलाने के लिए उत्साहित किया। जोगिन से वच्चे की अंतिम मुलाक़ात उपन्यास के अंत में होती है जव जोगिन का साला वलराम से कहता है कि वह जोगिन को अपनी (जोगिन) पत्नी को कुछ धन देकर मदद करने के लिए कहे। विगत वर्षों में जोगिन ने वलराम को यह कभी नहीं वताया होता कि उसकी कोई पत्नी भी जीवित है। और अब वलराम के कहने पर वह शान से कहता है कि वह तो निरीह जीवों की सहायता करना चाहता है। प्रेम स्वामी का शिष्यत्व ग्रहण कर जोगिन समृद्ध बन चुका है, लेकिन अपनी पत्नी के भूख-प्यास से उसको कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। वह कहता है, "पत्नी से अधिक महत्त्व है ईश्वर का···जो भी हो, मेरी पत्नी एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध है। क्या यह सम्मान की बात नहीं है?" यह सुनकर वलराम की उसके प्रति रही-सही श्रद्धा भी समाप्त हो जाती है। वह समझ जाता है कि जोगिन ने जो कुछ भी किया है, अपना स्वार्थ सिद्ध करने और उसको (बलराम) हानि पहुँचाने के लिए किया है, और ऊपर-ऊपर वलराम का शुभचिंतक होने का ढोंग रचता रहा है। जव वलराम पहली वार कलकत्ता जाता है तव जोगिन ऐसी चालें चलता है जिससे उसके (वलराम) सभी संवंधी उसके दुश्मन वन जाते हैं।

ट्रेन के यात्री वाचक को इसलिए पहचान जाते हैं कि उसकी शक्ल-सूरत उसके

(वलराम) पिता से, जो कलकत्ता उच्च न्यायालय में न्यायाधीश थे, वहुत कुछ मिलती है; यात्री उसको वताते हैं कि उसके वारे में सभी समाचार-पत्रों में एक सनसनीखेज समाचार प्रकाशित हुआ है : "मृत न्यायाधीश के पुत्र द्वारा न्याय-याचना। जाली वसीयत के कारण पुश्तैनी संपत्ति से वंचित।" समाचार-पत्रों के अनुसार उसकी अगली कलकत्ता-यात्रा कुछ प्रसिद्ध लोगों पर, जो उसके चचेरे भाई हैं, मुकदमा चलाने के एकमात्र उद्देश्य से की जा रही है; रपट (निस्संदेह, पत्रों को समाचार जोगिन ने दिया है) का परिणाम यह होता है कि उसके सभी लब्ध-प्रतिष्ठ संवंधी उसके दुश्मन वन जाते हैं, क्योंकि उनके अनुसार उसने उनके विरुद्ध जाली तौर पर मुकद्दमा चलाकर नितांत कृतघ्नता का वर्ताव किया है। जिस दिन वह कलकत्ता पहुँचता है उस दिन वहाँ हड़ताल होने से उसकी मुसीवतें और भी वढ़ जाती हैं; उसे कोई सवारी नहीं मिलती। वह रात को ठहरने के लिए कोई जगह खोजता है, जो उसके लिए आसान नहीं होता क्योंकि उसके पास न कोई सामान है, न रुपया-पैसा। निःशुल्क कहे जानेवाले धर्मशाला में रखवाला इनाम माँगता है। उसकी मुलाकात एक स्त्री से होती है जो मुस्कराते हुए उसको एक कमरा देने को राज़ी हो जाती है, लेकिन पूछती है," तुम्हारे साथ की लड़की कहाँ है ? पहले मैं उससे वात कर लेना चाहती हूँ। हम पुलिस के हाथ पड़कर मुसीवत मोल लेना नहीं चाहते।" वलराम कुछ देर वाद समझ पाता है कि वास्तव में वह कमरा देना चाहती है या और कुछ। अंततः, उसको अपने स्वेंसका किंडर गार्टेन के चीनी साथी तु-फ़ान की याद आती है।

वलराम को चाइना वाज़ार स्थित तु-फ़ान के 'चौप सुए' रेस्तराँ का रास्ता वतानेवाला कोई व्यक्ति नहीं मिलता। अंत में उसको दो चीनी वच्चे मिलते हैं जिसमें से छोटा वच्चा अपनी पतंग फट जाने के कारण ज़ोर-ज़ोर से रो रहा होता है : वलराम, उसकी फटी पतंग से एक नौका वना देता है और उसको सिंदूरी नौका का नाम देता है। वच्चे खुश हो जाते हैं और उसको तु-फ़ान के पास पहुँचा देते हैं जो उसको वताता है कि समाचार-पत्रों में छपी रपट के कारण उसका कोई संवंधी उसको शरण नहीं देगा। लेकिन वलराम को इससे चिंता नहीं होती क्योंकि वह जानता है कि अगले दिन प्रातः विश्वविद्यालय से उसको छात्रवृत्ति मिल जाएगी।

वलराम शीघ्र ही कलकत्ते में अपनी पढ़ाई शुरू कर देता है। उसे याद आता है कि संथाल पादरी जोह्न ने उसको लैटिन भाषा की पढ़ाई जारी रखने की सलाह दी थी, इसलिए वह लैटिन पढ़ने के लिए किसी उपयुक्त व्यक्ति की खोज करने लगता है। इस सिलसिले में उसके परिवार के पुराने शुभ-चिंतक प्रफुल्ल बाबू (डुप्ले कॉलिज, चंदननगर के प्राध्यापक) एक ऐंग्लो-इंडियन (युरेशियन) लड़की रोमा से उसका परिचय करा देते हैं। लेकिन जव वह छात्रावास में उसकी सहायता से पढ़ाई शुरू करता है तो अन्य विद्यार्थी विघ्न डालते हैं। वलराम ने

एक ऐंग्लो-इंडियन का साथ किया है, इसलिए विद्यार्थी उसका मखौल उड़ाने लगते हैं। उस युरेशियन लड़की के बचाव में बलराम भारतीय कला पर एक व्याख्यान का आयोजन करता है जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय कला पश्चिम के संपर्क से बहुत समृद्ध हुई है; वस्तुतः पूर्व-पश्चिम के संपर्क से भारत की कुछ श्रेष्ठ वस्तुओं का निर्माण हुआ है। लेकिन इससे विद्यार्थी और भी भड़क उठते हैं, और जब बलराम बदमाशों को सबक सिखाने के लिए अपनी आस्तीनें चढ़ा रहा होता है तब रोमा उससे रेइस भाग के गिरजाघर में मिलने का वायदा करके चली जाती है। एक लड़की से मिलने जाने की बात से बलराम स्वयं को अन्य विद्यार्थियों से श्रेष्ठ समझने लगता है। लेकिन रास्ते में सांप्रदायिक दंगे की उत्तेजित भीड़ से उसका सामना हो जाता है।

साम्प्रदायिक दंगा उसके लिए कोई सर्वथा नयी चीज़ नहीं होता। जब वह अपने बचपन में सिस्टर स्वेंस्का के किंडर गार्टेन काविद्यार्थी था तब उसने मृतकों और घायलों को रानी बबनी के महल से ले जाये जाते देखा था जिसका वर्णन 'ऐंड गज़ेल्स लीपिंग' (छौने की कुलांच) में हुआ है। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (बादलों का पालना) में जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता : संथाल, मुसलमान, ईसाई, हिंदू सभी जुताई अनुष्ठान में भाग लेते हैं और गाँव में सांप्रदायिक हिंसा नहीं होती। लेकिन जब वह ट्रेन पर सवार होने की तैयारी कर रहा था तभी उसकी समझ में आ गया था कि शहर में स्थिति इससे बिल्कुल अलग क़िस्म की है। इससे स्पष्ट है कि घोष शहरों और वहाँ के लोगों की 'प्रगति' की अवधारणा को पसंद नहीं करते, लेकिन रेलवे प्लेटफ़ार्म का उनका वर्णन उनके निजी अनुभव पर आधारित है :

"वर्द्धमान स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर पानी पिलानेवालों की बाँह पर 'हिंदू पानी' और 'मुसलमान पानी' की पट्टियाँ लगी हुई थीं। चाय बेचनेवालों की बाँहों पर भी 'हिंदू चाय' और 'मुसलमान चाय' की पट्टियाँ लगी हुई थीं। मुझे लगा कि समय बहुत आगे बढ़ चुका है और मुझे 'सिर्फ़ हिंदू के लिए' और 'मुसलमान के लिए' के साथ-साथ आधुनिक सभ्यता, बिजली और गैस आदि को अपनाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

इंडियन इंगलिश के किसी अन्य लेखक ने इस प्रकार का वर्णन नहीं किया है लेकिन कुछ दशक पहले तक रेलवे प्लेटफ़ार्म पर इस प्रकार का भेदभाव आम बात थी; उन दिनों का कोई भी व्यक्ति इसको सत्यापित कर सकता है।

वाचक रोमा से मिलने के लिए एक ऐसे दिन को निकलता है जिस दिन हिंदुओं की होली और मुसलमानों का मुहर्रम पर्व साथ-साथ मनाया जा रहा था। अपने भोलेपन में, बलराम इस अवकाश के दिन को 'विशेष रूप से शुभ' मानता है। वह सूनी सड़कों की ओर ध्यान नहीं देता और छात्रावास के अन्य विद्यार्थियों

से वोलचाल वंद रहने के कारण यह भी नहीं जानता कि साम्यवादी उस दिन सांप्रदायिक दंगा फैलाने पर उतारू हैं। एकाएक, वह दो उत्तेजित जन-समूहों के वीच पड़ जाता है जिसमें से एक में हिंदू और दूसरे में मुसलमान होते हैं और दोनों ही शस्त्रों से लैस हैं। इस विंदु पर पहुँच कर घोष एक लंवे पूर्व-दृश्य का चित्रण करते हैं जिसमें पूर्वकाल में वलराम के साम्यवादियों से संपर्क और साम्यवादियों के नेता चमचिक अधिकारी द्वारा वलराम को सोवियत कला की विशेषताएँ समझाए जाने का विवरण है। वलराम को सुभाषचंद्र वोस की याद आती है जिन्होंने विश्वविद्यालय में उसके द्वारा एक अप्रिय प्रस्ताव पेश किए जाने पर उसका वचाव किया था। इस विषयांतर से कथा-प्रवाह अनावश्यक रूप से अवरुद्ध होता है। घोष के सजीव वर्णन से दंगे की भयंकरता का सजीव चित्र उपस्थित हो जाता है :

"दोनों तरफ़ के लोग ऐसे थे जैसे वे आदमी न होकर भेड़िए हों···मुझे लगा कि वे भेड़ियों से कहीं अधिक भयंकर हैं। उनमें शिकारी जानवरों की भयंकरता और सरीसृपों की धूर्तता भरी हुई थी।...

"एकाएक मुझे स्पष्ट हुआ ये सभी लोग किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए सड़क पर नहीं निकल आए हैं। इनका उद्देश्य है दुनिया में सुधार करके लोगों में भाई-चारे की भावना भरना। इस उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिए ये लोगों के मुँह तोड़ देना चाहते हैं, उनके शरीर को कुचलकर लुगदी वना देना चाहते हैं, सिर पर प्रहार करके दिमाग़ वाहर निकाल लेना चाहते हैं, अपने हाथों आँखें निकाल लेना चाहते हैं, अंतड़ी निकाल लेना चाहते हैं, घर और मंदिर-मस्जिद जला देना चाहते हैं, चारों ओर सर्वनाश का दृश्य उपस्थित कर देना चाहते हैं।"

भीड़ जव नायक पर झपटने लगती है, तभी रोमा वहाँ आ जाती है और भीड़ के सामने उसको यह कहकर दुत्कारने लगती है कि वह नामर्द है, इसलिए उसको त्याग देना चाहता है। उसके हाव-भाव और उसके अश्लील शब्दों से दोनों तरफ़ के लोगों की हँसी फूट पड़ती है। "हास्य, मनुष्य को देवताओं से वरदान-स्वरूप प्राप्त होता है, भेड़ियों को नहीं : जिन लोगों में हँसने की शक्ति है, उनमें आपस में भाई का रिश्ता होता है, वे ईश्वर की संतान होते हैं।" रोमा की सूझवूझ से उस दिन स्थिति संभल जाती है, लेकिन वलराम को एक लंवे समय तक भयंकर सपने आते रहते हैं और वह रोमा के उस दिन की अश्लील हरकतों के कारण दुःखित होता रहता है। यदि दंगा भड़क उठता तो वलराम के साथ-साथ अन्य वहुत-से लोग मारे जाते। इस स्थिति से वचाने के लिए रोमा को धन्यवाद देने के वदले वह सोचता है, "उसने एक वेश्या जैसा वर्ताव किया।" मज़े की वात है कि वह वेश्याओं के वारे में कुछ नहीं जानता; जव उसकी प्रज्ञा जागृत होती है तव वह यह स्वीकार करता है।

उसका मित्र तु-फ़ान उससे कहता है कि यदि वह कलकत्ता के चित्तपुर जिले में स्थित मनसा देवी के मंदिर जाए तो उसको दुःस्वप्नों से मुक्ति मिल जाएगी। इसलिए प्रगति के पैरोकारों द्वारा मंदिर का 'आधुनिकीकरण' किए जाने के पहले ही वह वहाँ पहुँच जाता है। उसे यह देखकर दुःख होता है कि "एक और ऐतिहासिक स्थान नष्ट किया जा रहा है। वाद में मनसा देवी का यह मंदिर रानी नीलमणि की ज़मींदारी के दीपक की भाँति उसके लिए स्मरणीय वन जाता है।" घोष ने इस मंदिर के अद्वितीय वास्तु-शिल्प का विस्तार से वर्णन किया है। दीवारों पर चारों ओर चाँद सौदागर और मनसा देवी की कथा के प्रसंग उत्कीर्ण हैं। मंदिर की पुजारिन वताती है कि वाङ्ला कवि कंकन ने जव मनसा और चाँद सौदागर से संवंधित अपने महाकाव्य की रचना की थी उससे वहुत पहले ही ये भित्तिचित्र उत्कीर्ण किए जा चुके थे। मंदिर के पोखरे में वलराम एक सूँस को देखता है और उससे अच्छी दोस्ती कर लेता है। उसे यह जानकर दुःख होता है कि जातेर डोल पर्व के बाद उस सूँस को समुद्र में डाल दिया जाएगा। लेकिन मंदिर की वेदी-सेविका उसको वताती है कि पालतू सूँस के समुद्र में डाल दिए जाने का मतलव उससे हाथ धोना नहीं होता, नाव के सहारे तैरने की आदत पड़ जाने के बाद वह स्वयं अपनी जगह पर लौट आता है। वलराम उस सूँस को एक नौका में डालकर समुद्र में छोड़ आने का निर्णय करता है, जो सिंदूरी रंग में रँगी होती है। उस नौका का पर्व के मौक़े पर उपयोग किया जाता है, वह कभी वाद में काम में नहीं लायी जाती, इसलिए इतनी मज़वूत नहीं होती कि समुद्र में चलायी जा सके। लेकिन वार-वार मनसा मंदिर जाने और 'सिसी-मगर' से दोस्ती करने के वावजूद उसको दुःस्वप्न आते ही रहते हैं : ये सपने उसकी नारी-देह के प्रति अस्पष्ट मनः-स्थिति के परिचायक हैं। अपने सपनों में वह उन स्त्रियों को देखा करता है जिनसे पहले उसकी मुलाकात हो चुकी होती है। घोष की भाषा में उसकी पीड़ा इन शब्दों में व्यक्त होती है :

"···सपने में चंदननगर के गुमाश्ता महाशय मेरे सामने आ जाते। (मेरी दादी और चाची की मृत्यु के कुछ ही दिनों वाद उनकी मृत्यु हो गयी थी) लेकिन सपने में वह अपनी स्वाभाविक मुद्रा से नहीं हुआ करते थे, वल्कि उस तरह देखते होते जब वह मुझे चंदन पोखर से निकाले जाने पर देख रहे थे : वह दीदी माँ के पुस्तकालय के एक कोने में खड़े होते और उनके पैरों पर एक अधनंगी स्त्री झुकी होती जो अपने अस्त-व्यस्त वालों से अपना मुँह छिपाए होती। वह स्त्री कुछ-कुछ मेरी मम्मी माँ, रोमा और रंजकहीनता से ग्रस्त उस स्त्री की तरह दिखायी देती जिसे मैंने कलकत्ता पहुँचने के दिन देखा था। वह चित्तपुर जिले में स्थित कामदेव के स्वर्ण मंदिर की वेदी-रक्षिकाओं की तरह भी दिखायी देती थी।"

अपने वचपन में पोखरे में सिंदूरी नौका चलाते समय उसको जो मानसिक

आघात पहुँचा था उसकी याद वह नहीं भूल पाया था। उसके सपनों में साँप बार-बार दिखाई देते थे :

"मैंने देखा कि मैं सागर द्वीप के पास कहीं समुद्र में तैर रहा हूँ जिसकी लहरें ज़हरीले साँपों की कुंडलियों की तरह उठ रही हैं। पतले-पतले साँप; आकार में बहुत बड़े, जैसे बहुत लंबी-लंबी छिपकिलियाँ और लंबे शिकारी कुत्ते; लहरें मुझे भँवर में डाल लेना चाहती थीं, और मैं उनसे बचकर निकल जाना चाहता था; लेकिन मैं पुनः एक दूसरे भँवर की ओर बढ़ने लगा। मुझे लगा कि मैं पसीने से लथपथ हो रहा हूँ और मेरी साँस फूलने लगी है।"

अपने मन की बात समझने में असमर्थ और भयभीत लड़का प्रफुल्ल बाबू से सलाह माँगता है। जिस प्रकार 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में पंडित जी सेकंड मास्टर की विरोधी प्रकृति के दिखाए गए हैं, उसी प्रकार प्रफुल्ल बाबू 'टोपीवालों' (इस शब्द से कांग्रेस पार्टी के प्रति हल्के आक्षेप का आभास होता है) और साम्यवादियों के विपरीत चरित्र के दिखाए गए हैं। लगता है प्रफुल्ल बाबू के चरित्र का निर्माण उपन्यासकार के जीवनादर्शों को अभिव्यक्ति देने के लिए किया गया है। बलराम उनके विचारों से बहुत प्रभावित होता है : उदाहरणस्वरूप, प्रफुल्ल बाबू के अनुसार वास्तुकला का स्वरूप धर्म से निर्धारित होता है, और बलराम इसके समर्थन में उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्रफुल्ल बाबू किसी भी समस्या पर अप्रत्यक्ष रूप से विचार करने में माहिर हैं। जब बलराम उनसे अपने दुःस्वप्नों की चर्चा शुरू करता है तभी वह देखता है कि एक कौवे को अन्य कौवों ने अपनी चोंच की ठोकरों से मार डाला है जिससे उसका ध्यान बँट जाता है। प्रफुल्ल बाबू कहते हैं कि वह कलकत्ता के जीवन की समस्याओं को तभी समझ पाएगा जब वह यह जान लेगा कि कौवों ने उस कौवे को क्यों मार डाला ? बलराम अपने चीनी मित्र तु-फ़ान के पास जाता है जो उसको पागलपुर के ताल्लुकेदारों के महल में अवस्थित साँपों के गड्ढे की यात्रा करने की सलाह देता है। लेकिन इस यात्रा से बलराम के रोग में कोई सुधार नहीं होता। इसमें हास्यजनक घटनाएँ घटती हैं। यह प्रसंग अपने-आप में एक मनोरंजक कहानी बन गया है। बलराम जब साँपों के गड्ढे की यात्रा पर निकलता है तो उसके साथ एक पैकेट में कुछ नक़ली रत्न होते हैं जिसको उसने रोमा को उपहार में देने के लिए खरीदा होता है। रास्ते में उसकी मुलाकात एक दलाल से होती है जो उसको 'मदन आनंद मोदक' का एक पैकेट बेचने के लिए घेर लेता है। उससे मुक्ति पाने के लिए बलराम पैकेट खरीद लेता है। हड़बड़ी में बलराम रोमा को उपहारस्वरूप दिया जानेवाला पैकेट फेंक देता है और उसकी जगह रोमा को 'मदन आनंद मोदक' का पैकेट दे देता है जो सभी बीमारियों, विशेषतः गंजापन, दुर्बलता, स्मृतिभ्रंश, चक्कर आने, वातोन्माद, पुराने यौन रोगों, बाँझपन, परगमन, नामर्दी, स्त्रीकामोन्माद, मृत प्रसव और गर्भधारण की अचूक

दवा है।" निस्संदेह, यहाँ उपन्यासकार ने अतिशयोक्ति की है, लेकिन इन दिनों भी नीम-हकीमों द्वारा ऐसी तथाकथित दवाओं के विज्ञापन अक्सर प्रचारित किए जाते हैं। जब बलराम को यह पता चलता है कि अपनी हड़बड़ी में उसने कैसी भूल कर दी है, वह रोमा से पैकेट ले लेने की भरपूर कोशिश करता है लेकिन वह पैकेट लौटाने को राजी नहीं होती। ऐसी स्थिति में बलराम जहाँ कहीं भी जाता है, उसके मन में एक ही भाव होता है—"यह धरती मुझे निगल जाती तो अच्छा था।" लेकिन साँप उसकी रक्षा करते हैं। अचानक रोमा पैकेट को साँपों के गड्ढे में गिरा देती है जिसके लिए बलराम साँपों को धन्यवाद देता है—सुंदर धारियों वाले कई साँप पैकेट को 'निगल' जाते हैं। साँपों के प्रतिवाचक के दृष्टिकोण में इस प्रत्यावर्तन से हास्य की सृष्टि होती है।

मनसा और नदी-देवी गंगा के पर्व के दौरान पालतू सूँस सिसी-मगर को समुद्र में प्रवाहित किया जाना है। पर्व का अंत संध्या समय दीपित नौकाओं की दौड़ से होता है। सूँस को समुद्र में प्रवाहित करने का अनुष्ठान देखने के लिए बलराम रोमा, अपने मित्र मग फ़र्टाडो और मग की बहन अनिता को निमंत्रित करता है, लेकिन जब वह रोमा को एक क़सीदाकारी किया हुआ सुंदर दुपट्टा और कुछ नक़ली रत्नाभूषण उपहारस्वरूप देता है तो वह उसको चाँटा मारती है और उस पर अपना अपमान करने का अभियोग लगाती है। संयोगवश, उस समय मग फ़र्टाडो और अनिता वहाँ नहीं होते जिससे रोमा को यह शक़ होता है कि उनको इसलिए जान-बूझकर हटा दिया गया है कि वह रात को बलराम के साथ अकेली पड़ जाए। दुपट्टे और सूँस को देखकर वह और भी भड़क उठती है। बलराम नहीं समझ पाता कि उसके किस व्यवहार को रोमा ने अपना अपमान समझ लिया है। वह बलराम से पूछती है कि उसने ज़रदोजी किया हुआ गुलाब क्यों नहीं खरीदा और तेज़ी से चली जाती है। क्रुद्ध और उदास बलराम को मित्र मछुवारे तूफ़ान आने की चेतावनी देते हैं, लेकिन वह इस पर ध्यान न देकर सिंदूरी नौका में सूँस को प्रवाहित करने चला जाता है। वह पतवार फेंक देता है और नौका को निरुद्देश्य प्रवाहित होने के लिए छोड़ देता है—उसके पास दिशा-सूचक (कंपास) भी नहीं होता।

वाचक आत्म-नियंत्रण खो बैठता है। तूफ़ान आने ही वाला होता है और ऐसी स्थिति में वह गहरे सोच में पड़ जाता है, "जिन लोगों ने असत्य सिखाया, असत्य उपदेश दिए और स्वयं सदाचारी होने का ढोंग रचते हुए असत्य आचरण किया, जो स्वयं को सौंदर्य को नष्ट करने में असमर्थ पाकर सुंदर वस्तुओं को नष्ट करने पर तुल गए," उन लोगों से उसे घृणा हो जाती है। ऐसे लोगों के लिए इस मृत्यु-वेला में भी उसके मन में सिर्फ़ घृणा ही उपजती है। लेकिन, दंभ की इस मनोदशा में वह अधिक समय तक नहीं रह पाता, बिजली चमकने से उसके सामने किसी का

चेहरा कौंध जाता है, किसी ऐसे व्यक्ति का चेहरा जिसको उसने कष्ट पहुँचाया था। अब वह निर्भीक होकर लहरों से संघर्ष करने लगता है और तब तक संघर्ष करता रहता है जब तक धीरे-धीरे वह घटना उसके सामने सजीव नहीं हो उठती : वर्द्धमान शहर के महाजन टोली मुहल्ले में एक छोटा कुत्ता एक झरने में कूद पड़ा था जिसके चारों आरे सूँस पड़े हुए थे ! वह 'कोलेज हुजूर' के कहने पर उसके साथ वर्द्धमान की वेश्याओं के मुहल्ले में गया था। इस घटना का उल्लेख उपन्यास में पहले हो चुका है, लेकिन तब वाचक ने अपनी इस यात्रा के हास्यात्मक पक्ष को ही उजागर किया था। जब एक वेश्या उसको पान का बीड़ा पेश करती है तो वह यह सोचकर डर जाता है कि बीड़े में कोई मादक वस्तु मिली हो सकती है—वह कमरा इत्र से सुवासित होता है और उसमें मंद प्रकाश फैल रहा होता है। ऐसे में हमेशा खुले में रहने का अभ्यस्त होने के कारण उसका मन विद्रोह कर उठता है और वह बाहर भाग जाता है—सोने और चाँदी के तारों से बने उस गुलाब को लेकर जो वह उपहार देने के लिए लाया होता है। बाहर, एक झरने के पास, जिसके चारों ओर सूँसों की प्रतिमाएँ बनी होती हैं, उसकी मुलाकात एक सुंदर लड़की से होती है जो सीटी बजा रही होती है। जिन स्त्रियों के पास से वह भाग आया था उनके विपरीत लड़की के चेहरे पर रंग नहीं पुता होता है। उसको वह अपने हाथ में रखा गुलाब देता है। लड़की विरोध करती हुई कहती है कि वह उसको अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि अपने कुत्ते को बुलाने के लिए सीटी बजा रही थी। वाचक समझता है कि लड़की ने यह बात अपनी इज्ज़त बचाने के लिए कही है, और इसके लिए उसकी प्रशंसा करने के बाद उससे पूछ बैठता है, "अपने ग्राहकों को खुश करने के लिए तुम सामान्यतः कितने रुपये लेती हो ?" उसके पूछने पर लड़की को सदमा पहुँचता है। घोष जब उसके सदमे का चित्रण करते हैं तो इस घटना का हास्यात्मक पक्ष तिरोहित हो आता है :

"उसका मुखमंडल विवर्ण हो गया, और वह मुझ पर अपनी आँखें टिकाए धीरे-धीरे पीछे हट गयी जैसे अपने सामने किसी प्रेत को देखकर डर गयी हो। उसके होंठ हिले, लेकिन वह कुछ बोल नहीं पायी। उसने अपना मुँह ढकने के लिए अपने हाथ ऊपर उठाए जैसे वह अपने पर प्रहार से बचने की कोशिश कर रही हो। ऐसी स्थिति में उसके हाथ से मेरा गुलाब गिर पड़ा। उसकी आँखों में आँसू उमड़ आए।

उसने सिसकते हुए पूछा, "आपने मेरा ऐसा अपमान क्यों किया ?" क्या मैं आपको वेश्या दिखायी देती हूँ ?"

वाचक उस जगह से भाग गया था, लेकिन अब उस लड़की की याद आने पर उसे उस लड़की की याद आ जाती है जिसको उसने अपने आचरण से दुःखित किया था। लेकिन वह चेहरा उसके सामने स्पष्ट नहीं हो रहा था। ऐसे में एक दुर्गंधयुक्त

समुद्रकाक उस सिंदूरी नौका में शरण लेना चाह रहा था, क्योंकि अन्य समुद्रकाक उस पर हमला कर रहे थे। इससे उस युवा को यह स्पष्ट होता है कि प्रफुल्ल वावू के प्रांगण में कौवे ही कौवे पर क्यों हमला कर रहे थे—ईर्ष्या के वशीभूत होकर। कलकत्ता के लोग आपस में एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, और वाचक यह अनुभव करता है कि वह भी स्वयं ईर्ष्या से नहीं बच पाया है : उसे रोमा, उसकी लोक-प्रियता, उसके प्रशंसकों से ईर्ष्या होती है। और, एकाएक उसके सामने वह चेहरा उभर आता है जिसको उसने प्रताड़ित किया था, और जो तव से उसके मन में वसा हुआ था। यह रोमा का ही चेहरा था जिसको उसने एक दिन वर्द्धमान में प्रताड़ित किया था। बलराम को लगता है कि कोलेज हुजूर के साथ वेश्याओं के मुहल्ले में जाने की घटना उसको रोमा को वता देनी चाहिए थी। अव वह उसको पहचान गयी थी क्योंकि सूँस सिसी मगर ने उसको वर्दवान में सूँसों से घिरे झरने पर घटित दुःखद घटना की याद दिला दी थी। अव तक वलराम तूफ़ान में फँस गया होता है और उसको तूफ़ान की शक्ति और सौंदर्य का अनुभव होने लगता है। उपन्यास के चरमोत्कर्ष पर घोष की भाषा वड़ी प्रभावी है। क्रुद्ध लहरों से जव नौका टूटकर विखरने लगती है तव "अत्यंत कुरूप अत्यंत प्रिय सिसी-मगर" उसके नीचे आ जाता है। सिसी-मगर वलराम को वचाने के लिए आता है जिससे समुद्र के प्रति वाचक का दृष्टिकोण भी वदल गया है : लहरों पर सवार वलराम के लिए अव लहरें मृत्यु का नहीं, वल्कि, जीवन का संदेश देने लगती हैं। सूँस मनसा देवी को प्रिय है, यह नदियों की देवी गंगा का भी वाहन है और प्रेम के देवता कामदेव मकरध्वज का ध्वज-चिह्न है। तूफ़ान का शक्तिशाली वर्णन वलराम के विभिन्न अनुभवों का मिलन-स्थल वन गया है : कोलेज हुजूर के साथ वेश्यालय की यात्रा, दंगे की भीड़ से उसके जीवन की रक्षा करने के लिए रोमा द्वारा वेश्या का रूप धारण किए जाने के वाद उसके दुःस्वप्न, चंदननगर के उसके पुश्तैनी मकान के चंदन पोखर में सिंदूरी नौका में उसके ख़तरनाक संतरण, मनसा मंदिर की उसकी यात्रा जिसके दौरान सिसी-मगर से उसकी मित्रता हुई, प्रफुल्ल वावू से उसकी मुलाक़ात और कौवों द्वारा अपने ही साथी को चोंच की ठोकरों से मार डालने की घटना। उपन्यास के अंतिम पृष्ठ पर से रोमा से उसके पुनर्मिलन का वर्णन है जिससे एकाएक तनाव कम हो जाता है। रोमा से उसके शारीरिक संपर्क से प्रभाव वढ़ने की जगह कम होता है। भाषा घिसी-पिटी है : "मुझे पहली वार वह खुशी हासिल हुई जो किसी को भी जवानी के वीत जाने के वाद ही हासिल होती है, वह खुशी जो स्त्री का दिल जीत लेने और उसको अपना लेने पर होती है; यह सौभाग्य पुरुषार्थी व्यक्ति को ही प्राप्त होता है जो मुझे पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ था।" रोमा को वह भ्रमवश उमा समझ लेता है : "रोमा का आलिंगन करते समय मुझे यही लग रहा था कि मैं उमा की आराधना कर रहा हूँ।" इसका उल्लेख करने की

कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि पर्व के दौरान जब नृत्य में बलराम ने वसंत का अभिनय किया था तभी उसके आचरण से कलात्मक ढंग से इसका संकेत मिल चुका था। जब वलराम को पार्वती (उमा) का परिचय देने का संकेत मिलता है तो वह अपनी आंतरिक कामना के वशीभूत होकर स्वाभाविक रूप से दर्शकों के बीच रोमा को ढूँढ़ने लगता है, क्योंकि वह नहीं जानता होता कि वह कहाँ बैठी हुई है। इसके अतिरिक्त इस घटना से पहले वर्द्धमान की वेश्याओं के मुहल्ले में, जहाँ वह अपनी ज़िंदगी में सिर्फ़ एक बार गया होता है, रोमा से उसकी मुलाक़ात असंभाव्य लगती है।

जब सिसी-मगर वाचक की जान बचाता है तब चाँद सौदागर का स्मरण हो आता है जिसको मनसा द्वारा भेजे गए सूँस ने डूबने से बचाया था। समुद्र अप्सराओं का पालना है और सर्प-देवी मनसा समुद्र में ही वास करती है। मनसा उर्वरा शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है—भारतीय धर्मशास्त्रों में नाग (सर्प) भूमि की अज्ञात शक्तियों के प्रतीक माने गए हैं। घोष की आस्था तांत्रिक दर्शन में है जिसके अनुसार मनुष्य स्त्रियों के माध्यम से ही मुक्ति प्राप्त कर सकता है, दुनिया के सुखों को त्याग करके नहीं उनको भोगकर ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। मनसा के मिथक को महाभारत या पुराणों में प्रमुखता नहीं दी गयी है, यह प्रसंग बंगाल की अनेक मंगल-कथाओं में आता है। मनसा और बेहुला की कथा थोड़े-थोड़े अंतर के साथ कई रूपों में प्रचलित है। घोष ने कथा का वह रूप दिया है जिस रूप में कवि कंकन ने इसका वर्णन किया है। इस कथा में शिव के भक्त चाँद सौदागर को स्त्री की महानता का वोध होता है। इसमें अपनी बहू बेहुला की भक्ति से प्रभावित होकर वह स्वयं मनसा देवी का भक्त बन जाता है।

मनसा शिव की पुत्री है जिसकी उत्पत्ति उनके मस्तिष्क से हुई है, वह अप्सराओं की समर्थक हैं जिनकी कोई माँ नहीं होती। उनकी सहायता के लिए वह समुद्र में वास करने लगती है। उसकी कृपा से खेत और बाग़-बगीचे फूलने-फलने लगते हैं तथा गीत और नृत्य समृद्ध बनते हैं। चाँद सौदागर एक धनी सौदागर है जो बार-बार चेताये जाने पर भी मनसा का भक्त नहीं बनता। उसका माली उससे कहता है कि जब जहाज़ गंगा सागर (जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है) के पवित्र स्थल पर पहुँचे तो वह एक कमल वहाँ गिरा दे, लेकिन वह यह नहीं मानता। उसका जहाज़ तूफ़ान में टूट जाता है और शार्क मछलियों के झुंड में से एक मछली उस पर हमला करने आगे बढ़ती है। लेकिन, पास में ही एक कमल का पत्ता बह रहा होता है जिसमें वह झुंड के आगे चलनेवाली उस मछली को पकड़ लेता है। कमल-पत्र उसी मनसा देवी का प्रतीक है जिसकी अराधना करने से उसने इनकार कर दिया था—मनसा को 'पद्मा' भी कहा जाता है। वह समुद्र-तट पर सुरक्षित पहुँचकर अपनी रक्षा करने के लिए भगवान् शिव को धन्यवाद देता है। तभी वह मछली भी

उसको वही चेतावनी देती है जो उसको वार-वार दी जा चुकी थी और जिसे मानने से वह इनकार करता रहा था। मछली कहती है: "तुमको न संयोग ने वचाया है, न प्रकृति ने। अव भी तुम मेरी अराधना करो तो तुम्हारे अधिकार तुमको वापस दिला दूँगी।" इससे पहले दो वार—एक वार एक सुंदर लड़की के रूप में और दूसरी वार एक अप्सरा की आवाज़ में—मनसा देवी उसको चेतावनी दे चुकी थी, लेकिन चाँद पर इसका कोई असर नहीं पड़ा था। उसके सात वेटों में से समुद्र यात्रा पर निकले छह वेटे अपने जहाज़ों के साथ डूव जाते हैं। वचा हुआ वेटा लक्षमंदिर अपने विवाह के दिन मर जाता है। वहू वेहुला अपने पति को वचाने के लिए चाँद सौदागर से मनसा देवी की अराधना करने का अनुरोध करती है, क्योंकि उसके पति की मृत्यु साँप के काटने से हुई थी। लेकिन चाँद न सिर्फ़ इनकार करता है, वल्कि, उसको भी मनसा की पूजा करने से मनाकर देता है: "याद रखो, तुमने उसकी आराधना या महिमा-वखान का एक भी शव्द मुँह पर न लाने का वादा किया है।"

वेहुला एक वेड़ा वनाती है और उस पर अपने पति के शव के साथ वैठकर जातेर-डोल पहुँच जाती है। उसमें पातिव्रत्य की इतनी अधिक शक्ति होती है कि न तो वेड़ा नष्ट होता है, न शव में सड़ाँध आती है। समुद्र-तट पर वह अलौकिक शक्ति से संपन्न नेता धोविन को देखती है जो मनसा की सहेली है। वह वेहुला को मनसा देवी की अराधना करने की सलाह देती है, लेकिन वेहुला तो अपने ससुर से वचन-वद्ध है। नेता उसको मनसा देवी की पूजा करने की विभिन्न विधियों की जानकारी कराती है: शव्दों से प्रार्थना करना ही उसका आवाहन करने की एकमात्र विधि नहीं है। मनसा के मिथक में जो दर्शन निहित है, उसका उद्घाटन घोष इन शव्दों में करते हैं:

"क्या तुमने नृत्य करके उनकी आराधना की है? क्या तुमने मनसा के गीत गाए हैं? क्या तुमने मोद मनाकर उनको रिझाने की कोशिश की है? या जो लोग गाते और नृत्य करते हैं, उनकी सहायता की है? या किसी अन्य रूप में उनको प्रसन्न करने का प्रयास किया है? क्या तुमने स्वयं प्रसन्न रहकर दूसरों को प्रसन्न वनाया है? ये सभी मनसा-पूजा की विधियाँ हैं।"

छोटे-छोटे वाक्यों से यह पता चलता है कि घोष की शैली कितनी अधिक लचीली है, ज़रूरत पड़ने पर वह सरल शव्दों और छोटे वाक्यों का प्रयोग भी कर सकते हैं।

वेहुला वताती है कि वह नृत्य करना जानती है, और नेता उसको नृत्य करके मनसा की आराधना करने को कहती है; लेकिन वेहुला विधवा हो चुकी है, वह नृत्य करे तो कैसे करे? नेता कहती है, "यदि तुम्हारे नृत्य करने से तुम्हारा पति जीवित हो जाए तो क्या तुम नृत्य करोगी?" वेहुला के लयात्मक पद-चालन तथा

रमणीय भंगिमाओं के प्रभाव से चाँद की खोयी हुई संपत्ति उसको वापस मिल जाती है : उसके खेत और बाग़ एक बार पुनः लहलहा उठते हैं, और उसके मृत पुत्र दुगुने धनी होकर समुद्र से वापस लौट आते हैं। नेता बेहुला से कहती है कि वह अपने ससुर को बता दे कि यह सब कुछ मनसा देवी की कृपा से संभव हुआ है, और वह हमेशा उसकी रक्षा करती रही है। और चाँद को यह बता दिया जाता है कि उसने अपने सपनों पर ध्यान नहीं दिया, इसी कारण उसकी दुर्गति हुई थी। अस्तु···

"बोध न हो तो ज्ञान नहीं होता और ज्ञान न हो तो जीवन में परिपूर्णता नहीं आती। इसके अभाव में प्रज्ञा का उदय नहीं होता, पूजा सिर्फ़ अनुष्ठान बनकर रह जाती है। यद्यपि पूजा न करने की अपेक्षा अनुष्ठान ही कर लेना बेहतर है, देवताओं की इच्छा है कि चाँद सौदागर प्रज्ञा संपन्न पुजारी बने और प्रसन्न रहकर जीवन-यापन करे !"

घोष के सिर्फ़ इसी उपन्यास का नहीं, बल्कि, उनके चारों उपन्यास के केंद्र में यही दर्शन है : आनंद से परिपूर्ण जीवन सबसे उच्च कोटि की आराधना है।"

घोष के अन्य उपन्यासों की तरह यह उपन्यास भी तीन भागों में विभाजित है—'विहोल्ड द आइडल्स' (प्रतिमाओं को देखो), 'औफ़ सेंसुअस फ़ायर्स' (कामाग्नि) तथा 'एंड मेनी वाटर्स' (और अनेक जल-स्रोत)। के. आर. श्रीनिवास आयंगर ने इन भागों की तुलना नरक, पापमोचन (तीर्थ-स्थल) और स्वर्ग से की है। बलराम को उस घटना की याद आती है जब वह एक बार दावानल में घिर गया था और एक योगिनी ने उसकी रक्षा की थी—उसने सिर्फ़ यही कहा था, "एक दिन तुम जान जावोगे। लेकिन तब तक के लिए याद रखो कि आग जलाती है और जल शमित करता है।" 'द वरमिलियन बोट' (सिंदूरी नौका) में अनेक मिथक और दंत कथाएँ दी गयी हैं, लेकिन 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (बादलों का पालना) की तरह सावधानी से उनका एक-दूसरे में गुंफन नहीं किया गया है। 'द वरमिलियन बोट' (सिंदूरी नौका) की संरचना में कसाव का अभाव है और विषयांतरों तथा पूर्व-दृश्यों के कारण मुख्य कथा कभी-कभी पीछे पड़ जाती है। सिंदूरी नौका का प्रसंग बार-बार आने से वर्णन में एकता आती है : बलराम पहली बार ख़तरे में तब पड़ता है जब वह जोगिन-दा से प्राप्त एक सिंदूरी नौका पोखरे में खे रहा होता है, संध्या समय वह कलकत्ता चला आता है और चीनी बच्चों के खेलने के लिए एक सिंदूरी नौका बनाकर देने के कारण उसको रात बिताने के लिए आश्रय मिलता है, बच्चे उसके मित्र तु-फ़ान के रेस्तरां तक पहुँचा देते हैं, और उपन्यास के चरमोत्कर्ष पर वह एक वास्तविक सिंदूरी नौका में समुद्र में संतरण करता है।

यह उपन्यास अपने अनेक रोचक पात्रों के कारण उल्लेखनीय बन गया है।

प्रफुल्ल बाबू पाखंड को सहज ही समझ लेते हैं। वह विद्यार्थियों के मनोभावों को अच्छी तरह समझते हैं। जो समस्या कलकत्ता विश्वविद्यालय के बड़े-बड़े शिक्षाविदों को चक्कर में डाले हुए थी, उसको वह सुलझा लेते हैं: विश्वविद्यालय के सभी प्रश्नपत्रों का उत्तर एक ही हस्तलिपि में दिया गया है। प्रफुल्ल बाबू इसका वास्तविक कारण समझ जाते हैं: सभी विद्यार्थियों ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की हस्तलिपि की नक़ल की है। कोलेज हुजूर नाम का एक युवा जब भी अपने गाँव आता है कालेज के अपने अनुभवों की चर्चा करता है। 'कैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' (बादलों का पालना) में एक मनोरंजक विवरण है जिसमें वह एक ग्रामवासी को यह समझाने की कोशिश करता है कि बादल कैसे बनते हैं। ग्रामवासी, जब चट्टानों जैसे मेघ-खंडों की बात करता है तो वह विद्यार्थी अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करके उसको पक्षाभ मेघों के कई नाम—सिरस (पक्षाभ मेघ), क्युमुलस (कपासी), स्ट्रेटस (स्तरी), सिरो क्युमुलस (पक्षाभ कपासी) और सिरो—स्ट्रेटस (पक्षाभ स्तरी) (सिरो स्ट्रेटस) बताता है। इस पर ग्रामवासी की प्रतिक्रिया अत्यंत हास्योत्पादक है:

"वह चकित रह गया और कोलेज हुजूर के अपमानजनक शब्दों को भूलकर बादलों के इन विदेशी नामों को याद करने लगा। उसने इन नामों का उच्चारण करने की कोशिश की और उसको आश्चर्य हुआ कि कहीं वर्द्धमान का आकाश बिलकुल अलग क़िस्म का तो नहीं है। उसको लगा, वर्द्धमान एक विचित्र-सी जगह होगा···" उसको विश्वास हो जाता है कि उस युवा ने जो कुछ बताया है, वह वर्द्धमान के मामले में, न कि ग्रामीण आकाश के बारे में सच होगा। 'द वरमिलियन बोट' में कोलेज हुजूर वाचक के इने-गिने मित्रों में से एक है जो बलराम को यौन-क्रिया से परिचित कराने के लिए वेश्याओं के मुहल्ले में ले जाता है, लेकिन यह यात्रा असफल रह जाती है।

एक और पात्र है दुष्ट जोगिन-दा। वह प्रेम स्वामी का शिष्य है और उसके लिए "सोना और चाँदी का स्पर्श वर्जित है।" जब वह बलराम को बिचवैया बनाकर पूरे बंगाल की यात्रा पर अपने साथ ले जाता है तब उसकी कलई खुल जाती है। जोगिन के आसामी उसको नगद राशि देने से डरते थे, इसलिए नगद राशि की उगाही करने के लिए उसके लिए अपने साथ एक बिचवैया रखना ज़रूरी हो गया था, हुंडी या चेक तो वह स्वयं प्राप्त कर सकता था, क्योंकि धार्मिक रूप से उसके लिए सिर्फ़ सोना और चाँदी ही वर्जित था। प्रेम स्वामी और उसके शिष्यों के चरित्र-चित्रण में घोष ने धार्मिक पाखंड पर जमकर प्रहार किया है। उसके शिष्य सिर्फ़ भारत तक ही सीमित नहीं हैं, उनमें सांता बारबरा के अमेरिकी भी शामिल हैं:

"ये अमेरिकी सामान्य पर्यटकों से हटकर थे। उनके वस्त्रों में बटन नहीं लगे

थे : वे प्रेम स्वामी के शिष्य थे और स्वामी की ही तरह भोजन में मुख्यत: काष्ठफल और मक्खनी दूध ही लिया करते थे। उनके कलकत्ता आने का मुख्य उद्देश्य था गुरु प्रेम स्वामी का दर्शन करना···"

जिस प्रकार 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में ग़रीबी हटाओ के नारे के साथ राजनीतिज्ञ का चरित्र-चित्रण किया गया है, उसी प्रकार इस उपन्यास में घोष के भारत संबंधी गहरे ज्ञान और भविष्य का चित्रण करने की क्षमता पर आश्चर्य होता है। इसमें उन्होंने स्वामियों की चर्चा की है जिनके सचिव 1953 में—आचार्य रजनीश से बहुत पहले और महेश योगी से पारलौकिक ध्यान लगाना सीखने के लिए हालीवुड के अभिनेताओं के आने से लगभग बीस वर्ष पूर्व—अपने अमेरिकी शिष्यों को तार से आशीर्वाद भेजते हैं। प्रेम स्वामी का जीवन-दर्शन कलकत्ता के जीवनादर्श 'सबसे पहले प्रगति' से मिलता-जुलता है। उनका कहना है कि "जब कोई चीज़ पुरानी पड़कर टूट जाती है, तब हम उसको अनुपयोगी समझकर फेंक देते हैं और पुराने मंदिरों का "प्रवलित कंक्रीट से आधुनिक शैली में" पुनर्निर्माण करना चाहते हैं। प्रेम स्वामी के शिष्य पाखंड में उनको भी मात देते हैं। उदाहरणस्वरूप, करोड़पति हनुमान बंदर जो अपने को अत्यंत विनम्र व्यक्ति मानता है। तु-फ़ान बलराम से कहता है, "यदि तुम दर्जनों गुरखा चौकीदारों को किसी ऐसे व्यक्ति की पहरेदारी करते देखो जो गलियों में से गोबर के लोंदे उठा रहा हो तो समझ जाओ कि वह व्यक्ति या तो हनुमान बंदर है या उसके परिवार का कोई सदस्य। "वह अहिंसक सियामी मछलियाँ पालने पर बहुत अधिक धन खर्च करता है, एक ही पोखरे में पाली गयी इस प्रकार की दो मछलियाँ जब आपस में लड़ने लगती हैं तो वह घबरा उठता है। उसको जीव के अनूठेपन पर विश्वास नहीं है :

प्रेम स्वामी के अन्य शिष्यों की तरह हनुमान बंदर का विचार है कि किसी भी जीव की प्रकृति मुख्यत: उसके भोजन तथा प्रशिक्षण के अनुसार बनती है। वह तु-फ़ान से कहता है, "ब्रह्मचर्य तथा निरामिष भोजन के निश्चय ही आश्चर्यजनक परिणाम निकलेंगे। मुझे अन्य किसी चीज़ की अपेक्षा मछलियों के कल्याण की चिंता रहती है। लोग मुझसे मानव कल्याण के लिए धन माँगने आते हैं। लेकिन मैं उनसे कहता हूँ कि मनुष्य अपनी देखभाल स्वयं करने में समर्थ है, उसे अपनी देख-भाल करने दो। मुझे मानव-संपर्क से विकृत इन निरीह जीवों की ही चिंता रहती है।"

वास्तव में मछलियाँ अपने जोड़े से अलग पड़ जाने के कारण, जिससे उनको मैथुन का अवसर नहीं मिल पाता, और भी उग्र हो उठती हैं। हनुमान बंदर की इस विकृति से लाभ उठाकर तु-फ़ान स्वयं सियामी मछलियाँ पालने लगता है।

यह उपन्यास कलकत्ता के जीवन के चित्रण के कारण उल्लेखनीय बन गया

है। पुराणों में और महाभारत में विभिन्न पौराणिक स्थानों का आख्यानपरक इतिहास दिया गया है, जिनको स्थल-पुराण कहा जाता है। घोष ने कलकत्ता के स्थल-पुराण का विवरण प्रस्तुत किया है जो इतिहास और दंत-कथाओं का सम्मिश्रण है। कलकत्ता की स्थापना के समय जो अनुष्ठान संपन्न हुआ था, उसका उन्होंने ब्योरेवार विवरण दिया है। जब जॉब चार्नक बाइबिल की एक प्रति माँगता है तो उसको बाइबिल पास के फ्रांसीसी उपनिवेश चंदननगर के पालित परिवार के एक सदस्य से मिलती है, जो बलराम का पूर्वज होता है। यह घटना नाटक के किसी दृश्य की तरह पाठक की आँखों के आगे साकार हो उठती है—घोष ने इस दृश्य में रंग भरने के लिए पोशाक और ध्वज के डिजाइन आदि छोटी-छोटी बातों का भी ब्योरा प्रस्तुत किया है :

"यह घटना बस्ती बसने के 1690 वर्ष बाद घटी—अगस्त के महीने की सड़ी गर्मी में रविवार के दिन। तब तक चार्नक प्रायः भारतीय आचार-विचार अपना चुका था। मुगल सम्राट् के प्रतिनिधि शहज़ादा अज़ीम खान के अनुरोध पर उसने एक अंग्रेज़ की पोशाक पहनकर हुगली नदी के तट पर सेंट जॉर्ज का ध्वज फहराया।

"पास के नीम वृक्ष के नीचे कुछ लोग, जो वहाँ एकत्र हो गए थे, इस दृश्य को देख रहे थे। उनके अनुसार ध्वज-स्तंभ सुतानाती, गोविंदपुर और कालीघाट गाँवों से बराबर की दूरी पर गाड़ा गया था जिनको चार्नक की मालिक जौन कंपनी के लिए अर्जित कर लिया गया था। लोगों ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की। एक नये ध्वज-सेंट जार्ज का ध्वज जिस पर एक खिंची हुई कटार और क्रास अंकित था—के फहराये जाने से लोगों का मनोरंजन हो रहा था।

इस स्थापना समारोह के अवसर पर स्वस्त्ययन के लिए कोई पुरोहित वहाँ उपस्थित नहीं था। जौब चार्नक ने ही बाइबिल पाठ किया। यद्यपि उसके पास ही पूरी बाइबिल उपलब्ध थी, एक विचित्र संयोग से उसने समुद्र से प्यार की प्यास शांत नहीं की जा सकती; प्यार बाढ़ में डूब भी नहीं सकता, का ही पाठ किया।"

लोग चार्नक द्वारा उच्चरित इन शब्दों का संदर्भ "एक हृष्ट-पुष्ट हिंदू महिला से जोड़ते हैं जो कभी विधवा रही थी और अब चार्नक की नयी प्रेमिका है।" इससे यह दृश्य अत्यंत हास्यजनक बन जाता है। इस पर यदि कोई नहीं हँसता तो वह होता है चंदननगर का वह आदमी जिसको इस बात की चिंता सताती है कि यह नगर किसी दिन उसके नगर-फ्रांसीसी उपनिवेश चंदननगर का प्रतिद्वंद्वी बनकर उभर सकता है। उसके उकसाने पर वे इस नगर के लिए एक किरीट और एक महत्त्वाकांक्षी आदर्श वाक्य का चुनाव करते हैं। किरीट पर 'एक जाँघिल पक्षी अपनी चोंच में एक मछली' पकड़े होता है। जो आदर्श-वाक्य चुना जाता है उससे कुछ लोग तो 'सबसे पहले प्रगति' और कुछ लोग "मैं अपनी सामर्थ्य भर निगल

जाता हूँ" का अर्थ ग्रहण करते हैं। इस हास्यजनक उक्ति से घोष का आशय स्पष्ट है, लेकिन वह कभी भी अपनी ही बात का खंडन नहीं करते। वैसे, तो यह किरीट उनकी कल्पना की उड़ान मालूम होता है, लेकिन कलकत्ता नगरपालिका के किरीट पर मछली खाता हुआ जाँघिल अंकित है।

घोष के लिए प्रगति का अर्थ है, "मैं अपनी सामर्थ्य भर निगल जाता हूँ।" पुराने कलकत्ता का सौंदर्य लुप्त होने से वे दुःखी होते हैं :

"उस स्मरणीय रविवार के दिन से ही कलकत्ता निरंतर निगलता ही रहा है। पड़ोस के गाँवों, आकर्षक पल्लियों, बाग़-बगीचों को समेटकर इसका निरंतर विस्तार (प्रगति) होता रहा है। धार्मिक स्थल, छोटे छायादार जंगल, धान चुगने-वाले पक्षी और जंगली बत्तखों के आश्रय-स्थल, मैदान, सुंदर कमल-पोखर, बाँस के कुंज, अमराइयाँ और बंजर भूमि—ये सब ग़ायब होकर कलकत्ता के जबड़े में समाते जा रहे हैं।"

इस प्रकार के उद्धरणों में शैली पर घोष का अधिकार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है : प्रभाव उत्पन्न करने के लिए संतुलित तथा समान वाक्यांशों का प्रयोग किया गया है, "धार्मिक स्थल और पवित्र अमराइयाँ, बाँस के कोठ और पीपल वृक्षों के समूह।" कहीं-कहीं शब्दों के चुनाव से वाक्य-रचना में संतुलन लाने की उनकी इच्छा झलकती है : 'आकर्षक पल्लियाँ' से 'पड़ोसी गाँवों' की अपेक्षा कुछ अधिक का बोध नहीं होता, लेकिन यह शैलीगत बहुत बड़ा दोष नहीं है : उद्धरण का सौंदर्य इस दोष को बहुत कुछ ढँक लेता है। घोष शब्दों के प्रयोग के मामले में कितना अधिक संवेदनशील है, इसका प्रमाण है 'जबड़ा' शब्द का प्रयोग, जिससे पशु के मांस भक्षी होने का संकेत मिलता है। बुरी बात यह है कि प्रेम स्वामी जैसे लोग ही, जो भारत की पारंपरिक प्रज्ञा का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हैं, इन प्राचीन स्मारकों को बचाने पर ध्यान नहीं देते। गूलर के पेड़ पुराने मकानों की दीवारों में जड़ जमाते हैं और मकानों को नष्ट कर देते हैं, जिसका घोष ने शक्ति-शाली भाषा में वर्णन किया है। चार्नक द्वारा कलकत्ता की स्थापना से बहुत पहले पुर्तगालियों द्वारा निर्मित रेइस मागस का गिरजाघर इसी वृक्ष के कारण नष्ट हुआ।

घोष पुराने मकानों के प्रति आग्रही हैं, लेकिन इस उपन्यास में समकालीन कलकत्ता की झलक भी दिखायी गयी है। घोष के व्यंग्यात्मक वर्णन में अतिशयोक्ति का पुट है, लेकिन यह वास्तविकता पर आधारित है। बंगाल (अब बांग्ला देश) के फुटबॉल मैच ज़माने से दर्शकों की अव्यवस्था के लिए कुख्यात रहे हैं। 'द वरमिलियन वोट' में प्रफुल्ल बाबू बलराम के साथ कलकत्ता में एक फुटबॉल मैच देखने जाते हैं तो कहते हैं : "अब चलो, मैच ख़त्म होने से पहले ही हम यहाँ से निकल जाएँ, नहीं तो हम मार-पीट में पड़ जाएँगे।" बलराम को पता चलता है

कि "आधिकारिक मैच के खत्म हो जाने के वाद प्रतियोगी टीमें अक्सर एक दूसरा मैच—मारपीट—खेलती हैं। इन दिनों छोटी-छोटी वातों को लेकर हड़तालें और बंद आयोजित किए जाते हैं। बलराम जिस दिन कलकत्ता पहुंचता है, आम हड़ताल के कारण असहाय वन जाता है, किसी तरह वह अपने मित्र तु-फ़ान के पास पहुँच जाता है जो वताता है कि इस प्रकार की अव्यवस्था कोई नयी वात नहीं है :

"तु-फ़ान हँसकर वोला, "उत्तेजित होने की कोई वात नहीं है। सुनो और सीखो। कलकत्ता के नागरिक न्यायप्रिय हैं। वे किसी वात का सच्चा कारण जानने की चिंता नहीं करते। अभी पिछले ही दिन पेरिस में काम के वोझ से दवे कमीज़ निर्माताओं के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए चौवीस घंटे की आम हड़ताल हुई थी। एक बड़ी भीड़ ने फ्रांस के कौंसिल कार्यालय को लगभग जला डाला और चंदरनगर पर संगठित रूप से हमला करने की भी योजना वनी। तभी पता चला कि पेरिस में कमीज़ वनानेवाले कारखाने हैं ही नहीं। पिछले सोमवार को कनाडा के अल्प वेतनभोगी गोदी मज़दूरों के प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए आंशिक हड़ताल हुई। अव पता चला है कि कनाडा के गोदी मज़दूरों को विश्व में सवसे अधिक मज़दूरी मिलती है। परसों विश्वविद्यालय की परीक्षाओं का स्तर ऊपर उठाने के विरोध में आकस्मिक हड़ताल हुई थी।"

कालेज के छात्रावास के जीवन की झलक भी मिलती है जहाँ वाचक को सिर्फ़ इसीलिए सहन किया जाता है कि उसने अधिक संख्या में पुरस्कार जीते हैं। दो विद्यार्थियों की विशेष रूप से चर्चा की गयी है—मग फ़र्टाडो, जिसको कभी-कभी धार्मिक उफ़ान आता है, और गला फाड़कर चिल्लानेवाला दाउद वेनिसरेली जो हमेशा प्रफुल्ल वावू को नीचा दिखाने की कोशिश करता है। वहुत थोड़े-से विद्यार्थी अपनी वुद्धि का प्रयोग करते हैं, छात्राएँ सुभाष चंद्र वोस को अपना आदर्श मानती हैं, लेकिन उनमे सिद्धांतों और अनुशासनप्रियता को विलकुल नहीं समझ पातीं।

'दि वरमिलियन वोट', इंडियन इंगलिश का एकमात्र उपन्यास है जिसमें तत्कालीन फ्रांसीसी उपनिवेश चंदननगर के सौंदर्य और नैतिकता की चर्चा है—नैतिकता, जो आज के परिवर्तनशील विश्व में तेज़ी से तिरोहित होती जा रही है। 'द वरमिलियन वोट' और 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' की कथा-भूमि कलकत्ता है जिसमें वहाँ के दलालों, ग़रीवी और गंदगी की चर्चा के साथ-साथ कहीं-कहीं सौंदर्य की झलक भी मिलती है। इंडियन इंगलिश के किसी अन्य उपन्यासकार ने शायद ही किसी एक नगर विशेष के जीवन पर लिखा हो। आर. के. नारायण का माल-गुडी नगर काल्पनिक है यद्यपि इसका चित्रण यथार्थपरक है। रूथ प्रवेर झाववाला के उपन्यासों की कथा-भूमि दिल्ली है, लेकिन उनका विवेचन विलकुल अलग क़िस्म का है—उनकी रुचि आख्यानपरक इतिहास में न होकर उच्च वर्ग और मध्य वर्ग के नर-नारियों में है। उनके सभी उपन्यासों में कोई एक ही मुख्य पात्र नहीं है। घोष

ने एक परंपरा-प्रेमी, संवेदनशील नायक का चित्रण किया है जो किसी स्थान के आख्यानिक अतीत और वर्तमान को समान महत्त्व देता है। 'द वरमिलियन बोट' का कलकत्ता के जीवन के चित्रण की दृष्टि से जो महत्त्व है, वही महत्त्व है आफ़त में फँसे एक लड़के की मनोदशा के चित्रण की दृष्टि से। इसमें उनके चारों उपन्यासों के मुख्य मिथक-चाँद सौदागर और मनसा की कथा भी दी गयी है, जो यह संदेश देती है कि धार्मिकता और प्रसन्नता एक ही चीज़ के दो नाम हैं।

द फ्लम ऑफ द फॉरेस्ट

(पलाश)

लतिका ग्राम नाम का गाँव 'लालघाटी और नीली पहाड़ियाँ' में वलराम के अपने गाँव से थोड़ी दूर पर स्थित है। एक साल पलाश-वाटिकाएँ समय पर पुष्पित नहीं हुईं। उनमें फूल उगाने के लिए अनेक तरीके अपनाए गए, यहाँ तक कि सरकार की ओर से विशेषज्ञ भी भेजे गए, लेकिन इस दिशा में किए गए सभी प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए। इससे ग्रामवासियों के मन में यह भावना घर करने लगी कि इस कल्प का अंत हो रहा है। एकाएक, एक दिन वाटिकाएँ पुष्पित हो उठीं। उसी दिन एक बच्ची का जन्म हुआ जिसका नाम पलाश रख दिया गया, यद्यपि सभी लोग उसको मैना के नाम से जानते हैं। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में यही मैना जुताई अनुष्ठान के निर्णायक क्षण में वलराम को महेंद्र चांडाल नामक डंडा पकड़ाती है जिससे वह अनुष्ठान का मखौल उड़ानेवाले सेकेंड मास्टर को वहाँ से भगाता है और जो अनुष्ठान में कृष्ण की भूमिका निभाने के वावजूद कृष्ण के शत्रु काला यवन की वेशभूषा धारण किए हुआ था। वड़ी होने पर मैना कीर्तनी वन जाती है। उसे सांसारिक सुखों की चिंता नहीं रहती, उसका एकमात्र उद्देश्य हो जाता है स्वयं प्रसन्न रहना और दूसरों को प्रसन्न बनाना। एक गूढ़ अनुभव के वाद वह कृष्ण की पुजारिन बन जाती है। हिंदू शास्त्रों के अनुसार भक्ति पाँच प्रकार की होती है जिसमें सवसे अधिक कठिन है माधुर्य भाव की भक्ति करना। मैना इसी माधुर्य भाव से भक्ति करती है। माधुर्य भाव के भक्त ईश्वर को अपना प्रियतम मानते हैं। 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में मैना और वाचक के संवंधों की परिवर्तनशीलता का वर्णन किया गया है—'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' और 'द वरमिलियन वोट' में क्रमशः सेकेंड मास्टर और जोगिन-दा से उसके संवंध दिखाए गए हैं। जबकि इन दो उपन्यासों में इन दोनों दुष्टों के प्रति क्रमिक रूप में उसके मोह-भंग का वर्णन है, 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में धीरे-धीरे मैना में उसकी आस्था वढ़ती है। 'द वरमिलियन वोट' में अंत में रोमा से उसका मिलन इतने सहज रूप से होता है कि लगता है घोष नायक के आध्यात्मिक विकास का जो रूप प्रस्तुत करना चाहते हैं वह उभरकर सामने नहीं आता। उसमें रोमा स्वयं सुरक्षा चाहती है और नायक को अनिश्चय की स्थिति से उबारने के लिए मार्गदर्शन करने में सक्षम नहीं होती।

धनी दाउद वेनिसरेली उसको अपनी कार में लिफ्ट देता है और वह उसके साथ चली जाती है—नायक के साथ तो उसको सड़कों पर पैदल खाक छाननी पड़ती।

घोष के इस अंतिम उपन्यास में वलराम को लगता है कि अपनी बौद्धिकता से उसको कोई लाभ नहीं हुआ है। वह नौकरी ढूंढ़ने में अपनी असफलता की चर्चा करता है, अंत में वह 'न पास, न फ़ीस' के वादे पर चलायी जा रही एक कक्षा में विद्यार्थियों को पाठ रटा रहा होता है। जब एक नंबर, 'एक नंबर का शैतान,' उसके संरक्षक दीवान को घर में बंदी बना लेता है, तब सार्थक सामाजिक जीवन जीने की उसकी महत्त्वाकांक्षा बिखर जाती है। जब मैना की सहायता से वह भागने में सफल होता है तब उसको क़ैद करके उन दुष्टों में से एक दुष्ट के 'राजनीतिक अड़ियलों के लिए पुनर्शिक्षण शिविर' में भेज दिए जाने की नौबत आ चुकी होती है। उपन्यास में ये सभी चीज़ें प्रतिबिंबित होती हैं। विभिन्न अध्यायों में इस युवा के विभ्रमों का विवरण है। मुख्य मिथक जो इस उपन्यास में आता है वह है राजा नहुष का जिसको 'मात्रा' का ज्ञान नहीं रह गया था—'मात्रा' या अनुपात की अवधारणा ही उस उपन्यास का प्राण है। इसमें एक 'कल्प' (युग) का अंत होता है, और आनेवाले कल्प में, जिसका प्रतीक बनता है एक दुष्ट और धूर्त्त बौना, वाचक और उसके जीवन-मूल्यों के लिए कोई जगह नहीं रह जाती।

उपन्यास के प्रारंभ में वलराम की सड़कों पर गीत गानेवाले एक गायक और उसके साथ नृत्य करनेवाली एक लड़की से आकस्मिक रूप से मुलाक़ात होती है—ये दीवान के घर जाते समय फेरी लगानेवालों से उसको बचाते हैं जो उसको तंग कर रहे होते हैं। पहली नज़र में लड़की के बारे में उसकी कोई अच्छी राय नहीं बनती—"भड़कीले वस्त्र, नक़ली आभूषण और घुँघरू पहने हुए एक नाचनेवाली लड़की।" शीघ्र ही उसको यह मालूम हो जाता है कि लड़की न सिर्फ़ बहुत सुंदर है बल्कि एक कुशल गायिका और नर्तकी भी है। वे उसके दिए पैसे स्वीकार नहीं करते तो उसको आश्चर्य होता है। ये दोनों पेनहारी परगना के हैं और वह लड़की होती है मैना जो उस रात कालभैरव के मंदिर में अपने गीत सुनने के लिए उसको आमंत्रित करती है। मैना वलराम को दीवान की पत्नी को उपहारस्वरूप देने के लिए तुलसी की एक माला देती है। वलराम दीवान के घर में पिछले दरवाज़े से प्रवेश करता है, इस आशा के साथ कि इस प्रकार दीवान की पत्नी से उसकी मुलाक़ात हो जाएगी। इसके बदले वह एक मोटे आदमी को अपने साथ एक बड़ा बुलडॉग और कुछ गिरहबाज़ कबूतर लिए बैठा देखता है। मोटा आदमी उससे कहता है वह अपने साथ जो बिल्ली लाया है उससे उसको परेशान न करे। वलराम उससे यह कहने का प्रयत्न करता है कि वह अपने साथ कोई बिल्ली नहीं लाया, लेकिन अपने प्रयत्न में वह नाकाम रहता है। वह कबूतरों की खूबसूरत उड़ान देखने लगता है, उड़ान की खूबसूरती पर मोटा आदमी आत्मविस्मृत हो जाता है।

वलराम उसको तुलसी की माला देता है जिसे वह अपने दोनों हाथ जोड़कर भक्ति-भाव से ग्रहण करता है। वलराम यह समझता है कि वह मोटा आदमी अवश्य ही पागल होगा, इसलिए वह किसी तरह वचकर वहाँ से वाहर निकल जाना चाहता है, लेकिन वुलडॉग पिरम के कारण अपनी चेष्टा में सफल नहीं हो पाता। वह कुत्ते के ऊपर से फाँद जाता है, लेकिन इस वीच कुत्ता उसको प्यार करने लगता है और वलराम के पीछे लग जाता है। वलराम की वहाँ से भाग निकलने की कोशिश और छात्रावास में कुत्ते द्वारा किए जानेवाले शोरगुल का वर्णन इस उपन्यास के जिन परिच्छेदों में हुआ है वे अत्यंत हास्य-प्रेरक हैं। वलराम के इस कुत्ते को अपने कमरे में अपने साथ रखने के लिए तैयार हो जाने तक उसके पास कई लोग शिकायतें लेकर आने लगते हैं, जैसे "अपनी वर्दी पर मीनभक्षी तीन जाँघिलों का चिह्न लगाने-वाला कलकत्ता महानिगम का वह आदमी" जो उससे कुत्ता रखने का लाइसेंस दिखाने को कहता है। पिरम उस इंस्पेक्टर से वहुत आसानी से निवट लेता है। इंस्पेक्टर का "पतलून रखनेवाला आसन ग़ायव हो जाता है और उसके वस्ते में का सामान ज़मीन पर विखर जाता है।" कुत्ता छात्रावास की मुस्तैदी से चौकसी करता है जिसके कारण छात्रावास के लोग उसको वहुत पसंद करने लगते हैं, और एक वार जव वह गायव हो जाता है तो उसके लिए एक कुत्ता घर वनाने का निर्णय करते हैं। पहलवान गामा, जिसकी शुरू में तो उस कुत्ते से झड़प होती है लेकिन वाद में उसको प्यार करने लगता है, उसके ग़ायव हो जाने पर एक ज्योतिषी के पास जाना चाहता है। वलराम इस अवसर का लाभ उठाकर उसके साथ काल भैरव मंदिर में मैना का संगीत सुनने चला जाता है। वे चौरंगी के रास्ते जाते हैं जहाँ भिखमंगों को देखकर वलराम दुःखित हो जाता है। गामा उसको वताता है कि यहाँ भिखमंगों की जमघट तवसे शुरू हुई जव नंगल गिरि चौरंगी ने भिखमंगों को यहाँ यह सोचकर वुलाया कि इस प्रकार तीर्थयात्री उनको भिक्षा देकर पुण्य अर्जित कर सकेंगे। वह वताता है कि इन दिनों ये भिखमंगे यात्रियों को वहुत तंग करने लगे हैं, इसका कारण यह है कि भिक्षा-दान की यह प्रशंसनीय प्रथा 'मात्रा' से वहुत अधिक वढ़ गयी है। 'मात्रा' की अवधारणा की चर्चा दीवान के वेटे से संवंधित प्रसंग में भी आयी है—एक मकान से भयावने संगीत की आवाज़ सुनायी पड़ रही है जिसको वंद कराने के लिए एक राही वाचक से उस घर में एक ईंट फेंकने को कहता है। वलराम को पता चलता है कि मकान दीवान निशिकांत के वेटे का है जिसकी पत्नी ने एक मृत व्यक्ति को पुनर्जीवन देकर 'मात्रा' का अतिक्रमण किया था। ऐसे अनैतिक वेटे के कारण उसके माता-पिता को दुःख उठाना पड़ता है। घोष 'निशिर डाक' (रात की पुकार) अनुष्ठान की चर्चा विस्तार से करते हैं। इस अनुष्ठान द्वारा अस्तवल की रखवाली करनेवाले एक लड़के की आत्मा दीवान के मृतप्राय वेटे के शरीर में प्रविष्ट करा दी जाती है।

काल भैरव के मंदिर में वाचक की मैना से मुलाकात होती है जो गोपी-कृष्ण की प्रियतमा राधा की सखी की वेशभूषा में पहले से भी अधिक सुंदर दिखायी पड़ती है। एक फ़ोटोग्राफ़र बलराम को छेड़कर उससे कीर्तनी मैना से अपना परिचय करा देने का अनुरोध करता है; वह सज-धज से प्रकाशित होनेवाली एक अमेरिकी पत्रिका के लिए मैना से भेंट करना चाहता है। पत्रिका के अमेरिकी मालिक को भारत के शेक्सपिअर विशेषज्ञों ने सलाह दी थी कि भेंटकर्त्ता को भारतीय कलाकारों से "उसके लिए हेकुवा का क्या महत्त्व है या हेकुवा के लिए उसका क्या महत्त्व है कि वह उसके लिए रो रहा है" पर उनके विचार पूछने चाहिए। फ़ोटोग्राफ़र बताता है कि जिन भारतीय शेक्सपिअर विशेषज्ञों से सलाह माँगी गयी थी, उनमें फणिधर भी शामिल है। यह सुनकर बलराम का खून खौलने लगता है। बलराम इस नकली शिक्षाविद् से घृणा करता है, "अंग्रेज़ी साहित्य की अपनी प्रोफ़ेसरी के तीस वर्षों के दौरान इस आदमी ने शेक्सपियर से संबंधित किसी भी विषय या अंग्रेज़ी साहित्य पर एक भी प्रबंध नहीं लिखा है।" जिन विद्यार्थियों को बलराम पढ़ाता है, उनसे फणिधर विशेष रूप से नाराज़ रहता है। इसका कारण यह होता है कि बलराम ने शेक्सपिअर और कलकत्ता 'पर आयोजित एक प्रदर्शनी का उद्घाटन उससे करवाने से इनकार कर दिया था। उपन्यास के पहले भाग 'केव कनेम' (कनेम गुफा) के अंत में बलराम पत्रकार से फणिधर के बारे में अपने विचार प्रकट करता है। मैना जो गीत गाती है उसकी व्याख्या भी वह करता है जो उपन्यास के दूसरे भाग, 'लाइफ़-इन-टेक्निकलर' (चटकीला जीवन) में पाठकों के लाभार्थ की गयी है। इसमें पाश्चात्य पाठकों के लिए विनम्र शब्दों में राधा और कृष्ण के प्रतीक की व्याख्या भी कर दी गयी है—"राधा के रूप में मनुष्य की आत्मा ईश्वर से पुनः मिल जाना चाहती है—कृष्ण ईश्वर के प्रतीक हैं।"

दूसरे भाग, 'लाइफ़-इन-टेक्निकलर' (चटकीला जीवन) के प्रारंभ में वाचक ने फणिधर के संबंध में जो विचार प्रकट किए होते हैं, उसके लिए पत्रिका से एक बड़ी राशि का चेक प्राप्त होता है। पत्रिका ने उसके विचारों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रकाशित किया है। बलराम प्रतिदिन रात के समय कालभैरव के मंदिर में बाँसुरी पर मैना की संगत करता है। मैना ही उसको बताती है कि कुत्तेवाला आदमी और कोई न होकर स्वयं दीवान निशिकांत है। बलराम छात्रावास की रसोईदारिन पर विश्वास करके उसको बताता है कि वह मैना को कितना अधिक चाहने लगा है। "इस प्रकार वह एक भूल करता है, क्योंकि रसोईदारिन कुसुम की उम्र उससे दुगनी है और क़द में वह बलराम की आधी है। कुसुम के साथ उसके साहसिक कार्य उसी प्रकार हास्य उत्पन्न करते हैं जिस प्रकार पिरम के साथ उसकी साहसिकताएँ। मैना को बलराम के वश में कराने के लिए वह मेंढक की हड्डी लाती है, लेकिन दिक़्क़त तब उठ खड़ी होती है जब वह बलराम से कहती

है कि वह मैना पर उस हड्डी का प्रयोग करने से पहले उसी (कुसुम) पर उसका प्रयोग करके हड्डी की प्रभावशीलता की जाँच कर ले। उसके परामर्शदाता कोलेज हुजूर ने स्त्रियों से पीछा छुड़ाने का जो नुस्खा बताया था उसको अमल में लाने की बात वह सोचने लगता है :

"अत्यंत विनम्र भाव से बार-बार कहो, 'मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ।' तुमको कोई ऐसा व्यक्ति मिलना चाहिए जो वास्तव में तुम्हारे योग्य हो। मेरी छाती फटी जा रही है, क्योंकि मैं वास्तव में तुमको प्यार करता हूँ। इसके बावजूद मुझको तुम्हारे रास्ते से हट जाना चाहिए।"

उसको लगता है कि इस तरीक़े से काम नहीं चलेगा। अपनी आत्मा की आवाज़ सुनकर वह कुसुम से कहता है कि वह उसको अपनी माँ समझता है, लेकिन इसका भी कोई असर नहीं होता : "मैं किस प्रकार का खिलाड़ी—या किस प्रकार का प्रेमी—हूँ, इसकी परीक्षा करने पर वह तुल गयी है।" बलराम को इस स्थिति से उबरने की कोई राह नहीं सूझती। ऐसे में उसको मैना के जीवन-दर्शन, "किसी के प्रति अकारण निर्दय मत बनो" से राहत मिलती है, और वह समझ जाता है कि कुसुम का प्रस्ताव न मानना उसके साथ निर्दयता का ही बर्ताव करना होगा। घोष के लिए इस प्रकार हास्य उत्पन्न करना कुछ नया ही है, उनके किसी पूर्ववर्ती उपन्यास में इस प्रकार से हास्य नहीं उत्पन्न किया गया है।

बलराम दीवान का काम करने लगता है। मैना और विद्वान् दीवान से उसकी घनिष्ठता बढ़ जाने के कारण पारंपरिक प्रज्ञा के प्रति उसका संशय कम होने लगता है। ज्योतिषी जिन विपदाओं की भविष्यवाणी करते हैं उनसे बचने के लिए बंगाल में बड़ी-बड़ी रूढ़ियों लगाने की प्रथा है; इसके कारण भी उसकी समझ में आने लगते हैं। उपन्यास के दूसरे भाग के अंत में बलराम दीवान की स्थिति के प्रति सहानुभूतिशील हो जाता है। दीवान के मंत्रिमंडल का सदस्य होने का कारण यह नहीं होता कि वह एक पेशेवर राजनीतिज्ञ है, उसके मंत्रिमंडल का सदस्य होने का कारण यह है कि उसके प्रतिद्वंद्वी 'खादीवाले' और 'टोपीवाले' नहीं चाहते कि उनमें से कोई मंत्रिमंडल का सदस्य बनाया जाए। वयस्क मताधिकार होने के कारण दीवान जैसे सौम्य बुद्धिजीवी का निर्वाचन असंभव हो गया है (वह शंकु-गणित की एक बहुत अच्छी पुस्तक का लेखक है)। जनता उत्तेजना फैलानेवाले ग़ैर-ज़िम्मेवार लोगों को चुनती है। दीवान यह स्वीकार करता है सत्ता के मद में चूर मंत्रियों को 'मात्रा' का ज्ञान कराने के लिए ही वह मंत्रिमंडल में बना हुआ है, यद्यपि वह यह भी जानता है कि इसमें उसको सफलता नहीं मिलेगी।

तीसरे भाग, 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' (पलाश) के प्रारंभ में वाचक दीवान का अंशकालिक सचिव होता है। वह अपना अधिकतर काम विभिन्न पुस्तकालयों के पठन-कक्ष में बैठकर किया करता है, लेकिन दीवान के विशाल कक्ष में भी

उसको जगह मिलती है। घोष वहाँ के जीवन की विस्तार से चर्चा करते हैं, इस क्रम में उस जीवन-पद्धति की झलक मिलती है जो अब अतीत के गर्भ में विलीन हो चुकी है—दीवान के घर में प्रतिदिन दो सौ से भी अधिक लोग भोजन करते हैं। दीवान की पत्नी दीवान की बनारस-यात्रा के संबंध में चिंतित है, उसको पूर्वाभास होता है कि एक नंबर ने दीवान को विपत्ति में डाल दिया है। एक नंबर दीवान को उसके पद से हटाने के लिए अत्यंत क्रूर ढंग से षड्यंत्र करता है। अख़बारों में एक रपट प्रकाशित होती है: यह ख़बर कि नगर के दालमंडी मुहल्ले में कलकत्ता से आए दीवान पर कुछ गुंडों ने हमला किया, बिलकुल निराधार है।" मोटा दीवान दालमंडी की सीढ़ियाँ चढ़ने की बात तो अलग, किसी दूसरे व्यक्ति की मदद के बिना चल भी नहीं सकता। बलराम समझ जाता है कि एक नंबर ने यह रपट क्यों प्रकाशित करायी होगी। उसके सामने संवाददाता सम्मेलन का चित्र झलक उठता है, जिसमें एक नम्बर कह रहा होता है, "महोदयो ! मैं चाहता हूँ कि राज्य सरकारों में वही लोग आएँ जो ईमानदार हों, नैतिकता-संपन्न हों। मुझे अनिच्छापूर्वक दीवान से इस्तीफ़ा माँगना पड़ रहा है। जिन स्थितियों से बाध्य होकर मुझे यह क़दम उठाना पड़ा है उसके लिए मुझे बहुत दुःख है। आपको याद होगा कुछ दिनों पहले बनारस के दालमंडी मुहल्ले में एक घटना घटी थी, और मेरे अनुरोध पर अख़बारों ने इस समाचार को दबा दिया।"

लेकिन दीवान उदास नहीं होता, मैना उसको सांत्वना देती है। वह उसको पांडव भीमसेन की कथा सुनाती है। भीमसेन ने स्वर्ग में प्रवेश करने पर सबसे पहले दुर्भाग्य के देवता शनि को नमस्कार किया। कारण यह था, "जब मैं धरती पर था तो शनि की कृपा न होती तो मैं अपनी योग्यता सिद्ध नहीं कर पाता।" बलराम मैना, और उसके बार-बार समाधिस्थ हो जाने से भयभीत है जब उसका शरीर काँसे की प्रतिमा की तरह गर्म हो जाता है और वह स्वर्गिक सौंदर्य से दीप्त हो उठती है। वह उसके बुलावे पर नहीं जाना चाहता, यद्यपि वह जानता है कि उसका प्रस्ताव मानकर उसको आनंद प्राप्त होगा। छात्रावास में उसका सबसे अच्छा मित्र गामा पहलवान उसको बताता है कि उसकी यह विकृति उसके ख़ानदान और पेनहारी के राजाओं की मुद्रिका, जिसे वह पहने हुए है, पर अंकित उस आदर्श वाक्य के कारण है। यह आदर्श वाक्य है, "तुम टूट सकते हो, लेकिन मुझे झुका नहीं सकते।" एक बार मैना के चाचा लुकटाम के राजा उसको एक कीर्तन में आने का निमंत्रण देते हैं, लेकिन वह यह सोचकर नहीं जाता कि वहाँ जाकर उसको इनाम बाँटने पड़ेंगे। यहाँ बलराम के स्कूल के साथी तारकनाथ के चतरा-पाड़ा के महल में बलराम की बदक़िस्मती का एक मनोरंजक पूर्व-दृश्य है—स्नान करने जाने पर वह सिर्फ़ अपने को पेय-जल के जलाशय में तैरते हुए ही नहीं पाता (पुराने घरानों में पानी थाहने के संबंध में यही स्थिति थी), उसको तारकनाथ के

नौकरों को अपनी इस सप्ताहांत यात्रा के लिए इनाम के रूप में दो सौ रुपये भी बाँटने पड़ते हैं। बाद में उसको मैना के बुलावे पर न जाने का अफ़सोस होता हैं। मैना ने उसकी राह देखी थी, और लुकटाम के राजा वैसे नहीं हैं। वह किसी महल में नहीं, बल्कि, तीर्थयात्रियों के लिए बने प्राचीन धर्मशाला के एक कोने में रहते हैं। एक नंबर ने सरकार द्वारा विदेशों से बुलाए गए विशेषज्ञों के लिए दीवान का महल ज़बरदस्ती खाली करा लिया है। तब मैना उसको केदारनाथ बुलाती है। छात्रावास की रसोईदारिन कुसुम और गामा पहलवान उसको प्रोत्साहित करते हैं। 'लाइफ़-इन-टेक्निकलर' (चटकीला जीवन) का अमेरिकी प्रकाशक, सौस मिसकौन भी उसको प्रोत्साहित करता है—मिसकौन, जो एक टन भार के तंबू और तंबू के लिए फ़ोल्डिंग फ़र्नीचर सहित पर्वतारोहण के लिए आवश्यक सभी साज़-सामान खरीद लेता है। यह अमेरिकी प्रकाशक उपन्यासकार के व्यंग्य का पात्र बनता है, बलराम उससे यह कहना चाहता है कि यदि वह गया भी तो एक तीर्थयात्री की तरह नंगे पाँव जाएगा, लेकिन वह जान जाता है कि इस अमेरिकी को अपनी बात नहीं समझा पाएगा : "कलकत्ता में जिस तरह के अमेरिकियों से मेरी मुलाक़ात हुई, वे और मार्क्सवादी कुछ मामलों में ये दोनों एक समान हैं—ये स्वर्ण शक्ति-मापी तथा सांसारिक सुखों के पुजारी हैं।" तब मैना गिलानी से संदेश भेजती है, "जिस हाल में हो, उसी हाल में चले आवो।" यहाँ घोष एक लंबे विषयांतर में गिलानी के सौंदर्य और अलौकिक वातावरण का वर्णन करते हैं। नंदा देवी पहाड़ की तलहटी में बसे इस छोटे-से गाँव की मुख्य सड़क पत्थर के बड़ी-बड़ी पटियाओं से पाटी गयी है। मान्यता है कि इन पटियाओं के नीचे कन्नौज के राजा के दरबार के ब्राह्मणों की समाधियाँ हैं। यह दंत-कथा इस उपन्यास के आदर्श-वाक्य—सत्ता अहंकार को जन्म देती है जो 'मात्रा' का अतिक्रमण कर देती है—एक और उदाहरण प्रस्तुत करती है। एक बार कन्नौज के एक शक्तिशाली राजा ने देवी के मंदिर की पुजारिन सुंदरियों को अपने रनिवास में रखना चाहा। वह एक बड़ी सेना और अपना विवाह कराने के लिए ब्राह्मणों को लेकर वहाँ आया। ग्रामवासियों के समझाने के बावजूद वे ब्राह्मण राजा को पुजारिनों से ज़बरदस्ती विवाह करने से मना करने को राजी नहीं हुए। ग्रामवासियों से कहा गया कि यदि उन लोगों ने ब्राह्मणों को किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाया तो उनको मुख्य सड़क के नीचे दबा दिया जाएगा। राजा की सेना जब उस दुर्गम पहाड़ पर (वाचक की जीवन-कथा में भी चार्ल्स ऐंसथ्रु थर जैसे बुद्धिमान शुभचिंतक आधुनिक तानाशाह एक नंबर को रोकने के बदले उसको आशीष देते हैं) चढ़ने लगी तो ब्राह्मणों ने मंगल-पाठ भी किया। अगले दिन प्रातःकाल वहाँ राजा और उसकी सेना का नामोनिशान तक नहीं रह गया था। रह गया था सिर्फ़ हड्डियों का एक ढेर। ब्राह्मण भी मृत पड़े हुए थे, देवी के अदृश्य सेवकों ने उनके सिर धड़ से अलग

कर दिए थे। ग्रामवासियों ने उनकी समाधियों को पटियाओं से पाट दिया। उपन्यासकार ने गिलानी में मैना के गूढ़ अनुभवों का वर्णन किया है। पेनहारी के तीर्थयात्रियों का मार्गदर्शक किसी स्त्री की जान बचाने के लिए एक रीछ से भिड़कर मर गया था, इसलिए उसकी जगह मैना को मार्गदर्शक बना दिया जाता है। मैना तीर्थयात्रियों से अलग होकर एक जंगल में भटक जाती है जब उसके पास एक मृगछौना आ जाता है जिसे वह अपनी गोद में उठा लेती है। एक शेर मृगछौने पर झपटता है और इस क्रम में वह ज़मीन पर गिर पड़ती है। इसी बीच एक मृगी छौने को बचाने आती है और शेर उसको छोड़कर मृगी पर हमला कर देता है जिससे उसकी जान बच जाती है। ज़मीन पर पड़े-पड़े वह नंदा देवी की चोटी को देखती है तो आत्म-विस्मृत हो जाती है, आत्म-विस्मृति की स्थिति में अलौकिक संगीत और पक्षियों के कलरव से उसको लगता है कि "पुरुष प्रकृति के साथ मोद मना रहा है, और स्वयं उसने राधा की सहेली का रूप ले लिया है।" उसको अतीत और कल्पों के आवर्तन की अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। अपनी आत्म-विस्मृति से उसको यह शिक्षा मिलती है कि उसको सभी चीज़ों से प्रेम करना चाहिए, क्योंकि प्रेम अनेक प्रकार का होता है और उसकी 'मात्रा' भी अलग-अलग होती है। उसको यह शिक्षा भी मिलती है कि उसको अपना जीवन कीर्तन में अर्पित कर देना चाहिए। वह गहरी निद्रा की स्थिति में आ जाती है और कई दिन-रात के बाद जब जगती है तो उसमें बहुत परिवर्तन हो चुका होता है। वह कमलीवालों—एक प्रकार के साधु जो गिलानी के तीर्थयात्रियों की सहायता करते हैं—का साथ कर लेती है। जब बलराम उसके बुलावे पर नहीं आता तो वह एक और संदेश भेजती है, "बलराम, जिस हाल में हो, उसी हाल में चले आओ। आगा-पीछा करने की ज़रूरत नहीं है।" बलराम ने इसी प्रकार का एक तार 'चार्ली' को भेजा था, उसका जो परिणाम हुआ, उसके बारे में सोचकर वह काँप उठता है—"जिस हाल में हो, उसी हाल में चले आओ।" पादरी जोह्न ने बलराम को चार्ली का पता दिया था। चार्ली के साथ बलराम के अनुभवों का एक लंबे विषयांतर में वर्णन किया गया है।

डॉ. चार्ल्स ऐंसथ्रुथर, डी. डी. एल. एल. डी., कई वर्षों से भारत-वास कर रहे होते हैं। उनमें और गाँधी जी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नज़दीकी सहयोगी, चार्ल्स फ्रीअर ऐंड्रूज़ में बहुत-कुछ समानता है, लेकिन चार्ली में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिनका उल्लेख सी. एफ. ऐंड्रूज़ की किसी प्रामाणिक जीवनी में नहीं मिलता। ऐंड्रूज़ की ही तरह चार्ली भी दिल्ली स्थित मिशनरियों के एक स्कूल में अध्यापक बनकर भारत आए, और उन्हीं की तरह उन्होंने एक ऐसे उम्मीदवार के लिए प्रिंसिपल बनने से इनकार कर दिया जिसको वह अपने से उस पद के अधिक योग्य समझते थे। वह धर्मांतरण की अवधारणा पर पुनर्विचार करने लगते हैं, और

कहते हैं, "ईसा के बारे में मेरे विचार अधिकांश हिंदुओं के समान है : "वह ईश्वर के अवतार थे।" एक धर्म-प्रचारक के, जिस पर सेंट ऐंड्रूज़ और आक्सफ़ोर्ड के विश्वविद्यालयों को गर्व रहा था, इस प्रकार के विचार से चर्च के लोग स्वभावत: निराश हुए और उनको त्यागपत्र देना पड़ा। उन्होंने किसी प्रकार से अपने लिए कुछ बचाया नहीं होता, लेकिन उनको शांतिनिकेतन में आश्रय प्राप्त होता है। वह रवि बाबू के मित्र हैं और उन्होंने कलकत्ता के जूट मज़दूरों और नटाल के भारतीय मज़दूरों की माँगों का समर्थन किया होता है, इसलिए वह विद्यार्थियों के नेता बन जाते हैं।

मुक्त भाव से आने-जाने और सांसारिक सुख-सुविधाओं की चिंता करने के मामले में ऐंसथ्रुथर और मैना में समानता दिखायी देती है लेकिन घोष शीघ्र ही स्थिति को स्पष्ट कर देते हैं। ऐंसथ्रुथर स्वयं धनार्जन करने के प्रति उदासीन है—लेकिन अपने मेज़बान के खर्च की चिंता नहीं करता। मैना जहाँ कहीं भी जाती है, अपने गुज़ारे के लायक़ कमा लेती है : "यदि वह सीटी बजा दे तो चारों ओर से धन बरसने लगेगा।" लेकिन ऐंसथ्रुथर को बलराम के खर्च पर एक साथ तीन-तीन स्टेनोग्राफ़र रखने और लंबी दूरी के टेलीफ़ोन-संदेश भेजने में कोई हिचक नहीं होती, जबकि बलराम के लिए इतना खर्च बर्दाश्त करना कठिन होता है। बलराम शीघ्र ही यह समझ जाता है कि 'भारत के प्रति' चार्ली का "प्यार इंग्लैंड के प्रति उसकी घृणा" के कारण है और वह इतना सख़्त-दिल है कि "आत्मत्याग को सद्गुण की श्रेणी में रखता है।" चार्ली आत्मत्याग की कला में दक्षता का परिचय देता है। बलराम कहता है कि "इस मामले में वह अपने नायक गाँधी के समान है।" उसका आत्मत्याग उसके "संघनित (कंडेंस्ड) दूध, सैकरीन की गोलियों और ब्राजीलियन काष्ठफल के आहार के रूप में परिलक्षित होता है। वह बताता है कि वह चीनी इसलिए नहीं खाता "क्योंकि ग़रीब लोग चीनी खाने का खर्च नहीं बर्दाश्त कर सकते।" वह भारतीय परिस्थितियों से इतना अधिक अनभिज्ञ है कि नहीं जानता कि यहाँ संघनित दूध और सैकरीन की गोलियाँ अच्छी-से-अच्छी क़िस्म की चीनी और ताज़ा दूध की अपेक्षा कहीं अधिक महँगी पड़ती हैं। भारत के साधुओं की तरह उसके भोजन का प्रबंध अन्य लोग करते हैं, लेकिन लोग उसे जो चीज़ खाने के लिए देते हैं, उसी से वह तृप्त नहीं होता। इस प्रकार उसका आचरण साधुओं से बिलकुल अलग क़िस्म का होता है। और वाचक जानता है कि स्वयं वह भी दोष-मुक्त नहीं है, क्योंकि "एक साधु पुरुष, रवि ठाकुर के मित्र, भारत की आत्मा के व्याख्याकार, आदि" का आतिथ्य करने की संभावना से वह भी अभिमान से भर उठा था। बलराम उसको वहाँ से किसी अन्य नगर चले जाने का संकेत देता है, लेकिन वह उसकी बात नहीं मानता। वाचक जब उससे खुलकर कहता है कि वह (बलराम) उसके बनियों, स्टेनोग्राफ़रों और फ़ोटोग्राफ़रों के बिलों

की अदायगी करने में असमर्थ है तो वह सिर्फ़ हँसकर रह जाता है। उसके जेनेवा के लिए प्रस्थान करने तक बलराम अपनी बचत की पूरी राशि खर्च कर परेशानी की हालत में पहुँच चुका होता है।

इस बीच दीवान को अपने ही मकान में क़ैद कर लिया जाता है, जिसकी बेफ़िक्री पर बलराम चकित रह जाता है। अपनी स्थिति पर चिंतित होने के बदले दीवान गीता के श्लोकों के उद्धरण प्रस्तुत करता है और एक नंबर की इस कार्रवाई का स्वागत करता है क्योंकि इसकी बदौलत उसको सेवा-निवृत्त होने को मज़बूर होना पड़ा है जिसे वह अब तक टालता रहा था। वह सोचता है कि वह अतीत की वस्तु बन चुका है; नये युग में उसके जीवन-मूल्यों के लिए कोई जगह नहीं है और यह कि इसके विरुद्ध संघर्ष करना निरर्थक सिद्ध होगा। इससे भी बड़ी बात कि उसे अपने पर निर्भर दो सौ संबंधियों और पारिवारिक नौकरों की चिंता सताने लगती है : यदि इस राजनीतिज्ञ (एक नंबर) को चुनौती दी गयी तो ये सभी निराश्रय हो जायेंगे। बलराम निराश नहीं होता, वह जानता है कि एक नंबर को विदेशी समाचार-पत्रों की टिप्पणियों की चिंता रहती है, इसलिए उसके कुकृत्य का भंडाफोड़ करने के लिए वह चार्ली की सहायता प्राप्त करता है जो संवाददाता सम्मेलनों के आयोजन में माहिर है। चार्ली के कहने पर देर रात को जिनेवा टेलीफ़ोन करके बलराम उससे बात करता है और चार्ली उसको इस संबंध में दिल्ली के अधिकारियों से बात करने का वादा करता है। चार्ली, पूरे मामले पर एक नंबर से बात करके बलराम के आतिथ्य का ऋण चुकाता है। एक नंबर से बात करने का कारण यह होता है कि एक नंबर ईसाई है (कहने भर के लिए, अंतरात्मा से नहीं) और आक्सफ़ोर्ड के उसी कॉलेज का विद्यार्थी रह चुका होता है जिसमें चार्ली ने शिक्षा प्राप्त की थी। अंत में वह बलराम को बताता है कि यदि दीवान 'आदमक़द मिथुन प्रतिमाओं' को हटा दे तो एक नंबर उसको घर-क़ैद से मुक्त कर देगा। चार्ली ने उन प्रतिमाओं को स्वयं नहीं देखा होता, लेकिन एक नंबर उनके बारे में उसको जो बताता है उससे वह भी भड़क उठता है।

चार्ली इस बात को कोई महत्त्व नहीं देता कि दीवान के घर में इन प्रतिमाओं को पारिवारिक देवता का सम्मान प्राप्त है : सृष्टि-रचना की प्रतीक इन प्रतिमाओं को हटाना उसके लिए अपना धर्म-परिवर्तन करके ईसाई बन जाने के समान होगा। चार्ली इन प्रतिमाओं की प्रतीकात्मकता को नहीं समझना चाहता। वस्तुतः वह भारत की धर्मपरायणता के प्रति पूर्णतः संवेदनहीन है। यद्यपि उसको भाषाओं की अच्छी समझ है और वह आधा दर्जन युरोपीय भाषाएँ जानता है, वह हिंदी, बाङ्ला या संस्कृत का एक भी शब्द सीखने से इनकार कर देता है—इस कारण कि ऐसा करके वह उलझन में नहीं पड़ना चाहता। भारत आने के शीघ्र बाद उसने महाभारत का अनुवाद पढ़ने की कोशिश की थी, लेकिन उसमें 'बकवास'

भरा पड़ा है, यह समझकर छोड़ देता है, क्योंकि 'हिंदू धर्मशास्त्रों में' प्राकृतिक और लोकोत्तर, तथा अलौकिक, मानवीय और पशु-जीवों तथा वानस्पतिक और निर्जीव पदार्थों की सीमाएँ अस्पष्ट तथा अपरिभाषित हैं।" जब बलराम उससे दीवान की प्रतिमाओं की व्याख्या करने की कोशिश करता है तो वह मुँहतोड़ उत्तर देता है, "संस्कृत कवियों की उक्तियों के आधार पर अश्लीलता का औचित्य सिद्ध करना दुष्टता का परिचय देना है।" इस प्रतिष्ठित ब्रिटेनवासी की अनुदारता पर दुख होता है जो हिंदुओं के स्वभाव को समझने में असमर्थ है। बलराम का भ्रम दूर हो जाता है और वह यह कह कर अलग हो जाता है कि "दीवान एक अच्छा आदमी है, लेकिन उसने कभी भी आक्सफ़ोर्ड या सेंट ऐंड्रूज़ में शिक्षा प्राप्त नहीं की।"

चार्ली से अंतिम बार बात करके बलराम जब टेलीफ़ोन बूथ से लौट रहा होता है तो उसकी संजय दत्त से मुलाक़ात होती है, जो विश्वविद्यालय की फुटबॉल टीम में, जिसका बलराम खिलाड़ी था, ताली बजानेवालों में सबसे आगे रहा करता था। संजय अब खुफ़िया विभाग में है और बलराम को बताता है कि उसके कमरे की तलाशी ली जा रही है, और अब वह क़ैद किया जाने वाला है, क्योंकि चार्ली के साथ उसकी टेलीफ़ोन वार्ता की प्रतिलिपि एक नंबर के पास है। वह बताता है कि मैना ने उसको कलकत्ता छोड़कर अपने पास चले आने को कहा है और उसकी यात्रा के लिए प्रबंध किया जा चुका है। संजय बलराम को स्टीमर का एक टिकट और तुलसी की एक माला देता है जिसे वह सिर नवाकर स्वीकार कर लेता है—ठीक उसी तरह उपन्यास के प्रारंभ में दीवान ने सिर नवाकर अपनी अंजुरी में माला ग्रहण की थी।

घोष ने एक नंबर के चरित्र चित्रण के सिलसिले में नहुष के मिथक का उल्लेख कर उसको कुकर्मों की प्रतिमूर्ति बना दिया है। नहुष की कथा महाभारत में, और कुछ पुराणों, विशेषतः भगवद्पुराण, में आती है। घोष नहुष की कथा के उस अंश का उल्लेख नहीं करते जो उस अत्याचारी के राजनीतिक जीवन से मेल नहीं खाते, जैसे इंद्र की पत्नी शची के प्रति नहुष की आसक्ति। पूरा-का-पूरा दुष्ट एक नंबर निर्वाचित होकर सत्ता प्राप्त करता है। बलराम उसको उसी समय से जानता है जब वह शांतिनिकेतन में था और वहाँ के युवकों और युवतियों के मामले में दस्तंदाज़ी करने के कारण वहाँ से उसको निकाल दिया गया था। महाभारत का नहुष एक शक्तिशाली राजा है जो अपनी मोहन दृष्टि से सभी जीवों को अपने वश में कर लिया करता है, एक वक्ता और लोकप्रिय नेता के रूप में एक नंबर भी सबको सम्मोहित कर लेता है। इस कथा को दुहराने के सिलसिले में घोष लोगों की उस मनःस्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं जिसके वश में होकर वे साधुओं के प्रति भी दुर्व्यवहार सहनकर लेते हैं: इसके बावजूद जनता ने उसके विरुद्ध

विद्रोह नहीं किया क्योंकि उसने मधुर शब्दों और अपनी मोहन दृष्टि का प्रयोग किया—इसलिए भी कि जो लोग कभी सौभाग्यशाली समझे जाते थे, उनका निरादर किया जाना जनता को अच्छा लगा।

नहुष ने सात ऋषियों को अपने रथ में जोतकर 'मात्रा' का अतिक्रमण किया। उसका पतन तब हुआ जब उसे उसमें से एक ऋषि, अगस्त्य ने उसका अनुचित आदेश मानने से इनकार कर दिया। ऋषि के प्रति कठोर व्यवहार करने के कारण नहुष को साँप का रूप धारण करना पड़ा। लेकिन, एक नंबर को उसके कुकर्मों का फल मिले, इससे पहले ही उपन्यास का अंत आ जाता है।

अनेक विषयांतरों के कारण, 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' के गठन में बहुत ढीलापन आ गया है। किसी एक शब्द या वाक्यांश मात्र का प्रयोग ऐसा विषयांतर उपस्थित कर देता है जिसकी मूल कथा से बहुत झीनी समानता होती है, जैसे बनारस का वर्णन। बहुरूपी द्वारा कही गयी कथा जैसे कुछ विषयांतर सार्थक हैं, क्योंकि इससे कलकत्ता में व्याप्त संशय के वातावरण को अभिव्यक्ति मिलती है। वह एक शेर की पूँछ मरोड़े जाने से संबंधित एक सरल बाल-कथा कहता है, लेकिन दर्शक इसको अन्योक्तिपरक समझते हैं। कुछ विषयांतरों से उपयोगी जानकारी मिलती है। ऐसे विषयांतर हैं, 'एक नंबर' के प्रारंभिक जीवन का वर्णन या गिलानी में मैना की समाधि। कुछ विषयांतर स्थल-पुराणों जैसे हैं, जैसे ओमीचंद के मीनार की कथा (जहाँ बुलडॉग पिरम द्वारा पीछा किए जाने पर बलराम शरण लेता है) या चौरंगी की कथा। 'मात्रा' की अवधारणा से उपन्यास में लयबद्धता आती है। विभिन्न युगों के कई लोग बार-बार विभिन्न स्थितियों में सभी सीमाएँ तोड़कर, 'मात्रा' की अवधारणा का अतिक्रमण करते रहे हैं : महाभारत का नहुष साँप का रूप धारण कर लेता है, कन्नौज का राजा जिसके ब्राह्मण गिलानी की मुख्य सड़क के नीचे दब जाते हैं, कलकत्ता महानिगम के सदस्य जो चौरंगी के राहगीरों को तंग करनेवाले भिखमंगों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करते, दीवान की पहली पत्नी जो अपने मृत पुत्र को जिला देती है, और चार्ली जो अपने मेज़बानों के के धैर्य की परीक्षा लेता है। तुलसी की माला के दिए जाने और ग्रहण किए जाने की घटनाएँ उपन्यास के गठन को आवर्ती स्वरूप प्रदान करती हैं। प्रारंभ में वाचक दीवान को माला देता है जो उसे भक्तिभाव से ग्रहण करता है। उपन्यास के अंत तक पहुँचते-पहुँचते वाचक इतना अधिक धर्मपरायण हो चुका होता है कि पूरे भक्ति-भाव से संजय की माला स्वीकार करता है।

'द वरमिलियन बोट' की तरह इस उपन्यास में भी कलकत्ता के जीवन की अनेक झलकियाँ हैं। नीरद चंद्र चौधुरी की 'द ऑटोबायोग्राफ़ी ऑफ़ ऐन अननोन इंडियन' (एक अज्ञात भारतवासी की आत्मकथा) से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि घोष के विवरण नगर के जीवन की वास्तविकता पर आधारित है।

चौधुरी की कृति और घोष की कृति में वहुत-कुछ समानता है, जिसके कारण प्रारंभ में अनेक समीक्षकों ने इसको आत्मकथा की संज्ञा दी। चौधुरी की कृति चार भागों में है जिसमें उनके प्रारंभिक जीवन, पूर्व वंगाल के एक छोटे शहर में उनके विद्यार्थी जीवन सहित पहले वारह वर्षों, कलकत्ता में उनकी साहसिकताओं का विवरण है—इससे घोष के इन उपन्यासों की याद आती है जिनकी संरचना भी इसी प्रकार की है। चौधुरी की आत्मकथा और घोष के उपन्यास लगभग एक साथ प्रकाशित हुए और उनमें कलकत्ता के जीवन के चित्र एक ही प्रकार के हैं: कबूतर उड़ाने का शौक, धनी लोग झुंड-के-झुंड कवूतर पालते हैं जिनकी उड़ान से संध्या का आकाश खूवसूरत बन आता है, वंगाल के पुष्पित वृक्ष, लाड़ले वच्चों के गालीनुमा नाम और इस विचित्र प्रथा के पक्ष में मनोवैज्ञानिक व्याख्या, कलकत्ता के समाचार-पत्र जिनको दोनों लेखक 'हिक्की के जारज' की संज्ञा देते हैं (कलकत्ता से पहला समाचार-पत्र हिक्की ने प्रकाशित किया था, लेकिन इसमें वस्तुपरक समाचारों की अपेक्षा निंदापरक समाचार अधिक प्रकाशित होते थे)। दोनों लेखकों की कृतियों में अवसर-वादी राजनीतिज्ञों के प्रति अविश्वास का भाव है, लेकिन उनके दृष्टिकोण में अंतर है: चौधुरी तथ्यात्मकता है और वे पूर्णतः वौद्धिक हैं। घोष यद्यपि तथ्यों को नज़रअंदाज़ नहीं करते, उनके विवरण में काव्यत्मकता है और चौधुरी की तरह उनमें धार्मिकता और अतार्किकता के प्रति अविश्वास का भाव नहीं है। यह अंतर दोनों लेखकों के मनसा की कथा के प्रस्तुतिकरण से स्पष्ट होता है, चौधुरी को चाँद सौदागर की परीक्षाएँ 'अत्यंत अनुचित, अस्वाभाविक तथा लगभग ईशनिंदात्मक' मालूम होती हैं जिससे 'सर्प देवी को नफ़रत हुई'। यह अंतर दोनों लेखकों की भाषा से भी स्पष्ट होता है: नीरद चौधुरी की भाषा वोझिल है और उससे पांडित्य-प्रदर्शन झलकता है जो घोष के काव्यात्मक विवरणों के स्तर को स्पर्श नहीं कर पाती।

'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में दीवान, चार्ली, पहलवान गामा, जो छात्रावास में वाचक के लिए अदायगी करता है, और कुसुम जैसे कुछ सुगठित पात्र हैं। कुसुम अच्छा भोजन नहीं बना पाती, लेकिन उसको छात्रावास में उसकी भोजन तैयार करने में कुशलता के कारण नहीं रखा जाता, वह छात्रावास में इसलिए रखी जाती है कि उसके साथ रहकर छात्रावास के युवाओं का मनोरंजन होता है। वुलडॉग पिरम भी स्मरणीय है। उपन्यास में कुछ ऐसे पात्र भी हैं जो घोष के पूर्ववर्ती उपन्यासों में भी आ चुके हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास अपने आप में उतना स्वतंत्र नहीं है जितना कि घोष के पूर्ववर्ती उपन्यास जिनको अलग से भी पढ़ा जा सकता है। यदि कोई पाठक पूर्ववर्ती तीन उपन्यासों पर ध्यान न रखकर 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' को अलग करके पढ़े तो वह सनकी किस्म के संथाल पादरी जोह्न से थोड़ा चकित हो सकता है, जो 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' का एक मुख्य पात्र होता है।

कोलेज हुज़ूर से पाठक का परिचय सबसे पहले 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में होता है जब वह बेकार क़िस्म की इतनी अधिक सूचनाएँ देता है कि यह स्पष्ट हो जाता है कि इस पाश्चात्य-शिक्षा प्राप्त भारतीय में बुद्धिमत्ता का अभाव है। 'द वर-मिलियन वोट' में वह बलराम के विद्यार्थी जीवन में उसकी सहायता करता है, और अब विदेशी विश्वविद्यालयों की अनेक डिग्रियाँ प्राप्त करके कलकत्ता के सांख्यिकी कार्यालय में काम करता है। मैना बलराम की जो आलोचनाएँ करती है उसको पूरी तरह समझने के लिए पूर्ववर्ती उपन्यासों को पढ़ना ज़रूरी है, "तुमने इतना अधिक सांसारिक ज्ञान अर्जित कर लिया है कि तुमसे डर लगता है। तुमने अपने नायक कोलेज हुज़ूर को भी मात दे दी है।" 'द वरमिलियन वोट' पढ़े बिना हम यह नहीं समझ सकते कि दाउद बेनिसरेली द्वारा रोमा को लिफ़्ट दिए जाने और रोमा द्वारा उसका लिफ़्ट स्वीकार किए जाने का बलराम पर इतना अधिक बुरा प्रभाव क्यों पड़ा ?

बलराम जब कलकत्ता छोड़कर पुर्तगाली स्टीमर पर जा रहा होता है तब कलकत्ता के जीवन पर विचार करता है। उसका यह निष्कर्ष सिर्फ़ इस उपन्यास का ही नहीं, बल्कि पूरे उपन्यास चतुष्टय का निष्कर्ष है। बलराम मैना, चार्ली और पादरी जोहन के बारे में सोचता है और एकांगी प्रेम से संबंधित एक पुर्तगाली गीत सुनता है जिससे उसमें रोमा की स्मृति सजीव हो उठती है। उद्विग्नता की स्थिति में बलराम नोआ गाँव बंदरगाह पर महामानव का मंदिर देखने के लिए स्टीमर से उतर जाता है। एक जात्रा (पारंपरिक नृत्य-रूपक) का प्रदर्शन हो रहा होता है जिसमें एक नर्तकी मुखौटा पहने हुए होती है। वह बलराम को फटकारती है, "समय आने पर ही तुम समझ पाओगे। हमेशा जल्दी में रहते हो। तुम्हारे 'मात्रा' ज्ञान का क्या हुआ ?" वस्तुतः यह नर्तकी और कोई न होकर मैना होती है जो उसको याद कराती है कि उसका नाम बलराम के नाम पर पड़ा है जिसने पड़ोस में युद्ध चलते होने के बावजूद अपना खेत जोतना जारी रखा। अंत में वाचक अपने भीतर कुछ परिवर्तन का अनुभव करता है। वाचक उन लोगों का हमेशा विरोध करता रहा होता है जो आत्म परीक्षण न करके हमेशा भारत को आधुनिक बनाने, 'रूस और अमेरिका का प्रतिद्वंद्वी बनाने' की बात करते हैं—चार्ली जैसे लोग जिनकी रुचि सिर्फ़ 'व्यावहारिक कार्य' में रही है। उसको अनुभव होता है कि मैना का बुलावा स्वीकार न करके वह स्वयं भी 'विश्व को अच्छा बनानेवाले' इन लोगों की कोटि में ही शामिल हो रहा है। उपन्यास के अंत में नायक अपनी बाँसुरी उठाकर मैना के साथ चल देता है। पाश्चात्य प्रभाव से बिलकुल दूर रहकर वह जिस प्रकार मैना का संगी बनता है, उससे संकेत मिलता है कि वह अपनी परंपराओं का पालन करके ही मुक्ति प्राप्त कर सकेगा। रोमा का त्याग कराने का यह अर्थ

ग्रहण किया जा सकता है कि पूर्व और पश्चिम का मिलन उसकी एक हद तक ही मदद कर सकता है। हम नहीं जान पाते कि मैना के मार्ग-प्रदर्शन में 'प्रज्ञा के अन्य रूपों' को समझने में कितना समय लगता हैं। वह स्वयं भी नहीं जानती। कहती है, 'हो सकता है, एक वर्ष। हो सकता है अगले जीवन में।'

अन्य कृतियाँ

उपन्यासों के अतिरिक्त घोष ने कुछ शास्त्रीय कृतियाँ तथा परी-कथाओं के तीन संग्रह प्रकाशित किए। उनकी पहली पुस्तक 'कलर्स ऑफ़ एक ग्रेट सिटी : टू प्लेलेट्स' (एक महान् नगर के रंग : दो नाटिकाएँ) 1924 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में 'द डिफॉल्टर्स' (ग़बनकार) और 'एंड पिप्पा डांसेज़' (और पिप्पा नृत्य) नामक दो नाटिकाएँ दी गयी हैं। अंत तक इनकी यही दो नाटिकाएँ प्रकाशित हुईं, उनकी मृत्यु के बाद उनके काग़ज़-पत्र में ऐंटी गौन (प्रति अतीत) और 'ए लीप इयर कम्स बट वंस इन फ़ोर: एक ड्रीम फैंटास्टिक' (अधिक वर्ष लेकिन चार वर्ष के बाद : एक अनोखा स्वप्न) जैसे शीर्षकों से कुछ और नाटक मिले हैं। उनकी अगली पुस्तक 'दांते ज़बरील रोसेटी एंड कंटेम्परेरी क्रिटिसिज़्म' (दांते ज़बरील रोसेटी तथा समकालीन आलोचना, 1928) साहित्यिक समालोचना की पुस्तक है जो संभवतः डाक्टरेट की उपाधि के लिए लिखे गए उनके शोध-प्रबंध पर आधारित है। सन् 1939 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में 'पोस्ट-वार युरोप : 1918-1937' (युद्धोत्तर युरोप : 1918-1937) शीर्षक से एक विस्तारण (एक्सटेंशन) व्याख्यान दिया। इसमें प्रथम विश्व-युद्ध के बाद के युरोप की स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। इसमें राजनीतिज्ञों के प्रति कटु व्यंग्य के साथ-साथ उनके प्रति अविश्वास प्रकट किया गया है और यही घोष के उपन्यासों की भी विशेषता है। घोष ने 'द आब्ज़र्वर', 'द एनवाय' और 'द एरियन पाथ' जैसी पत्रिकाओं के लिए लेख तथा पुस्तक समीक्षाएँ आदि भी लिखीं जिसमें उनका कला तथा भारतीय परंपरा के गहरे ज्ञान, उनकी महती प्रतिभा और प्रायः सभी विषयों में रुचि रखने की उनकी प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। उनके उपन्यास और उनके पत्रकारिता संबंधी लेखन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। सन् 1955 के दौरान 'दि एरियन पाथ' में प्रकाशित उनके लेख 'फ़ोर सोंग्स ऑफ़ राधा' (राधा के चार गीत) में 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में मैना द्वारा गाए गए कुछ गीतों का विश्लेषण किया गया है। 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' पर लिखी गयी एक टिप्पणी में (द एरियन पाथ में प्रकाशित), जिसका इस उपन्यास की भूमिका के रूप में उपयोग किया गया है, सेनापति की हिंदी कविताओं का अनुवाद दिया गया है। घोष ने इसमें चटकीले फूलों के प्रति बादशाह

जहाँगीर की संवेदनशीलता का भी उल्लेख किया है । उनकी पुस्तक समीक्षा की भी उनके उपन्यासों से तुलना की गयी है। अपनी एक समीक्षा में घोष कल्पों के प्रारंभ होने और उनके अंत होने का प्रश्न उठाते हैं, "एक कल्प कब समाप्त होता है ? नया कल्प कब शुरू होता है ?" यही प्रश्न 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में भी उठाया गया है। फ़ारसी में लिखनेवाले दो भारतीय कवियों, 'फ़ैजी और उर्फ़ी' : अकबर के दरबार के दो कवि' से फ़ारसी कविता में घोष की रुचि का ज्ञान होता है। घोष ने इसमें इन दोनों कवियों की कविताओं के सुंदर काव्यानुवाद दिए हैं। इसमें अपने ब्राह्मण गुरु की कन्या के प्रति फ़ैज़ी के घातक प्रेम से संबंधित एक किंवदंती भी दी गयी है जिससे उनके उपन्यासों में दी गयी नीति-कथाओं और किंवदंतियों की याद सजीव हो जाती है। 'टू बुद्धिस्ट फेबुल्स' (दो बौद्ध नीति-कथाएँ) को जो पहले 'द एरियन पाथ' में प्रकाशित हुई थीं, 'इट हैपन्ड इन कश्मीर' (कश्मीर में घटी घटना) और 'द स्टोरी ऑफ़ शुक्स डॉग' (शुक के कुत्ते की कथा) शीर्षक से उनके लोककथाओं के संग्रह 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ोक स्टोरीज़ फ्राम फार्दर इंडिया' (सुदूर भारत की परी कथाएँ और परी कहानियाँ) में शामिल किया गया है।

घोष ने लोक-कथाओं की तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं। पहला संग्रह 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ोक स्टोरीज़ फ्रॉम इंडिया' (भारत की नीति कथाएँ और लोक कहानियाँ) (1968) में सिर्फ़ 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' की कथाएँ ही शामिल न करके भारत की मौखिक परंपरा की अनेक कहानियाँ भी दी गयी हैं, जैसे 'पहलवान द रेस्लर' (कुश्ती लड़नेवाला—पहलवान) और प्रेत-कहानी 'वन्स इन बनारस' (एक बार बनारस में)। अगले संग्रह 'फ़ोक टेल्स ऐंड फ़ोक स्टोरीज़ फ्रॉम फार्दर इंडिया' (सुदूर भारत की लोकनीति-कथाएँ और परी-कहानियाँ) में स्याम, कंबोडिया, लाओस और पड़ोसी देशों में हिंदू उपनिवेशकों और बौद्ध प्रचारकों द्वारा प्रचारित कहानियाँ दी गयी हैं। स्थानीय रुचियों का ध्यान करते हुए कहानियों में उपयुक्त फेर-बदल किया गया है, यद्यपि मूल कहानी का पता सहज ही चल जाता है। एक और संग्रह 'टिबेटन फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़' (तिब्बती लोक-कथाएँ और परी-कथाएँ) घोष की मृत्यु के लगभग बीस वर्ष बाद 1985 में प्रकाशित हुआ है। इसकी अधिकांश कथाएँ मौखिक परंपरा की हैं और पहले कभी प्रकाशित नहीं हुई। पहले से ही प्रसिद्ध कथाओं का उल्लेख करते समय भी घोष उनको यथार्थपरक बनाने के लिए अपनी ओर से कुछ ब्योरा जोड़ देते हैं, उदाहरणस्वरूप, राजकुमार के पेट में साँपवाली कथा। 'पंचतंत्र' में दी गयी इस कथा में नगर या दोनों राज-कुमारियों का नाम नहीं दिया गया है। यह इस प्रकार शुरू होती है : दान नामक राजा की दो जवान बेटियाँ थीं। उनमें से एक बेटी प्रतिदिन प्रातःकाल अपने पिता के चरणों पर झुककर 'विजयी हों राजन्' और दूसरी बेटी, 'यथायोग्य नमस्कार,

हे राजन्' कहकर उसका अभिवादन किया करती थी। (पंचतंत्र, आर्थर डब्ल्यू. राइडर द्वारा अनूदित)।

नगर और दोनों राजकुमारियों का नाम देने के साथ-साथ घोष बहुत-सारा ब्योरा भी देते हैं—जैसे राजकुमारियाँ सुंदर हैं और राजा विधुर है। वह यह भी बताते हैं कि बेटियों के नमस्कार करने के तरीके में क्या फ़र्क है। एक लड़की बहुत सहज ढंग से अभिनंदन करती है तो दूसरी शब्दाडंबर के साथ :

"श्रावस्ती का वृद्ध राजा मांधाता विधुर था, जो अपनी दो बेटियों माद्रि और माया पर गर्व करता था। राजकुमारियाँ सुंदर थीं और उनके रूप में बहुत-कुछ समानता थी, क्योंकि वे दोनों जुड़वाँ थीं। लेकिन उनके तौर-तरीक़े अलग-अलग थे। माद्रि प्रतिदिन प्रातःकाल अपने पिता के चरणों पर झुककर 'विजयी हो राजन्! श्रावस्ती के राजा दीर्घायु हों', कहकर उसको नमस्कार करती थी। माया के नमस्कार करने का ढंग विचित्र था : वह 'प्रातःकाल की शुभकामनाएँ : यथायोग्य नमस्कार' कहकर अभिवादन किया करती थी।" (फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ फ्रॉम इंडिया)।

राजा क्रुद्ध होकर आदेश देता है कि राजकुमारी का ब्याह उस लोभी भिखारी से कर दिया जाए जिसे वह प्रतिदिन प्रातः सबसे पहले देखा करता है। पंचतंत्र में शुरू में ही यह बता दिया गया है कि उसका ब्याह "उस राजकुमार से हुआ था जिसने मंदिर में अपना घर बनाया था।" घोष की कथा में इस तथ्य को कहानी के अंत में उजागर किया गया है, जब राजकुमारी राजकुमार के शरीर में छिपे साँप के प्रभाव से उसको मुक्त करती है और वह बहुत धनी बन जाता है।

संस्कृत की नीति-कथाओं के संग्रहों की तरह घोष ने भी बड़ी कथाओं और छोटी कथाओं को आपस में मिला दिया है और बीच-बीच में छोटी-छोटी नीति-परक कविताएँ दी हैं। यह जानना रोचक होगा कि रूडयार्ड किपलिंग ने भी 'द जंगल बुक' और 'जस्ट सो स्टोरी' जैसे अपने बाल-साहित्य में इसी तरीक़े से काम लिया है। लेकिन यह जानने का कोई उपाय नहीं है कि घोष किपलिंग से प्रभावित हुए या नहीं। किपलिंग की बच्चों के लिखी गयी कुछ पुस्तकों में उसके स्वयं के रेखांकन भी दिए गए हैं। घोष के उपन्यासों की तरह उनकी परी-कथाओं की पुस्तकों में भी श्रीमती अनारकली ई. कार्लाइल (कुमारी एलिज़ाबेथ कार्लाइल) के सुंदर रेखांकन दिए गए हैं।

घोष अपने पीछे कुछ अप्रकाशित पांडुलिपियाँ छोड़ गए जिनमें से दो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं : एनकाउंटर्स अनफ़ोरसीन (अप्रत्याशित मुलाक़ात) जो 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' की उत्तर कथा है, और एक ऐतिहासिक उपन्यास, 'ब्लाइंडली स्ट्राइक्स द ड्रेड हंटर।' 'एनकाउंटर्स अनफ़ोरसीन' में उनके प्रकाशित उपन्यास चतुष्टय का वाचक बलराम अपनी थोड़े दिनों की विदेश यात्रा से भारत लौटकर राजगृह के

महाराजा मरोधराज का सचिव वन जाता है और उपन्यास के अंत में उसको महाराजा की अंतिम घोषणा और विदाई-संदेश तैयार करने का उवाऊ काम करना पड़ता है, क्योंकि उनका छोटा राज्य एकीकृत भारत में मिला लिया जानेवाला है। वास्तव में 'एनकाउंटर्स अनफ़ोरसीन' उनकी एक छोटी कहानी, 'माधो द मनिकिन' का परिवर्द्धित रूप है, और घोष ने शुरू में उपन्यास का नाम "माधो द मनिकिन : ए टेल ऑफ़ अनफ़ोरसीन एनकाउंटर्स" (मनिकिन माधो : अप्रत्याशित मुलाक़ात की कथा) रखा था। क़द में छोटा, लेकिन दिल से वड़ा माधो इस उपन्यास का नायक है। 'फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में वलराम का जितना आध्यात्मिक विकास हुआ था, उसमें कुछ वढ़ोतरी नहीं होती। अप्रकाशित उपन्यास में गूढ़ स्वभाव की कानी सुंदरी से उसका प्रेम पूर्ववर्ती उपन्यास की मैना के प्रति उसके प्रेम की तरह विश्वसनीय नहीं लगता।

इससे कहीं अधिक तृप्तिकर अप्रकाशित उपन्यास है 'ब्लाइंडली स्ट्राइक्स द ड्रेड हंटर'। इस ऐतिहासिक उपन्यास में अकवर के वेटे सलीम (वाद में मुग़ल सम्राट् जहाँगीर), उसके पालक भाई कुतुवुद्दीन कोका और अली क़ुली वेग की कहानी है। उपन्यास के अंतिम वाक्य में इसका जीवन-दर्शन दिया गया है : प्रत्येक व्यक्ति के मन में वैठा दानव उसका पीछा कर रहा है। कुछ लोग जो 'अति' शब्द का अर्थ नहीं जानते, उन पर यह सीधा वार करता है और वे इस विकराल शिकारी के शिकार वन जाते हैं।" इस उपन्यास में कुतुवुद्दीन कोका को अत्यधिक महत्त्वा-कांक्षा दिखायी गया है जो एक कट्टरपंथी मुसलमान है और सहिष्णु अकवर के राज्य पर कब्ज़ा कर लेना चाहता है। उपन्यास के अंत में उसका अली क़ुली वेग को मार डालने का षड्यंत्र विफल हो जाता है जिससे उसकी दुर्गति हो जाती है। यह अंत वड़ा रोमांचकारी है। अकवर के दरवार में ईसाई पादरी और यूरोपीय डॉक्टर होते हैं, जिससे घोष को पांडित्यपूर्ण चर्चाएँ कराने का अवसर प्राप्त होता है। घोष की लोक-कथाओं और पत्रिकाओं के लिए लिखे गए लेखों और अन्य उपन्यासों की तरह इस उपन्यास की भाषा भी लयात्मक है और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति उनका प्रेम परिलक्षित होता है। आश्चर्य है, घोष को अपने जीवन-काल में इसके लिए कोई प्रकाशक नहीं मिला। आशा है 'टिवेटन टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़' की तरह यह भी अंततः प्रकाशित होकर रहेगा।

घोष और भारतीय कथा-लेखन

साहित्यिक विधा के रूप में उपन्यास लेखन का विकास यूरोप में पुर्नजागरण काल के बाद हुआ और पाश्चात्य प्रतिमानों के आधार पर भारत में भी उपन्यास लिखे गए। प्रारंभ में, पूर्णतः यथार्थ जीवन पर आधारित चरित्र-प्रधान और घटना-प्रधान उपन्यास लिखे गए, लेकिन, जैसा कि हेनरी जेम्स ने कहा है, उपन्यास एक ऐसी विधा है जिसमें प्रयोग करने की बहुत अधिक संभावनाएँ रहती हैं। "उपन्यासकार की सुविधा, उसका सुख तथा उसकी पीड़ा और दायित्व भी, इस बात में निहित है कि उसका क्षेत्र असीम है—उसके प्रयोगों, उसकी उपलब्धियों, खोजों और सफलताओं की संभावनाएँ असीम हैं।" बीसवीं शताब्दी में उपन्यास का इतना विकास हो चुका है कि इसमें फ़तांसी—और कविता, प्रतीकात्मकता तथा मनो-वैज्ञानिकता के लिए भी स्थान बन गया है; जेम्स ज्वायस और वर्जीनिया वुल्फ़ की कृतियाँ इसका प्रमाण हैं। अलेन रौब ग्रिथ जैसे उपन्यासकारों ने ऐंटी-नावेल (विरोधी उपन्यास) भी लिखे हैं, जिनमें न तो घटनाएँ क्रमबद्ध रूप से आती हैं, न कार्य-कारण संबंध होता है, और जिनमें पदार्थों का भी उतना ही महत्त्व होता है जितना पात्रों का। आधुनिक भारतीय उपन्यासकार पारंपरिक पाश्चात्य उपन्यासों का ही अनुकरण करता रहे, इसके लिए कोई कारण नहीं रह गया है, वह सुधीन नाथ घोष की तरह भारतीय साहित्यिक परंपरा का भी अनुसरण कर सकता है।

भारतीय कथा-लेखन की परंपरा वेदों और उपनिषदों के समय से शुरू होती है। संस्कृत का गद्य-साहित्य-समृद्ध है, और उपनिषदों में भी गद्य में छोटी कथाएँ दी गयी हैं। छांदोग्योपनिषद् में सत्यकाम और जाबाला तथा कठोपनिषद् में नचिकेता की कथा की भाषा लाक्षणिक होते हुए भी सरल है। पंचतंत्र, हितोपदेश और आर्यसुर के जातक-माला (बोधिसत्व के विभिन्न जन्मों के विषय में) की नीति-कथाओं में बीच-बीच में कविताएँ भी दी गयी हैं जिनमें संक्षेप में यह बताया गया है कि संबंधित कथा से क्या शिक्षा मिलती है। संस्कृत के कथा-लेखन में गद्य और कविता में किसी प्रकार का अंतर नहीं किया जाता था, संभवतः शीघ्र ही कंठाग्र हो जाने की सुविधा के कारण कविता अधिक पसंद की जाती थी, इसीलिए बैताल पंचविंशति (पचीस बैताल-कथाएँ) तथा सोमदेव के कथा-सरित्सागर की कथाएँ

पद्य में लिखी गयीं। पुराण और महाभारत भी पद्यात्मक रचनाएँ हैं। वाद के काल में संस्कृत में परिष्कृत गद्य में साहित्य-रचना की गयी। वाणभट्ट की कादंवरी और सुवंधु की वासवदत्ता जटिल भाषा में लिखी गयी वड़ी गद्यात्मक रचनाएँ हैं जिनमें श्लेषात्मक शव्दों और लाक्षणिकता की भरमार है। दंडी का दशकुमार चरित (दस राजकुमारों की कथा), जिसमें समान रूप से सुंदर, युवा, वीर तथा साधन-संपन्न दस राजकुमारों की साहसिकताओं का वर्णन है, मानसिकता की दृष्टि से आधुनिक उपन्यास जैसा है। सातवीं शताव्दी में रचित मानी जानेवाले इस गद्यात्मक कृति में उत्सवों, पर्वों, गुप्तचरों और रोम जानेवाले व्यापारियों का वर्णन है जिससे उन दिनों के जन-जीवन का परिचय प्राप्त होता है। इसमें समस्याओं का समाधान अलौकिक रूप से नहीं, वल्कि, मनोवैज्ञानिक ढंग से किया जाता है। उदाहरणस्वरूप 'विश्रुत की साहसिकताएँ' में जव एक अफ़वाह फैलाने की ज़रूरत पड़ती है तो खवर पहले नगर के मुख्य सलाहकार को दी जाती है, लेकिन इसके पहले उसको यह वात गुप्त रखने की शपथ दिला दी जाती है। इसके वावजूद यह स्पष्ट है कि दंडी ने "परंपरा से वहुत-कुछ ग्रहण किया है। कथा के वीच में उप-कथा कहने की विधि वहुत लोकप्रिय रही है। दसों राजकुमार अपनी-अपनी आपवीती सुनाते हैं जिससे सिंहासन वत्तीसी की कहानियों की याद आती है जिसमें राजा विक्रमादित्य के सिंहासन की सभी पुतलियाँ एक-एक कहानी कहती हैं। लेकिन अन्य कथा-चक्रों के विपरीत दंडी की कहानियाँ एक-दूसरे में गुंफित हैं। और, यदि हम यह मान लें कि दंडी इस पुस्तक को उसी विशद रूप से प्रारंभ करना चाहते थे जैसा प्रारंभ इस पुस्तक में हुआ है तो यह अनुदर्शी वर्णन का एक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है।

पुराणों, महाभारत, संस्कृत के गद्य साहित्य और कथा-चक्रों में एक समान तकनीक अपनायी गयी है। विषयांतर वहुत अधिक संख्या में होते हैं, कवि मुख्य कथा-सूत्र को छोड़कर किसी अप्रासंगिक टिप्पणी या दर्शकों द्वारा किए जानेवाले किसी प्रश्न से प्रभावित होकर कोई दूसरी कथा कहने लगता है। कभी-कभी ये विषयांतर स्थल-पुराण के रूप में आते हैं जव कवि या लेखक मुख्य कथा को छोड़कर कथा में उल्लिखित किसी स्थान का वर्णन करने लगता है। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में घोष ने यह तरीक़ा अपनाया है, मुख्य कथा को छोड़कर वह गोला का इतिहास वताने लगते हैं कि लोभी वर्गियों को हटाने के लिए सैकड़ों वर्ष पहले इसका किस प्रकार निर्माण हुआ था। 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में चौरंगी और ओमीचंद की मीनार का स्थल-पुराण आता है। उप-कथा कहने की इस विधि से मिलती-जुलती एक और विधि है जिसके अनुसार लेखक कोई कहानी कहता है जिसका कोई पात्र अपने किसी अनुभव का वर्णन करता है जिसमें किसी अन्य पात्र के अनुभव भी आते हैं, और वह अन्य पात्र अपने अनुभवों का वर्णन करने लगता है। घोष ने 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में इस विधि का अच्छा प्रयोग किया है। संस्कृत के

लेखक अपने कथा-लेखन में गद्य के बीच-बीच में कविताएँ भी देते थे। घोष ने भी अपने उपन्यासों में कविताओं के उद्धरण दिए हैं। 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' में मोती दीदी के पालना—गीत, क्रिसमस दिवस पर बच्चों द्वारा सुने गए नीग्रो लोगों के आध्यात्मिक गीत और पालना-गीत, 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में पेनहारी के मुहावरे, रमोनी के गीत और पारंपरिक लोक-गीत—ये सभी पद्य में दिए गए हैं।

यदि किसी प्रमाण की ज़रूरत हो तो यह बताने के लिए कि भारतीय परंपरा में यथार्थवादी परंपरा का विरोध नहीं है, दंडी के दशकुमार चरित का उल्लेख किया जा सकता है। इसके बावजूद नायक की अवधारणा एक ऐसी चीज़ है जिसमें उसकी और संस्कृत के अन्य लेखकों में समानता है। यद्यपि दंडी के राजकुमार सद्गुणी नहीं है, प्रेम और युद्ध में कुशलता के कारण वे अपने पराक्रमी होने का परिचय देते हैं। संस्कृत साहित्य में कभी औसत की ओर ध्यान नहीं दिया गया। शास्त्रीय पाश्चात्य साहित्य के बारे में भी शायद यही बात सच उतरती है, क्योंकि औसत आदमी को प्रधानता उन्नीसवीं शताब्दी के बाद से ही दी जाने लगी है। राजा राव और सुधीन घोष जैसे भारतीय अंग्रेज़ी के आधुनिक उपन्यासकारों, जिन्होंने भारतीय कथा-लेखन से प्रेरणा प्राप्त की है, के मुख्य पात्र भी औसत दर्जे से ऊपर के आदमी हैं। राजा राव के नायक—चाहे 'कंठपुर' का मूर्ति हो, 'द सर्पेंट एंड द रोप' का रामास्वामी या 'द कैट एंड शेक्सपिअर' का गोविंदन नायर—सामान्य आदमी नहीं है, उनमें एक विशेष प्रकार की संवेदनशीलता, आभिजात्य और ज्ञान परिलक्षित होता है। घोष अपने मुख्य पात्र के रूप में एक ऐसे व्यक्ति को चुनते हैं जो सामान्य लोगों से अलग क़िस्म का है। एक बच्चे के रूप में वह सबसे अधिक सुंदर है, एक लड़के तथा कॉलेज के विद्यार्थी के रूप में सर्वाधिक प्रतिभाशाली और युवा के रूप में शारीरिक दृष्टि से स्त्रियों के आकर्षण का केंद्र। सबसे बड़ी बात कि वह आदर्शवादी है जो सामान्य लोगों की बातों में नहीं आता।

नायक के प्रति आग्रही होने का व्यक्ति की क्षणभंगुरता से संबंध हो सकता है। भारतीय कथा-लेखन में व्यक्ति पर नहीं, आदर्श चरित्र पर बल दिया गया है। उदाहरणस्वरूप पुराणों में लाक्षणिकता की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है, किसी व्यक्ति-विशेष की विशेषताओं पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। घोष के उपन्यासों के पात्र भी आदर्शोन्मुख जान पड़ते हैं। नायक सहित बहुतेरे पात्र अनाम हैं। चारों उपन्यासों में श्रेष्ठ उपन्यास, 'द क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में शायद ही किसी पात्र का नाम आया हो। पंडित जी का नाम नहीं बताया गया है, वह सदियों से अर्जित प्रज्ञा के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आते हैं! जो नगरवासी कॉलेज में अर्जित अपने ज्ञान का प्रदर्शन गाँव में करता है उसे 'कोलेज हुज़ूर' का नाम दिया गया है। बहुतेरे पात्रों से उनके गुणों और व्यवसाय का संकेत प्राप्त होता है। अपने व्यवसाय में निपुण बढ़ई को 'धुतोर'—संस्कृत का चतुर—नाम दिया गया है। कुम्हार का

नाम कुमार (संस्कृत का कुंभकार) है। जो लड़की लोगों को साम्यवादी दल का सदस्य वनाने के लिए अपने शारीरिक आकर्षण का उपयोग करती है, उसे 'रमोनी' नाम दिया गया है (रमणी), कुमार अपनी देवी सरस्वती की प्रतिमा के लिए जिस संथाल लड़की को प्रतिरूप वनाता है, उसको 'नीला' नाम दिया गया है जिससे नीला सरस्वती का वोध होता है तांत्रिक ग्रंथों में स्त्रियों के माध्यम से मुक्ति चाहनेवालों को यही नाम दिया गया है। 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में परले दर्जे के दुष्ट का नाम एक नंवर है। उसके चरित्र को और अधिक स्पष्ट करने के लिए महाभारत के पात्र राजा नहुष से उसकी तुलना की गयी है, जो सत्ता के मद में चूर होकर भ्रष्ट वन जाता है। घोष की रुचि उसके वैयक्तिक चरित्र में नहीं है, वह सत्ता के प्रति उसकी वासना दिखाकर उसको वुराई के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं।

पारंपरिक भारतीय कथा-लेखन में पशु और देवी-देवता आपस में खुलकर मिला करते हैं। हिंदू मनुष्य को पशु से सर्वथा भिन्न नहीं मानते, उनकी धारणा है कि मनुष्य और पशु में बस इतना ही अंतर है कि मनुष्य का पशुओं की अपेक्षा आध्यात्मिक विकास अधिक हुआ है। घोष भी प्राकृतिक और अलौकिक तथा पशु और मनुष्य के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं मानते। उनके उपन्यासों में कुछ अलौकिक घटनाएँ घटती हैं—घोष के लिए नायक की दिव्य-दृष्टि से संबंधित घटनाएँ लौकिक घटनाओं के समान ही अपना प्रभाव छोड़ती हैं। यह वताना कठिन है कि उसके जीवन में यथार्थ का कब अंत होता है और अलौकिक प्रभाव कब शुरू होता है। दावानल में घिर जाने पर नीलगाय पर सवार एक योगिनी द्वारा नायक की रक्षा किए जानेवाली घटना और स्वेंस्का के किंडर गार्टेन-जीवन के उसके संस्मरणों का घोष एक ही लहज़े में उल्लेख करते हैं। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में नीली पहाड़ियों में नायक की कुटिया में अंतिम रात को उसकी एक स्त्री से मुलाक़ात होती है जिसके वारे में यह वताना कठिन है कि वह कैसी स्त्री है—वह कोई डाकिनी है या कोई योगिनी अथवा रमोनी या नीला। पशुओं के प्रति घोष दया-भाव नहीं दर्शाते: 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' में पिरम पारिवारिक कलह के प्रति दीवान के अपने वेटे से भी अधिक संवेदनशील है। 'द वरमिलियन बोट' में सिसी-मगर सूँस होने के वावजूद वलराम का सच्चा मित्र है और उसके दुःख से दुःखी होता है, तूफ़ानी समुद्र में बलराम जब डूबनेवाला होता है तो उसको बचाता है।

घोष के अतिरिक्त भारतीय अंग्रेज़ी के तीन अन्य उपन्यासकारों ने पारंपरिक कथा-लेखन की तक़नीक अपनायी है, ये हैं राजा राव, जी. वी. देसानी और एम. अनंत नारायणन। जैसाकि राजा राव ने 'कंठपुर' की भूमिका में स्वयं संकेत किया है, यह उपन्यास एक तरह से स्थल-पुराण है। 'द सर्पेंट एंड द रोप' (1960) में

नीति-कथाओं और स्थल-पुराणों के रूप में आनेवाले लंबे विषयांतरों, संस्कृत श्लोकों के रूप में कविताओं, मीरा के भजन और फ्रेंच कविताओं तथा पुराणों की तरह ढीली-ढाली कथा-संरचना से भारतीय पारंपरिक कथा-लेखन के प्रति उनकी जागरूकता का पता चलता है। लेकिन यह मानने का कोई कारण नहीं है कि यह उपन्यास लिखने में राजा राव ने लिखने से पहले सुधीन घोष की कृतियाँ पढ़ ली थीं या उनसे किसी प्रकार प्रभावित हुए हैं। अन्य दो उपन्यासकारों ने सिर्फ़ एक-एक उपन्यास लिखे हैं। जी. वी. देसानी का 'ऑल एबाउट एच हैट्टर' (हैट्टर के विषय में) (1948) की पृष्ठभूमि दार्शनिक है, और एम. अनंत नारायणन का 'द सिलवर पिलग्रिमेज़' काशी की तीर्थयात्रा पर जा रहे एक राजकुमार की साहसिकताओं के दौरान आनेवाली अनेक नीति-कथाओं, दार्शनिक शास्त्रार्थों और गीतों के कारण एक अन्य पुराण की स्मृति सजीव करता है। लेकिन, अन्य किसी उपन्यास-लेखक ने इस तक़नीक को नहीं अपनाया है। आधुनिक भारतीय उपन्यासकारों में पौराणिक कथा-रूप और तक़नीक को प्रश्रय देनेवाले लेखक अभी दिखायी नहीं देते।

निष्कर्ष

'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' का नायक उपन्यास के अंत में कहता है—"मैं तीर्थ-यात्री बनना चाहता हूँ।" प्रकारांतर से वह कह रहा होता है कि वह ईश्वर की खोज में लगना चाहता है जो भारतीय अंग्रेज़ी के बहुतेरे उपन्यासों का मुख्य विषय रहा है। सन् 1925 में प्रकाशित धन गोपाल मुकर्जी का 'माई ब्रदर्स फ़ेस' इस प्रकार का पहला उपन्यास था। मुकर्जी के उपन्यास का वाचक भी घोष के नायक की तरह ही अनाम है। वह पश्चिमी देशों की यात्रा करके भारत लौटता है। अनेक स्थानों की यात्रा करने के बाद बनारस में उसकी एक संन्यासी से मुलाक़ात होती है जो उससे कहता है कि तुम्हारे लिए अपनी खोज समाप्त करने का समय अभी नहीं आया है—और भी अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद उपयुक्त समय पर तुम ईश्वर का दर्शन कर सकोगे। मुकर्जी ने इस उपन्यास में संस्कृत के भजनों और भारतीय भाषाओं के भक्ति-गीतों तथा अनेक किंवदंतियों और कहानियों का समावेश किया है और इसकी संरचना पर पारंपरिक भारतीय कथा-लेखन का प्रभाव है। पचीस वर्ष बाद घोष ने इस तकनीक का प्रयोग किया और उनके भी दस वर्ष बाद राजा राव ने 'द सर्पेंट एंड द रोप' में संस्कृत भजनों और भारतीय दंत-कथाओं का उपयोग किया। उनका नायक रामास्वामी कहता है, "मैं जानता हूँ कि जीवन एक तीर्थयात्रा है" और अंततः मार्गदर्शन के लिए एक गुरु के पास चला जाता है। जी. वी. देसानी के 'ऑल एबाउट हैट्टर' के बारे में भी यही कहा जा सकता है—हैट्टर एक नीम-हक़ीम से दूसरे नीम-हक़ीम के पास जाकर प्रहसन के आवरण में ईश्वर की खोज करता है।

प्रभाव के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता—संभव है घोष और राव, दोनों को अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों की जानकारी न रही हो। शायद, अपने हिंदू नायकों की आंतरिकता की जाँच-पड़ताल करने के लिए उन्होंने भारतीय कविता, दंत-कथाओं और दर्शन में अभिव्यक्त भारतीय प्रज्ञा की ज़रूरत महसूस की। कल्पना करते समय उनकी दृष्टि अतीत और वर्तमान दोनों पर दौड़ी है, इसलिए बार-बार स्थल-पुराण का भी जिक्र आया है। राव के उपन्यासों में इस खोज का रूप दार्शनिक है, जबकि घोष की खोज को मुख्यतः सौंदर्यात्मक कहा जा

सकता है। इसका संकेत हमें उपन्यास के शीर्षक 'द सर्पेंट एंड द रोप' (साँप और रस्सी) से ही मिल जाता है। भारतीय अद्वैत दर्शन में यथार्थ और यथार्थ-सादृश्य समझाने के लिए इन प्रतीकों का उपयोग किया गया है। घोष के उपन्यासों के शीर्षक अपने काव्यात्मक सौंदर्य के लिए उल्लेखनीय हैं। घोष के लिए सौंदर्य की आराधना और ईश्वर की खोज में कोई फ़र्क़ नहीं है। पंडित जी कहते हैं, "सौंदर्य का दर्शन ईश्वर की झलक पाने के समान होता है।" अंग्रेज़ी भाषा पर घोष का इतना अधिक अधिकार है कि वे ऐसे वातावरण में भी सौंदर्य ढूंढ़ निकालते हैं जहाँ इसकी बिलकुल संभावना नहीं होती। बलराम कहता है, "वह किसी भी क्षेत्र को, चाहे वह जैसा भी हो, अछूता नहीं छोड़ती है।"

"जिस दिन मैंने सड़कों पर आवारा फिरनेवाले कुछ अधनंगे बच्चों में सौंदर्य के दर्शन किए, उस दिन मुझे इस कहावत की सचाई का पता चला : वह सौंदर्य मात्र क्षण-भर रहा; उस क्षण जब बच्चे एकाएक काग़ज़ की एक पतंग लूटने के लिए दौड़ पड़े थे; क्षण-भर के लिए उन लड़के और लड़कियों ने जो रूप धारण किया उससे उर्वशी के वस्त्रों की शोभा बढ़ सकती थी।"

यद्यपि 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' और 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' का वाचक एक लड़का है, उनमें एक ऐसे प्रौढ़ उपन्यासकार की संवेदना है जिसको भारतीय परंपरा की गहरी समझ है और जो सुंदर दृश्यों को आध्यात्मिकता प्रदान करने में समर्थ है। बलराम कहता है, "मैं किसी भी चीज़ से वंचित नहीं रहना चाहता।" यह उक्ति उपन्यासकार पर भी खरी उतरती है। उसमें भौतिकता से ऊपर उठकर सोचने-विचारने की शक्ति है तथा गूढ़ और अलौकिक शक्तियाँ भी प्रमुख भूमिका निभाकर उसके उपन्यासों को विशिष्टता प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में जुताई अनुष्ठान से बाद आनेवाले तूफ़ान का वर्णन या 'द वरमिलियन बोट' में एक सूँस द्वारा नायक की रक्षा किए जाने का वर्णन : इसमें यथार्थ और अलौकिक का इतने सहज ढंग से सम्मिश्रण हुआ है कि कोई बलराम की दिव्य-दृष्टि पर आपत्ति नहीं उठाता।

घोष के उपन्यासों में सिर्फ़ सौंदर्य ही नहीं है, उनमें भारतीय जीवन की बीभत्सता के भी चित्र आते हैं। यह चित्रण मात्र विवरणात्मक ही नहीं है क्योंकि वह कटु हास्य उत्पन्न करते हैं जिसके कारण वह जो कुछ भी देखते हैं उसका वर्णन करने में अतिशयोक्ति का पुट आ जाता है। घोष के उपन्यास रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर टिप्पणियों से भरे पड़े हैं। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' भारतीय ग्राम-जीवन पर बहुत अच्छा उपन्यास है जिसमें ग्रामीण रीति-रिवाज़ों और ग्रामवासियों के सोचने-समझने के ढंग की अच्छी अंतर्दृष्टि पाठक को प्राप्त होती है। बाद के दोनों उपन्यासों की कथा-भूमि कलकत्ता के मंदिरों और गिरजाघरों, खँड़हर बन रहे पुराने महलों और उद्यानों के साथ-साथ आधुनिक महत्त्वपूर्ण स्थानों और वहाँ के

जीवन का विस्तार से चित्रण किया गया है। इनको पढ़कर जेम्स ज्वायस के 'यूलीसीज़' की याद आती है जिसमें डबलिन के विभिन्न स्थानों का वाचक के आंतरिक जीवन से गहरा संबंध दिखाया गया है।

घोष का भारत का चित्रण पाश्चात्य लेखकों जैसा नहीं है—वे उनकी तरह भारत की ग़रीबी और जातिवाद का चित्रण नहीं करते, भारत को शेर के शिकार और महाराजाओं तथा साधु-संतों की भूमि नहीं मानते। निस्संदेह, उनके उपन्यासों में प्रेम स्वामी, लुकटाम के राजा तथा दीवान और उसके आलीशान महल का प्रसंग आया है, लेकिन ये प्रसंग भारत के प्रति उनकी संपूर्ण दृष्टि के अंश के रूप में आए हैं। प्राचीन प्रज्ञा से समृद्ध भारत, उपनिपदों, बुद्ध, कपिल और भतृहरि के भारत, लोकनृत्यों और जयदेव की कविता के भारत को प्रस्तुत करना ही उनके उपन्यासों का मुख्य विपय रहा है। लेकिन इसका मतलव यह नहीं है कि उन्होंने भारत पर विदेशी प्रभाव को अनदेखा छोड़ दिया है। राजा राव सहित वहुतेरे उपन्यासकारों ने इस 'पूर्व-पश्चिम संवाद' को भारतीय नायक और विदेशी स्त्री का विवाह कराकर प्रस्तुत किया है, लेकिन घोष की दृष्टि उनसे अधिक व्यापक रही है, उन्होंने युगों से भारत पर जो विदेशी प्रभाव पड़ता आया है उसकी चर्चा की है। 'द वरमिलियन वोट' में वलराम के छात्रावास के 'शत-प्रतिशत' देशभक्त साथी जव एक यूरेशियन से उसकी दोस्ती पर आपत्ति प्रकट करते हैं तो वह अपने विचारों के समर्थन में स्लाइड दिखाकर भारतीय कला पर एक व्याख्यान आयोजित करके यह सिद्ध करता है कि भारतीय इतिहास की अनेक महानताएँ भारतेतर विश्व से संपर्क की देन हैं। वलराम भारत के महान् व्यक्तियों और वस्तुओं की एक लंवी सूची प्रस्तुत करता है जो इस प्रकार के 'मिश्रित विवाह' की देन है : शाक्य वंश में जन्म लेने के कारण बुद्ध, अशोक मौर्य, कनिष्क यू-ची, अकवर वादशाह, संस्कृत नाटक, कुशान कविता, गुप्त मूर्तिकला, मुग़ल लघुचित्र, मुस्लिम मीनारें, आधुनिक वाङ्ला साहित्य...''

अपने मुख्य पात्र की संवेदना को अंग्रेज़ी भाषा में अभिव्यक्त करने में घोष पूर्णरूप से सफल रहे हैं। नायक के शैशव और प्रारंभिक युवावस्था तथा उसके पहले यौन संवंध वाले चारों उपन्यासों से रोमां रोलां के 'जां क्रिस्तोफ़' (निस्संदेह, घोष के उपन्यासों में नायक के वाद के वयस्क जीवन की चर्चा नहीं होती), या ज्वायस के 'पोर्ट्रेट ऑफ़ द आर्टिस्ट एज़ ए यंग मैन' की याद आती है। चारों उपन्यासों में जिन समस्याओं की चर्चा है वे विशुद्ध रूप में भारत की समस्याएँ हैं। इस युवक के सामने समस्या है पारंपरिक मूल्यों के विघटन की जिसका सामना आज आधुनिक भारत कर रहा है; उसके जैसी निराशा और कटुता भ्रष्ट राज-नीतिज्ञों से पाला पड़ने पर किसी भी आदर्शवादी युवक में आ सकती है। उसकी दुर्दशा इतनी समकालीन है कि विश्वास नहीं होता कि इन उपन्यासों की रचना

आज से चालीस वर्ष पूर्व हुई थी। घोष की शैली में भारत रचा-बसा है और रेखांकनों के माध्यम से उन्होंने भारत के वातावरण को उभारा है। भारतीय जीवन के सभी पक्षों—सामान्य और असामान्य—पर उनकी दृष्टि गयी है। जुताई अनुष्ठान की रत्न-सज्जित नंगी स्त्रियों, अत्याधुनिक हिंदू होटल और अत्यंत फ़ैशनेबुल 'भोजन-घर'—इन सभी पर उनकी दृष्टि गई है। उनके उपन्यासों में कुछ अल्प-ज्ञात अनुष्ठानों और प्रथाओं का वर्णन आया है, लेकिन उपयुक्त स्थानों पर इनकी व्याख्या भी कर दी गयी है। यह नहीं कहा जा सकता कि घोष ने इन उपन्यासों की रचना विदेशी पाठकों के लिए की, क्योंकि अधिकांश नहीं तो बहुत-से भारतीय पाठक भी 'निशिर डाक' जैसी प्रथाओं से अनभिज्ञ हैं।

घोष भारतीय कथा-लेखन पद्धति का उपयोग करनेवाले इंडियन इंगलिश के प्रथम उपन्यासकार थे। प्रायः विस्मृत धनगोपाल मुकर्जी के बाद उन्होंने अपने उपन्यासों में काव्यात्मक परंपरा का निर्वाह किया। लिप्यंतरण करते समय वह प्रायः मूल श्लोक को उद्धृत नहीं करते, लेकिन अनुप्रास का सौंदर्य दिखाने के लिए अपवादस्वरूप कहीं-कहीं उन्होंने ऐसा किया भी है, जैसे जयदेव का 'ललित-लवंग-लता' या भारती का 'न नो नोननुन्नो नुनोन्नो नन नननन ननु'। भारतीय कविता और गीतों के वह सुंदर किंतु विश्वसनीय अनुवाद भी देते हैं—उनके धन्यवाद ज्ञापनों से पता चलता है कि उन्होंने विभिन्न प्रकार के अनुवादकों के अनुवादों के साथ-साथ अपने अनुवादों से भी काम लिया है। इन सबके प्रभाव से वर्णन में प्रवाह आ गया है। राजा राव की तरह कहीं भी विद्वत्ता प्रदर्शन का प्रयास नहीं दिखायी देता जिन्होंने 'द सर्पेंट एंड द रोप' में संस्कृत और फ्रेंच के मूल उद्धरण प्रस्तुत किए हैं।

इन सारी बातों के बावजूद घोष पर आलोचकों की नज़र बहुत कम गयी है। प्रारंभ में इन उपन्यासों की जटिल तकनीक को नज़रअंदाज़ करके समीक्षकों ने इनकी गणना आत्मकथा के रूप में की जिससे भ्रम उत्पन्न हुआ। कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय में भी ये उपन्यास खंड में नहीं, बल्कि 'जीवनी और संस्मरण' खंड में रखे गए है। इस भ्रम के लिए उनकी पुस्तकों के परिचय (ब्लर्ब) बहुत दूर तक ज़िम्मेवार हैं। 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' में इस उपन्यास को 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' उनकी 'आत्मकथा की पहली पुस्तक'—की उत्तर-कथा कहा गया है, उनकी 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' के परिचय में कहा गया है कि 'इसमें सुधीन घोष विश्वविद्यालयी जीवन, जो 'द वरमिलियन बोट' का विषय है, छोड़कर अपनी पहली नौकरी की तलाश करने में लगे हैं। वह एक अभिजात राजनीतिज्ञ का अंशकालिक सचिव बनना चाहते हैं और उसके सामने उस पद के लिए अपनी उपयुक्तता सिद्ध करने में असमर्थ रहते हैं, लेकिन उसके कुत्ते पिरम को अवश्य प्रभावित कर लेते हैं।' उन पर पर्याप्त ध्यान न दिए जाने का एक कारण यह भी है

कि उनकी पुस्तकें सहज सुलभ नहीं हैं; मेरी सूचना में कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय और बंबई विश्वविद्यालय के पुस्तकालय—सिर्फ़ इन्हीं दोनों पुस्तकालयों में उनके सभी उपन्यास उपलब्ध हैं। ये पुस्तकें सुंदर मोटे जिल्दों में हैं। इनके नये संस्करण प्रकाशित नहीं हुए हैं।

इनकी प्रारंभिक समीक्षाएँ बहुत अच्छी थीं। रुमर गोड्डेन ने 'एंड गज़ेल्स लीपिंग' की प्रशंसा करते हुए लिखा, "लगता है सुधीन घोष की भाषा में एक नया रंग, नयी ओजस्विता और हार्दिकता है। रवीन्द्रनाथ के बाद भारत के किसी अन्य लेखक ने जीवन को अधिक समीप से नहीं देखा।" 'द स्केच' के समीक्षक ने लिखा, "जो कोई भी भारत या बचपन या अच्छे लेखन को समझना चाहता हो, उससे बहुत ज़ोर देकर मैं यह पुस्तक पढ़ने की सिफ़ारिश करता हूँ।" 'कंट्री लाइफ़' के लिए 'क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स' की समीक्षा करते हुए होवर्ड स्प्रिग ने इसे 'एक दुर्लभ और विशिष्ट पुस्तक' की संज्ञा दी और लिखा, "पर्यटकों की हज़ारों कहानियाँ पढ़कर भी भारतीय ग्रामीण जीवन को इतनी गहराई से नहीं समझा जा सकता।" 'द संडे टाइम्स' के समीक्षक रेमंड कोर्टिमर ने 'द वरमिलियन वोट' से प्रभावित होकर लिखा, "फ़ंतासी और सूक्ष्म अवलोकन, कोमलता और व्यंग्य का यह सम्मिश्रण अत्यंत सम्मोहक है।" 'द एरियन पाथ' में 'द वरमिलियन वोट' की समीक्षा करते हुए स्टेला गिवन्स ने लिखा, "शैली ढीली-ढीली और अलंकृत है—जैसे किसी चौड़े पाट वाली नदी में फूलों की पंखुड़ियाँ और सुवासित पत्तियाँ प्रवाहित हो रही हों। 'द टाइम्स' (लंदन) ने तो इससे भी आगे बढ़कर घोष को 'संभवतः, "अंग्रेज़ी के सबसे बड़ा भारतीय उपन्यासकार' की संज्ञा दी। इसके बावजूद घोष की कृतियों की साहित्यिक आलोचना में नैरंतर्य नहीं रहा। शायद, इसका कारण यह था कि जब घोष के उपन्यास प्रकाशित हुए तब भारतीय विश्वविद्यालयों में इंडियन इंगलिश के साहित्य की पढ़ाई नहीं होती थी। जबकि घोष पर मुश्किल से आधा दर्ज़न पुस्तकें लिखी गई हैं, उनसे एक तुलनीय उपन्यासकार राजा राव पर छह पुस्तकें, साठ से भी अधिक लेख और डाक्टरेट डिग्री के लिए अनेक शोध-प्रबंध लिखे जा चुके हैं।

इंडियन इंगलिश की साहित्यिक आलोचना के जनक, के. आर. श्रीनिवास अयंगार ने अपनी पुस्तक 'इंडियन राइटिंग इन इंगलिश' के पहले संस्करण (1962) के कुछ पृष्ठों में घोष की चर्चा की है। उन्होंने लिखा है, "एक ही प्रायोगिक तकनीक की पुनरावृत्ति से मन ऊबने लगता है और विषय-वस्तु की लघुता और गंध उड़ जाने का आभास होने लगता है।" लेकिन इस पुस्तक के संशोधित संस्करण (1985) में घोष की अपेक्षाकृत अधिक प्रशंसा की गयी है: "हास्य, फ़ंतासी, व्यंग्योक्ति, परिहास—इन सभी से पाठक को चिढ़ होने लगती है, लेकिन वर्णन में मन रमता है और पाठक ज्यों ज्यों आगे बढ़ता है अप्रत्याशित

रूप से रोशनी मिलने लगती है।" अयंगार ने परवर्ती दोनों उपन्यासों की संरचना का विश्लेषण करते हुए अंत में लिखा है, 'द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' को इस युग की नीति-कथा कहा जा सकता है जिसे अत्यंत मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। निस्संदेह, सुधीन घोष के उपन्यासों ने इंडो-ऐंग्लियन कथा-साहित्य को महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।"

वास्तव में, इंडियन इंगलिश के उपन्यास साहित्य में सुधीन घोष ने उल्लेखनीय योगदान किया है, लेकिन उनकी ओर बहुत कम आलोचकों का ध्यान गया है—उनके उपन्यासों के अनुपलब्ध होने के कारण बहुतेरे पाठक उनका अध्ययन करने से वंचित हो जाते हैं। उनके जीवन-काल में अप्रकाशित 'टिबेटन फ़ेअरी टेल्स' का प्रकाशन (1985-86) तथा 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ फ्राम इंडिया' तथा 'फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ फ्राम फार्दर इंडिया' के पेपरबैक संस्करणों का प्रकाशन एक शुभ संकेत है। चाहे पेपरबैक या किसी अन्य रूप में, यदि उनके उपन्यास पुनः प्रकाशित हों तो उनको भारतीय कथा-लेखन पद्धति में राजा राव के समकक्ष स्थान दिलाने में बहुत दूर तक सहायता मिलेगी।

ग्रन्थ-सूची

सुधीन नाथ घोष की पुस्तकें (1899-1965)

कलर्स ऑफ़ ए ग्रेट सिटी : टू प्लेलेट्स (द डिफ़ाल्टर्स और एंड पिप्पा डांसेज़) : लंदन : सी. डब्ल्यू. डेनियल कं., 1924.

रोस्सेटी ऐंड कंटेम्परेरी क्रिटिसिज्म (लंदन : वावेस, 1928)

पोस्ट-वार युरोप : 1918-1937 (युनिवर्सिटी एक्सटेंशन लेक्चर) कलकत्ता, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1939.

एंड गज़ेल्स लीपिंग : श्रीमती अनारकली ई. कार्लाइल के चित्रांकन सहित : माइकेल जोसेफ़, 1949;, न्यूयार्क; मैकमिलन, 1951.

क्रैड्ल ऑफ़ द क्लाउड्स : लंदन; माइकेल जोसेफ़, 1951, न्यूयार्क; मैकमिलन, 1951.

द वरमिलियन वोट : लंदन : माइकेल जोसेफ़, 1953; न्यूयार्क : मैकमिलन, 1953.

द फ़्लेम ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट : लंदन : माइकेल जोसेफ़; 1955; न्यूयार्क : मैकमिलन, 1955.

फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ फ्रॉम इंडिया : लंदन : गोल्डेन कौकेरल प्रेस, 1961, न्यूयार्क : ए. एस. वार्नेस, 1964; कलकत्ता : आक्सफ़ोर्ड तथा आई. बी. एच. पब्लिशिंग कंपनी, 1965; कलकत्ता : रूपा एंड कं. (पेपरबैक), 1983.

फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ फ्रॉम फार्दर इंडिया : लंदन : थोमस योसेलोफ़, 1966, न्यूयार्क : ए. एस. वार्नेस, 1966; कलकत्ता : रूपा एंड कंपनी, (पेपर-बैक) 1983.

टिबेटन फ़ोक टेल्स एंड फ़ेअरी स्टोरीज़ : कलकत्ता : रूपा एंड कंपनी (पेपरबैक) 1986.

अप्रकाशित कृतियाँ

इंडिया आफिस, लंदन के पुस्तकालय में घोष के कागज़-पत्र में कुछ लघु कहानियों और नाटकों तथा उनकी प्रकाशित पुस्तकों के अलावा निम्नलिखित संपूर्ण पांडुलिपियाँ प्राप्य हैं—

फ़ॉर दिस इज लाइफ़, सी. 1949.

द स्टोरी ऑफ थ्री आवर्स आफ़्टर मैरेज : ए रिकंसट्रक्शन, सी. 1950;

जॉनगे के नाटक 'थ्री इयर्स आफ्टर मैरेज', 1917 पर आधारित

एडवेंचर्स इन अंकारा, एक जासूसी कहानी, सी. 1952

ब्लाइंडली स्ट्राइक्स द ड्रेड हंटर

एनकाउंटर्स अनफ़ोरसीन

घोष पर पुस्तकें और लेख :

घोषाल हिरण्मय : 'एन इंडियन टेट्रालौजी : फ़ोर नॉविल्स आफ़ सुधीन घोष' : बुक्स एब्रोड, जिल्द-XXX (1956) पृ. 284-86.

अयंगार, के. आर. श्रीनिवास : इंडियन राइटिंग इन इंगलिश, बंबई; एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1962; पाँचवाँ संस्करण, नयी दिल्ली : स्टर्लिंग, 1985, पृ. 481-86.

मैककुचिअन, डेविड : इंडियन राइटिंग इन इंगलिश : क्रिटिकल एसेज़, कलकत्ता : राइटर्स वर्कशाप, 1969.

वे, हमदी : 'ए लुक ऐट इंडो-ऐंग्लियन फ़िक्शन' : थौट, जिल्द-XXI, सं. 52 (1969), पृ. 18-19.

मुकर्जी, मीनाक्षी : 'द ट्रैक्टर एंड दि प्लाऊ : द कंट्रास्टेड विज़न ऑफ सुधीन घोष एंड मुल्कराज आनंद' : इंडियन लिटरेचर, जिल्द-XIII, संख्या 1 (1970), पृ. 88-101.

—'द ट्वाइस बौर्न फ़िक्शन : थीम्स एंड टेकनीक्स ऑफ़ द इंडियन नौवेल इन इंगलिश', नयी दिल्ली : आर्नल्ड हेनेमान, 1971.

नारायण, श्यामला ए. : सुधीन एन. घोष; नयी दिल्ली : आर्नल्ड हेनेमान, 1973.

कटम्वले, वी. डी. : 'विलेज एंड सिटी इन द वलराम टेट्रालौजी ऑफ सुधीन एन. घोष", द लिटरेरी हाफ़-इयर्ली, जिल्द-XIII, सं. 1 (1981), पृ. 128-38.

नायक, एम. के. : ए. हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर, नयी, दिल्ली : साहित्य अकादेमी, 1982. पृ. 222-225.

□□

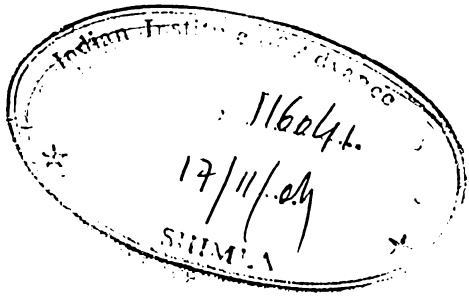

सुधीन नाथ घोष (1899-1965), एक भारतीय-अंग्रेज़ी लेखक थे, जिन्होंने कई वर्षों तक इंगलैंड में भी प्रवास किया और लंदन के द *टाइम्स* द्वारा इस संस्तुति के बावजूद कि वे भारत के बहुत महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं, समालोचनात्मक तौर पर उन पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। श्री घोष की रचनाओं में चार उपन्यासों की श्रृंखला, भारत एवं तिब्बत की लोक-कथाओं तथा आख्यानों के संग्रह और अन्यान्य विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें सम्मिलित हैं। उनके उपन्यास एक त्रयी का निर्माण करते हैं जिसके केन्द्र में एक वाचक होता है। इन उपन्यासों की विषय-वस्तु, निहित स्थितियाँ और समस्याएँ इतनी समकालीन हैं कि यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि ये आज से लगभग 40-45 वर्ष पूर्व लिखी गयी थीं। भारत के रंग, स्वर और सुरभि को पकड़ पाने में उनकी भाषा सर्वथा सक्षम रही है। उनके रेखा-चित्रों ने उस धरती के परिवेश को जीवंत करने में बड़ी सहायता की, जिसे वे प्यार करते थे।

श्री घोष ने अपने कथा-साहित्य के प्रणयन के लिए प्राचीन भारतीय शैली को ही अपनाया, जिसमें एक आख्यान से दूसरे उपाख्यान जुड़ते जाते हैं भले ही वे लोक-वृत्त हों या इतिहास — और जिनके स्रोत पुराणों में ढूँढ़े जा सकते हैं। वे भारतीय-अंग्रेज़ी के पहले ऐसे लेखक थे, जिन्होंने आख्यान में गद्य और पद्य दोनों ही शैलियों को विन्यस्त किया जो हमें प्राचीन चम्पू-काव्य की याद दिलाते हैं। लोक-कथाओं के उनकी संकलित लोक-कथाएँ केवल पंचतंत्र या हितोपदेश की कथाओं तक ही सीमित नहीं, बल्कि वे उस वाचिक परम्परा से भी ओत-प्रोत हैं जो विभिन्न हिन्दू बस्तियों और बौद्ध संस्थानों में विद्यमान थीं। वे यथार्थ और विविधता पैदा करने के लिए इन कहानियों में कुछ भ्रांतियाँ भी उत्पन्न करते हैं।

प्रस्तुत विनिबंध की लेखिका श्रीमती श्यामला ए. नारायण (जन्म-1947) जीविका से एक अध्यापिका हैं। उनके समालोचनात्मक एवं समीक्षात्मक लेख देश-विदेश की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

Library IIAS, Shimla
H 823.030 092 G 346 N
00116041

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00